|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरि गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | जून-2019
दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

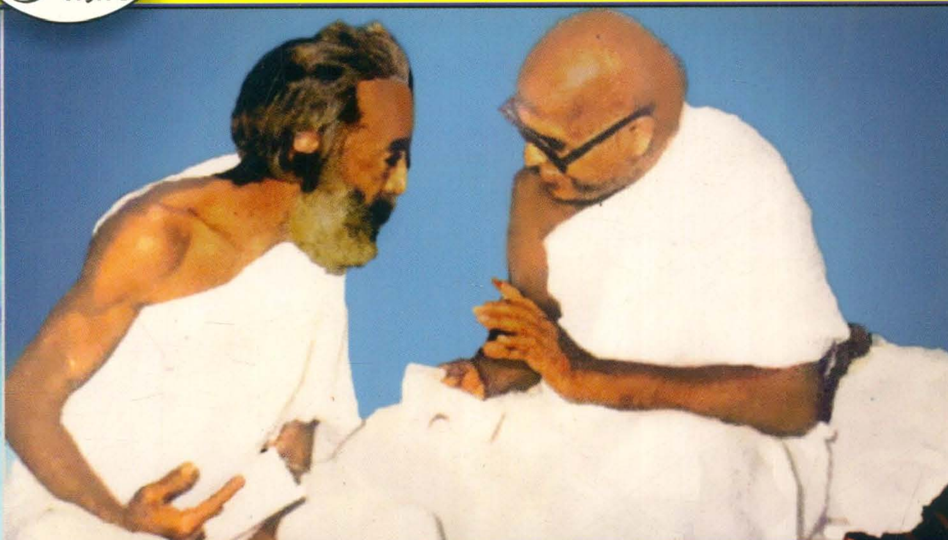

स्व. लोकसन्त जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा
स्व. संयमवय स्वामी शांति विजयजी (देवलोकगमन दिवस 12 -जून बुधवार) से चर्चा करते हुए।

पूण्य सप्तमी के श्रद्धांजली कार्यक्रम में भाग लेने जापानी गुरु भक्तों का दल पाटण गुजरात के आयोजन कार्यक्रम में।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट. सरसी जिला-रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

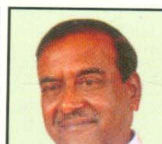

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

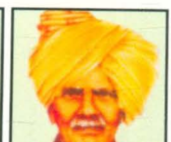

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

3122

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

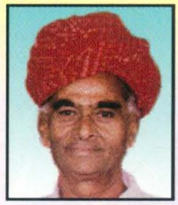
श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

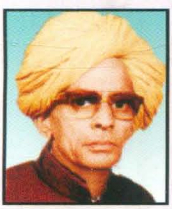
स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

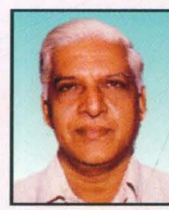
शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

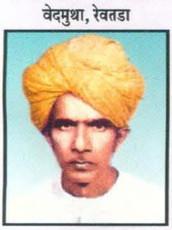
शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

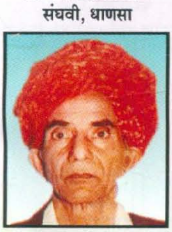
शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

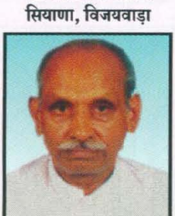
श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

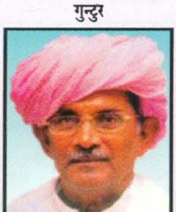
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

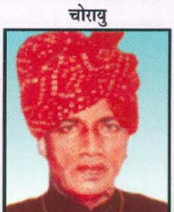
स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

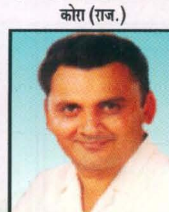
श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

34154

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

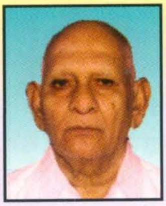
श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

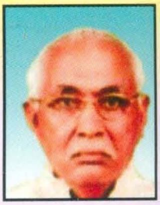
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

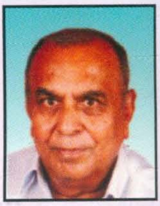
श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

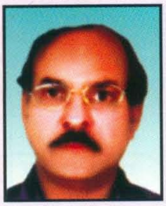
श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

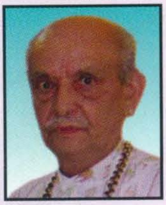
श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

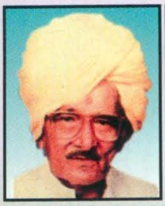
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

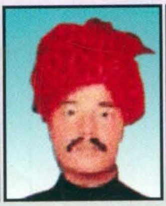
सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

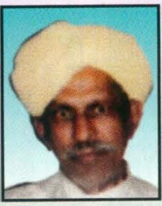
श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

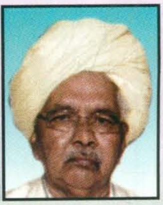
श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

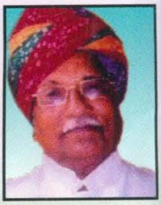
सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

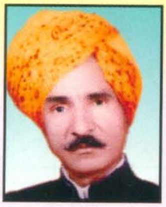

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

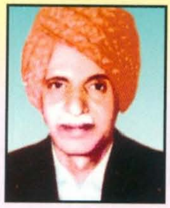

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

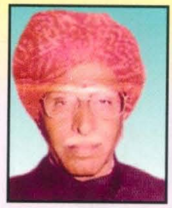

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

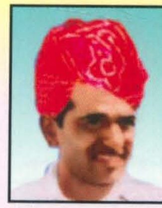

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

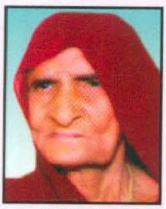

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

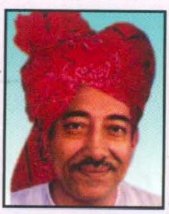

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

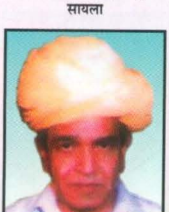

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

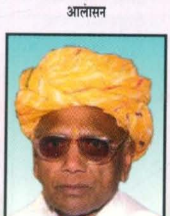

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

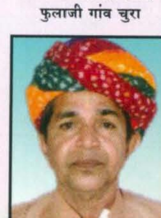

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा (हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल जालोर

पुखराजजी समताजी गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़ नैनावा

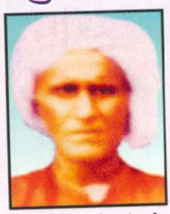
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी देसाई

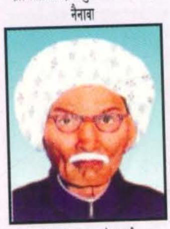
वेदलीया हालचंद भाई भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल (वकील)

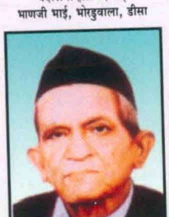
शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई थराद

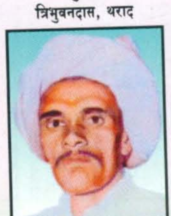
संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी थराद

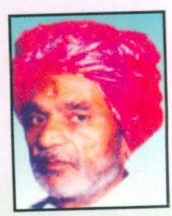
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

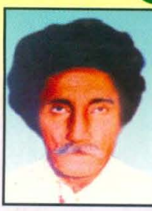
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

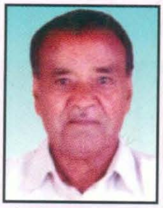
मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

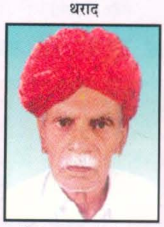
श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

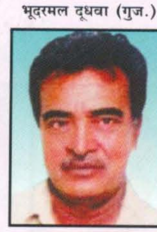
श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

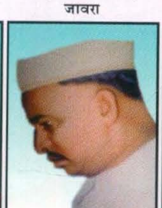
श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

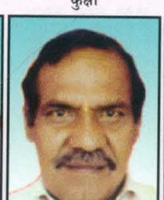
श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

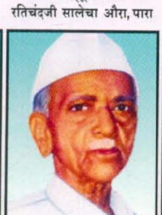
स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

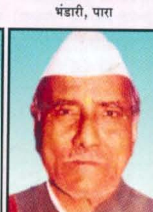
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

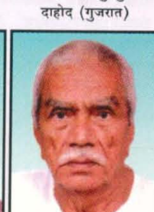
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

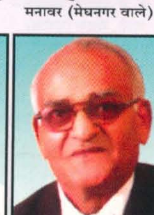
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

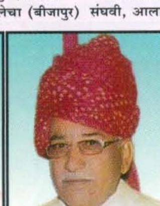

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जून-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 6
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

जहाँ धर्म व संगठन है, मुझे वहीं रहना पड़ेगा

निद्रासीन सेठश्री मुस्करा रहे थे, वे स्वप्नों के अधीन थे।

तभी

रंग में भंग हो गई। सेठश्री ने एक विस्फोट के साथ महालक्ष्मीजी को देखा। आते ही लक्ष्मीजी ने कुपित स्वर में कहा–

'उठो ! चलो उठो ! सेठजी, सुन लो इतने वर्षों से मैं तुम्हारे यहाँ हूँ, अब मैं जा रही हूँ।' सुनते ही सेठश्री चौंक उठे। कातर स्वर में प्रार्थना करने लगे–

'हे मातेश्वरी ! आप चली गईं तो मेरा क्या होगा ? मेरा परिवार जिन्दा कैसे रह सकेगा ? हम सभी की इज्जत धूल में मिल जायेगी। हे माताजी इतनी नाराज मत हों कृपया।'

'नहीं ! जो प्रारब्ध है, उसने तय कर दिया है, मैं ठहर नहीं सकती, फिर भी तुम इतने व्यथित हो तो मैं तुम्हें एक वरदान देकर जाऊंगी। बोलो तुम्हें क्या चाहिये ? कल मैं फिर आऊंगी बता देना।'

महालक्ष्मीजी के अन्तर्ध्यान होने पर सेठश्री ने पूरे परिवार को एकत्र किया तथा पूछा कि– 'कल जब लक्ष्मीजी आवें तो मुझे क्या मांगना है ?'

एक ने कहा– 'बाजार में इक दुकानों की लाईन मांग लो।'

दूसरा बोला– 'हीरे, रत्नों से भरी तिजोरी मांगो।'

प्रत्येक ने अपना सुझाव दिया लेकिन सबसे छोटी बहू ने कहा – 'ये सभी तो नश्वर, अस्थायी हैं। भले लक्ष्मीजी जाएं हममें धर्म तथा संगठन बना रहे, यह माँग लीजिये। सभी को बात जँच गई।

दूसरे दिन स्वप्न में लक्ष्मीजी के टकोरने पर सेठश्री ने धर्म व संगठन मांग लिया। महालक्ष्मीजी सन्नाटे में आ गई। बोलीं– तुम्हारी छोटी बहू बहुत होशियार है। जिस घर में धर्म व संगठन रहेगा, वहाँ से मैं कैसे जा सकती हूँ, मुझे तो यहीं रहना पड़ेगा ?'

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

पुण्योदय से पाया हमने

(साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी)

(तर्जः तू मने भगवान एक वरदान आपी दे)

पुण्योदय से पाया हमने, जयन्तसेन गुरुवर ।
साधना के पथ चलने का, आया है अवसर ।।

मार्ग पाते भूला-भटके, जिनके शरण आकर ।
वसुंधरा भी धन्य बनी है जिनके चरण पाकर ।।
आत्मा वैभव देख जिनका झुके ये जग सत्वर-
पुण्योदय से पाया हमने ...

स्याद्वाद का अमृत बहता, जिनकी वाणी से
उपशम रस का झरना निकलता जिनके नयनों से
ज्ञान के सागर हैं जो समता के हैं सरोवर
पुण्योदय से पाया हमने ...

जिनशासन के कार्य किये कई मान बढ़ाया था
राजेन्द्र गुरु के सिद्धान्त को जग में फैलाया था
संघ-एकता की रुचि रख चले सत्य की डगर
पुण्योदय से पाया हमने ...

जयंतसेन हस्ताक्षर

(भक्तों को पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रसादी रूप भेजे गये पत्रों का यहाँ क्रमशः प्रकाशन किया जायेगा)

प्रभु श्री राजेन्द्रसूरीश्वर गुरुभ्यो नमः

श्रीराधेश्यामजीसपरिवार　　ता. 6/10/2008

धर्मलाभ!

क्षमापना पत्र मिला।

हमने भी यहाँ सकल संघ के साथ संवत्सरी प्रतिक्रमण कर के सभी के साथ क्षमापना की है।

क्षमा का आदान प्रदान करना हमारा धर्म है।

आराधना के पथ पर वही गतिशील होता है जो हृदय से क्षमापना करता है।

यहाँ हजार गुरुभक्तों ने सामूहिक आराधना की है।

तप जप ऐतिहासिक हुए हैं।

संघ में सभी को धर्मलाभ कहें।

श्रीद् जयन्तसेनसूरि म.

धर्मलाभ

बाग

श्री जयंतसेन उवाच

धर्म का आहार के साथ गहरा संबंध है, इसलिए जिनागम में खानपान में विवेक रखने की बात बतायी गयी है और कहा गया है कि आराधक को अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करना चाहिये। अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण न करने से धर्म की आराधना में सफलता प्राप्त होती है, जीवदया का पालन होता है और अपना स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। धर्म का आधार मन है, इसलिए धर्माराधना के लिए मनशुद्धि अत्यन्त आवश्यक है और मन की शुद्धता का आधार अन्न है। कहा भी है- जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन । इसलिए हमें अपने खान-पान में विवेक रखते हुए अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करना चाहिये। जिनागम में बाईस प्रकार के अभक्ष्य बताये गये हैं ।

मेरी पारा नगरी में गुरुदेव

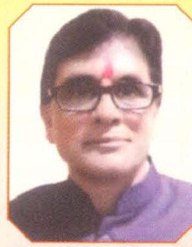

(श्री प्रकाश छाजेड़, पारा)

- पुण्य सम्राट लोकसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की मुझ पर एवं सम्पूर्ण पारा निवासियों पर सदैव असीम कृपा बरसी।
- आशीर्वाद से पारा परिषद नगर बनकर अपारा हुआ । गुरुदेव के जीवन के पारा क्षेत्र पर महती कृपा के अविस्मरणीय क्षण निम्नानुसार हैं -
- संवत् 2016 में केन्द्र में परिषद स्थापना के पूर्व पारा में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का गठन कर वरदीचंदजी छाजेड़ को अध्यक्ष बनाया।
- सन् 1976 में समरथमलजी राजगढ़ निवासी के छःरी पालक संघ को लेकर पारा पधारे । श्रीसंघ द्वारा नवनिर्मित महावीर भवन का उद्घाटन पुण्य सम्राट की निश्रा में हुआ।
- सन् 1977 रतलाम चातुर्मास में पारा परिषद को श्री राजेन्द्र जयन्त अल्पबचत योजना का आशीर्वाद देकर कहा कि आर्थिक विकास भी समाज की प्रगति है। विगत पूर्व वर्षों से पारा परिषद गुरु कृपा से इस कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने में सफल हुई।
- सन् 1978 में निम्बाहेड़ा में आयोजित परिषद अधिवेशन में मुझे गुरुदेव ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बनाया।
- सन् 1981 में पारा परिषद को नवकार महामंत्र आराधना नव दिवसीय आयोजित करने की प्रेरणा दी। गुरु कृपा से विगत 38 वर्षों से नियमित आराधना चल रही है। 6 लाख रूपये का स्थायी फण्ड बनाकर उसके ब्याज से एकासना हो रहे हैं। इस वर्ष प.पू. अविचलदृष्टा श्रीजी की निश्रा में नवकार भाव यात्रा के साथ आराधना सम्पन्न हुई।
- सन् 1982 में कुलपाक तीर्थ में आयोजित अखिल भारतीय त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के अधिवेशन में जयन्त विजयजी मधुकर को आचार्य मनोनीत किया। पारा से हम 11 प्रतिनिधि उपस्थित थे।
- सन् 1984 में भाण्डवपुर तीर्थ पर

आयोजित सूरि पद प्रदान पाट उत्सव के भव्य समारोह में पारा नवयुवक एवं महिला परिषद ने अपना परिषद का सुसज्जित बेण्ड लेकर 70 स्वयं सेवक पाट उत्सव के साक्षी बने व आशीर्वाद लिया।

- सन् 1986 में भाण्डवपुर से मोहनखेड़ा का भव्यातिभव्य छःरी पालक संघ निकला आपके सान्निध्य में आयोजित इस संघ की व्यवस्था में पारा परिषद के कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।
- भाण्डवपुर से मोहनखेड़ा छःरी पालक संघ की संघ माला व चातुर्मास की घोषणा मोहनखेड़ा तीर्थ में यतीन्द्र चौक में हुई। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मालवा, दक्षिण भारत के अनेक श्रीसंघों ने चातुर्मास की विनती की। इस शुभ अवसर पर श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा की वर्षों बाद मैं मालव भूमि में अपने गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी व यतीन्द्रसूरीश्वरजी के दर्शन हेतु यहाँ आया हूँ गुरु इच्छा, देशकाल व पारा निवासियों की गुरु भक्ति देखते हुए सन् 1986 का चातुर्मास पारा में करने की घोषणा हुई।
- 13 जुलाई 1986 को आचार्य देव का पारा में भव्यातिभव्य मंगल प्रवेश हुआ प्रवेश उत्सव पर देश भर के हजारों गुरु भक्त शामिल हुए म.प्र. के गृहमंत्री डॉ भारतसिंहजी एवं परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तगराजजी हिराणी की मौजूदगी में श्री संघ पारा द्वारा चातुर्मास हेतु नवनिर्मित महावीर राजेन्द्र भवन का उद्घाटन श्री हिराणी द्वारा किया गया। चौधरी हीरालालजी संघवी की स्मृति में लालचंदजी संघवी परिवार द्वारा नवकार भवन निर्माण हेतु प्रवेश उत्सव पर भूमि दान दी गई।

  गुरुदेव ने सूरिमंत्र की आराधना पारा चातुर्मास में की एवं जीवनकाल की प्रथम अट्ठाई तपस्या पारा में की। मैं परिषद अध्यक्ष था। परिषद साथियों द्वारा अट्ठाई अनुमोदना में 36 अट्ठाई की गई। गुरुदेव की प्रथम अट्ठाई तपस्या उपलक्ष्य में श्रीमती दाखाबाई - कस्तूरचन्दजी भण्डारी द्वारा राजेन्द्रसूरि गुरु ज्ञान मंदिर हेतु भूमि प्रदान की गई।
- श्री संघ द्वारा गुरुदेव के जीवन के 36 चित्रों से युक्त गुरु मंदिर का निर्माण किया गया। 1999 में आचार्य देव द्वारा भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव में कु. संगीता, कु. सुनिता छाजेड़ की दीक्षा एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।
- पारा श्रीसंघ की बैठक कर श्री आदिनाथ शंखेश्वर सीमंधर धाम निर्माण का उपदेश प्रदान कर योजना बनी। गुरुदेव का 72 जिनालय भीनमाल प्रतिष्ठा हेतु सन्

2011 में आगमन हुआ पारा श्रीसंघ द्वारा प्रस्तावित जीवित प्रतिमा एवं जयंतसेन धाम की योजना बनी। श्री प्रकाश छाजेड़ एवं समरथमलजी पगारिया परिवार द्वारा जीवित प्रतिभा का लाभ लिया गया।

- बड़नगर चातुर्मास के पश्चात् गुरुदेव मालवा की प्रतिष्ठा करते हुए पारा पधारे सन् 2014 में श्रीसंघ द्वारा नवनिर्मित आदिनाथ शंखेश्वर सीमंधर धाम की अंजनशलाका का प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पाट उत्सव आयोजित किया गया। प्राची-सुरेशजी छाजेड़ की दीक्षा सम्पन्न हुई। पूर्व में रेखा कस्तूरचंदजी नागौरी एवं दर्शना मनोहर कोठारी एवं रमिला सुभाषजी छाजेड़ की दीक्षाएँ मूल पारा की 6 दीक्षाएँ सम्पन्न हुई।
- श्री संघ पारा द्वारा नवनिर्मित विशाल नवकार जयन्तसेन विहार का उद्घाटन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष भंवरलालजी कटारिया द्वारा प.पू. सिद्धरत्न विजयजी व विनयरत्नविजयजी के सान्निध्य में मंदिर शिलान्यास के पावन प्रसंग पर सम्पन्न हुआ।
- 15 दिसम्बर 1999 को पारा से पालिताणा का छःरी पालक संघ आचार्य पद्धति के बाद निकाला गया। परिषद के कई प्रसंगों पर गुरुदेव ने इस संगठन में कार्य करने के अनेक दायित्व प्रदान किये। गुरुदेव का दिव्य आशीष सदैव मिला है, मिलता रहेगा।

णमोकार मंत्र के पर्यायवाची नाम

अनादि मंत्र	-	यह मंत्र शाश्वत है, न इसका आदि है और न ही अंत है।
अपराजित मंत्र	-	यह मंत्र किसी से पराजित नहीं हो सकता है।
महामंत्र	-	सभी मंत्रों में महान् अर्थात् श्रेष्ठ है।
मूलमंत्र	-	सभी मंत्रों का मूल मंत्र अर्थात् जड़ है, जड़ के बिना वृक्ष नहीं रहता है, इसी प्रकार इस मंत्र के अभाव में कोई भी मंत्र टिक नहीं सकता है।
मृत्युंजयी मंत्र	-	इस मंत्र से मृत्यु को जीत सकते हैं अर्थात् इस मंत्र के ध्यान से मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं।
सर्वसिद्धिदायक मंत्र	-	इस मंत्र के जपने से सभी ऋद्धि - सिद्धि प्राप्त हो जाती है।
तरणतारण मंत्र	-	इस मंत्र से स्वयं भी तर जाते हैं और दूसरे भी तर जाते हैं।
आदि मंत्र	-	सर्व मंत्रों का आदि अर्थात् प्रारम्भ का मंत्र है।
पंच नमस्कार मंत्र	-	इसमें पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है।
केवल ज्ञान मंत्र	-	इस मंत्र के माध्यम से केवल ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

श्री जयंतसेन जीवन झलक (9)

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

ईस्वी सन् 1978 की 5 मई को डीसा से पालनपुर पद विहार करते समय पू. गुरुदेव को भयंकर दुर्घटना का सामना करना पड़ा। वे मुनि अवस्था में थे एवं प्रथम शिष्यश्री नित्यानंदविजयजी म. (वर्तमान में गच्छाधिपति पू. आ. श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिजी म.) साथ में चल रहे थे सामने से पत्थरों से भरी एक ट्रक आई। अचानक एक पत्थर गिरा और उनके सीने से टकराया एवं घुटने तथा पैर के अंगूठे में भी चोंट लगी। अंगूठे का नाखून निकल गया। तीव्र वेदना में भी वे संयम और साहस के बल पर विहार करते रहे तथा पन्द्रह कि.मी. चलकर विश्राम स्थल चंडीसर पहुँचे। वहाँ कुछ देर के विश्राम के बाद पैर अकड़ गया, चलना कठिन हो गया। पालनपुर के भक्तगण के आग्रह पर कुछ मार्ग डोली में तय किया। पालनपुर पहुंचने के बाद भी एक दिन के विश्राम के बाद विहार कर दिया।

लहरों ने तुम्हारी किश्ती को पार उतारा है ।
पतझर ने तुम्हारे बसन्त का द्वार उधाड़ा है।
न जाने कैसी ताकत थी तुम्हारे पौरूष में ।
तूफान हर बार तुमसे टकराकर हारा है ।

उनमें ध्येय पूर्ति की लगन व गहरी एकाग्रता थी। अतः विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहकर अपने संकल्प को पूर्ण करते रहे। संघर्षों की नुकीली कीलों पर निर्दोष पदचिन्ह छोड़ते हुए आगे बढ़ते रहे एवं उदस्त लक्ष्यों को सफलता से मंडित करते रहे।

आचार्य होने के नाते उनके समक्ष संघ की तरह-तरह की समस्या आती थी। वे न तो समस्या से घबराते थे और न ही उतावलेपन या उत्तेजना में कोई निर्णय लेते थे। जिससे कि हानि उठानी पड़े। संघीय दृष्टि से प्रतिकूल स्थिति में गुरुदेव ने जब - जब भी मानसिक उद्वेलन की स्थिति का अनुभव किया तो दादागुरु की प्रतिमा उनके सामने साकार हो जाती थी। वे अपनी चिंता गुरुचरणों में छोड़कर स्वयं निश्चिंत हो जाते थे। वे अपनी शक्ति को व्यर्थ करके साधना के अमूल्य क्षणों को निष्प्रयोजन गवाना नहीं चाहते थे। उन्होंने साधना की असीम ऊँचाइयों का आरोहण किया।

(क्रमशः)

संयम जीवन को वंदन हमारा...

(प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागाँव)

गुरुभक्ति से सजा है देखो जिनशासन ये हमारा
त्याग, तप और शुभ भावों से महक रहा जैन धर्म हमारा
मिथ्यात्व से अध्यात्म के रंगों में रंग रहा है संघ हमारा
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा ...

दीप जला रहे हैं जो ज्ञान के अंधकार को मिटा रहे
रोशन कर रहे हैं जो जीवन हमारा ऐसा मार्ग बता रहे
सही गलत का मर्म बताकर प्रभु वाणी हम तक पहुंचा रहे
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा...

अनुमोदना कर रहे हम उनकी, जो संयम अँगीकार कर रहे
बड़ा ही मुश्किल ये सफर है उज्जवल इसे कर रहे
महावीर के मार्ग पर चलकर अपना आत्मोद्धार कर रहे
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा...

भाग्यशाली है हम जो 'पुण्य सम्राट' को हमने पाया
नित्यसेन सूरि और जयरत्नसूरि की निश्रा को हमने पाया
हो सके हमारा भी आत्मोद्धार ऐसा आशीष हमने पाया
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा ...

अनमोल वचन

* आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान है ।– सुकरात
* बहुत से व्यक्ति यदि महान आकाक्षांओं से पूर्ण न होते तो छोटी बातों में सफल हो जाते। – लांग फैलो
* स्वयं को जीतकर ही सच्चा सुख प्राप्त होता है । – महावीर

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (28)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य

श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

धर्म संकट में फँस गए। भविष्यवाणी करता हूँ तो निश्चयात्मक भाषा बोलने का दोष लगता है और यदि भविष्यवाणी नहीं करता हूँ तो उससे और भी अधिक अनर्थ हो सकता है। पहली बात तो यह कि अखिल भूमण्डल के मुनिमंडल पर से लोगों का विश्वास उठ जायेगा और तब उनके उपदेशों से भी कोई कुछ लाभ नहीं उठा पाएगा। दूसरा अनर्थ यह होगा कि राजपूतानी के चरित्र पर सन्देह पक्का हो जाएगा और जीवन-भर के लिए उनका पारस्परिक प्रेम नष्ट हो जाएगा। उनके दाम्पत्य सुख में मेरे कारण आग लग जाएगी, इसलिए यह चुनौती मुझे स्वीकार नहीं होगी।

अन्त में ध्यान करके मुनि ने आँखें खोलीं और कह दिया - इस घोड़ी के पेट में बछड़ा पल रहा है, बछड़ी नहीं।'

यह भविष्यवाणी सच्ची है या नहीं, यह जानने के लिए गर्भकाल पूर्ण होने और प्रसव होने तक चार-पाँच माह तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य था। पति ने सोचा कि तब तक यह मुनि बहुत दूर जाकर गायब हो सकता है। तब इसे खोजना और दण्ड देना मेरे लिए कठिन होगा। ऐसी हालत में क्यों न आज ही अभी भविष्यवाणी की सच्चाई इस मुनि के सामने ही जाँच ली जाए ?

यह विचार ज्यों ही राजपूत के मन में उठा, त्यों ही उसने तलवार अपनी म्यान से बाहर निकाली। घोड़ी का पेट फाड़कर गर्भ बाहर निकाला और ध्यान से देखने पर पता लगा कि भ्रूण बछड़ा ही है।

पेट में तलवार आ घुसने से घोड़ी वहीं मर गई। अधूरे विकास के कारण बछड़े के तो बचने का सवाल ही नहीं था। अपनी निश्चयात्मक भाषा में ऐसे प्रत्यक्ष अनर्थ को देखकर उस जैनमुनि ने अन्न जल का त्याग करके प्रायश्चित्त के रूप में संथारा ले लिया। राजपूतानी ने गले में

फंदा बाँधकर आत्महत्या कर ली। फिर राजपूत ने भी यह सब अनर्थ अपने क्रोध के कारण हुआ है- ऐसा मानकर वहीं तलवार अपने पेट में घुसेड़ ली !

इस प्रकार मुनि के अशुभ वचन-योग के कारण पाँच प्राणियों को अपने प्राणों से व्यर्थ ही हाथ धोने पड़े।

चीन देश में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है। उसका आशय यह है कि वाणी से निकले एक असंयत शब्द को रथ और चार घोड़े भी मिलकर वापिस नहीं ला सकते। तीर की तरह जो शब्द एक बार मुखरूपी धनुष से छूट गया, वह भला कैसे पलटकर आ सकता है ? इसलिए खूब सोच-समझकर ही बोलने का ध्यान रखा जाना चाहिए।

बादशाह अकबर से किसी फलित-ज्योतिषी ने कहा- 'देखते ही देखते आपके सारे कुटुम्बी आपके सामने ही मर जायँगे ।'

इस अविवेक पूर्ण वाक्य को सुनने पर बादशाह को बहुत गुस्सा आया। ठीक उसी समय बीरबल ने कहा- 'हुजूर ! इनके कहने का आशय यह है कि आप दीर्घायु हैं। आपके समस्त कुटुम्बियों से आपकी उम्र अधिक है।

'तो ऐसा ही बोलना था न ?' बादशाह ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की और उनका गुस्सा काफूर हो गया।

बीरबल ने भी वही बात कही थी, जो फलितवेत्ता ने कही थी, परन्तु बीरबल को बोलने की कला आती थी, इसलिए उसने फलितज्ञ के कथन से बिगड़ी बात सँभाल ली। यदि बोलने की कला नहीं सीखी तो दूसरे समस्त शास्त्रों की शिक्षा धूल में मिल गई- ऐसा मानना चाहिए । कहा भी है-

सीख्यो बहु श्लोक और कवित्त सुछंद जाने,
ज्योतिष को सीख मन रहत गरूर में ।
सीख्यो सब सौदागरी बजाजी सराफी जाने,
लाखन को फेरफार ब्रह्मो जात पूर में ।
सीख्यो सब मन्त्र जन्त्र तन्त्र सब वाद सीख्यो,
पिंगल पुराण सीख-सीख भयो सूर मैं ।
सीख्यो सब ठाठ भयो निपट सयाणो एक,
बोलिबो न सीख्यो सब सीख्यो गयो धूर में ।।

(क्रमशः)

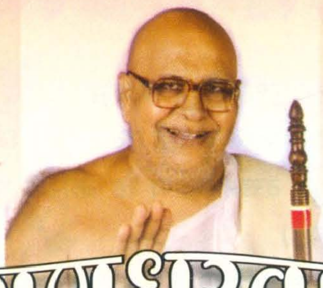

गणधरवाद

प्रवचनकार

स्वर्गीय मनीषी लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

व्यक्त- आकाश साधक अनुमान कौन - सा है ?

महावीर- पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु इन सब का कोई आधार होना चाहिए, क्योंकि ये सभी मूर्त हैं। जो मूर्त होता है, उसका आधार होता है। जैसे पानी का आधार घड़ा है। जो पृथ्वी आदि का आधार है, वह आकाश है। इस प्रकार हे व्यक्त ! आकाश सिद्ध होने से उसके बारे में भी सन्देह को स्थान नहीं है।

व्यक्त- आर्य ! पृथ्वी आदि भूतों का आधार साध्य है तथा दृष्टान्त में जल के आधार के रूप में जो घट रूप पृथ्वी ली है, वह तो अभी आधार रूप में सिद्ध की जाने वाली होने से आधार युक्त अंश में साध्य ही है। अतः ऐसी साधार रूप में अभी सिद्ध नहीं हुई पृथ्वी के दृष्टान्त में कैसे लिया जा सकता है ?

महावीर- तो फिर उक्त अनुमान के बदले ऐसा अनुमान कर के भूतों के आधार को सिद्ध करना चाहिए। पृथ्वी आधार वाली है, मूर्त होने से जल की तरह। वैसे ही जल के आधार की सिद्धि में वायु को और वायु के आधार की सिद्धि में पृथ्वी को दृष्टान्त रूप में रखकर तत् तत् भूतों के आधार को सिद्ध करना चाहिए। ऐसा करने पर उक्त दोष निवृत्त हो जायेगा। इस प्रकार उक्त भूतों के आधार रूप में आकाश की सिद्धि होने से उसके बारे में भी सन्देह को अवकाश नहीं है।

हे सौम्य ! इस प्रकार प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध ऐसे भूतों की सत्ता स्वीकार करनी ही चाहिए। जब तक शस्त्र से उपघात न हुआ हो

तब तक ये भूत सचेतन- सजीव हैं, शरीर के आधारभूत हैं और नाना प्रकार से जीव के उपयोग में आते हैं।

भूत सजीव हैं

व्यक्त- आप भूतों को सजीव कैसे कहते हैं ?

महावीर- पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चारों सचेतन हैं, क्योंकि उनमें जीव के लक्षण दृष्टिगत होते हैं तथा आकाश अमूर्त है और वह जीव का आधार मात्र है, लेकिन सजीव नहीं है।

व्यक्त - पृथ्वी को सचेतन मानने में क्या हेतु है ?

महावीर- सुनो ! पृथ्वी सचेतन है, क्योंकि जैसे स्त्री में दिखते हैं, वैसे ही उसमें नज्म, जरा, जीवन, मरण, क्षत संरोहण, आहार, दोहद, रोग, चिकित्सा आदि लक्षण हैं।

व्यक्त- अचेतन में भी जन्म आदि लक्षण दिखते हैं। जैसे- दही उत्पन्न हुआ। जामन, विष, मुडदाल, काकसुंबा आदि प्रयोगों से दही आदि में भी जन्मादि है ही, लेकिन वह सजीव नहीं है।

महावीर- दही आदि अचेतन वस्तु में ऐसा प्रयोग औपचारिक है, क्योंकि उसमें जरा आदि सभी धर्म मनुष्यों जैसे नहीं दिखते। जबकि वृक्षों में तो वे जन्मादि सभी भाव निरूपचरित हैं। इसलिए उसे सचेतन मानना चाहिए।

इसके अतिरिक्त वनस्पति में चैतन्य साधक दूसरे भी हेतु हैं। स्पृष्ट प्ररोदिका लाजवंती वनस्पति क्षुद्रजन्तु की तरह स्पर्श मात्र से संकुचित हो जाती है तथा लता अपना आश्रय प्राप्त करने के लिए मनुष्य की तरह वृक्ष के प्रति बढ़ती है। शमी आदि में निद्रा, प्रबोध, संकोच आदि जीव के लक्षण मानने में आये हैं तथा बकुल अमुक काल में शब्द का, अशोक रूप का, कुसुंबक गंध का, विरहक रस का और चंपक तिलक आदि स्पर्श का उपभोग करते हैं, यह सिद्ध है।

इसके सिवाय मनुष्य आदि जीवों में जैसे बवासीर के मस्से के अंकुर फूटते हैं अर्थात् एक बार मस्से कटने के बाद भी उनके अंकुर उत्पन्न होते हैं वैसे ही वृक्ष समूह, विद्रुम-प्रवाल (मूँगा) नमक और उपल में भी जब तक वे स्वाश्रय स्थान में होते हैं, तब तक एक बार छिन्न होने पर भी उनमें स्वजातीय उत्पत्ति है।

(क्रमशः)

लघु कथाएँ

मैं जानता हूँ

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

हम भी कुछ कम नहीं

एक गाँव में एक पटेल रहता था। वह बड़ा धनी था । अपने धन के बल पर उसने बुढ़ापे में नौवीं बार विवाह किया। उसकी आठ पत्नियाँ मर चुकी थीं । इस नई पत्नी ने घर का सारा काम काज अपने हाथ में ले लिया।

एक दिन यह नई दुल्हन दही बिलो रही थी। इससे उसकी चूड़ियाँ खनखना रही थी। यह देखकर रंगीले पटेल से न रहा गया। वह बोला पड़ा-

नौवीं नाचे-नौवीं नाचे ।

दुल्हन ने समझ लिया कि इस पटेल को अपने धन का बड़ा घमण्ड हो गया है, इसलिए यह ऐसा कह रहा है।

परन्तु दुल्हन को भी अपने सुन्दर, स्वस्थ और पुष्ट शरीर का अभिमान था। साथ ही वह बड़ी मेहनती भी थी। उसने सोचा कि मेरे इन गुणों के कारण कोई भी मुझे फिर अपना लेगा। इस पटेल का कोई ठेका थोड़े ही है। इसे तो ईंट का जवाब पत्थर से ही देना चाहिये। अतः वह बोली-

हम कहेंगे तो तुम सुनोगे, तुम्हें आयेगी रीस ।
तुम मरोगे हम करेंगे, अबकी पूरे बीस ।।

श्रीमानजी । आपका तो नौ बार विवाह हुआ है, पर मेरा यह उन्नीसवाँ है। यदि तुम मर जाओगे तो मैं तो बीसवाँ विवाह भी कर लूँगी।

यह सुनते ही पटेल का घमण्ड रफू चक्कर हो गया।

मोर नाचे-मोर जीते

श्रीकृष्ण को नाचते हुए देखकर सब ग्वाल-बाल प्रसन्न होते थे और गोपियाँ उनकी प्रशंसा करते नहीं अघाती थीं। इससे श्रीकृष्ण को ऐसा लगा कि उनके जैसा नाचने वाला और कोई नहीं है।

कुछ मोरों ने श्री कृष्ण की यह बात भाँप ली। उन्होंने श्री कृष्ण से कहा -

हुआ आपको गर्व मुरारी ।

बाजी हमसे आज तुम्हारी ।।

यदि आपको अपनी नृत्यकला पर गर्व है, तो हमसे मुकाबला कीजिये और हमें पराजित कीजिये। आप नाचिये फिर हम भी नाच दिखायेंगे। हार-जीत का फैसला श्री राधिकाजी करेंगी ।

श्रीकृष्ण ने यह चुनौती मंजूर कर ली। उन्होंने अपना नृत्य प्रारम्भ किया। वे अपनी मस्ती में नाचते रहे। उनका नाच देखकर सभी दर्शक मंत्र-मुग्ध हो गये।

फिर मोर नाचने लगे। वे स्वभाव से ही नर्तक थे। और चुनौती भी उन्होंने ही दी थी। उनका नाच बड़ा कलात्मक रहा।

राधिका ने अपने निर्णय में कहा कि जीत मोरों की हुई। उनका नाच श्री कृष्ण के नाच से श्रेष्ठ रहा।

श्रीकृष्ण ने भी यह निर्णय स्वीकार किया। इस घटना की स्मृति के लिए उन्होंने अपने सिर पर मयूरपंखों का मुकुट धारण कर लिया।

गुदगुदी

फर्नीचर वाला एक गंजे व्यक्ति से ड्रेसिंग टेबल की प्रशंसा कर रहा था, 'जनाब, इसमें लगे शीशे की तारीफ में बस इतना ही कहना है कि आप जब इसको निहारेंगे, इसमें चार चांद लग जाएंगे ।' 'अच्छा वह कैसे ? गंजा व्यक्ति आश्चर्य में था ।

'आप स्वयं देख लीजिए, इसमें चार शीशें एक के बाद एक जुड़े हैं। दुकानदार ने शीशों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

प्रश्नोत्तरी

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

नाम निक्षेप किसे कहते हैं ?

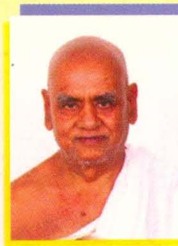

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. एवं भूत नय किसे कहते हैं ?

उ. जिस शब्द का जिस क्रियारूप अर्थ हो उसी क्रिया रूप में परिणत हुए पदार्थ को जो ग्रहण करे। जैसे पुरन्दर को पुरविदारण के समय में पुरन्दर कहना।

प्र. निक्षेप किसे कहते हैं ?

उ. एक वस्तु को भिन्न-भिन्न रूप से समझने के लिए नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव में पदार्थ के स्थापन को निक्षेप कहते हैं।

प्र. निक्षेप के कितने भेद हैं ?

उ. चार भेद हैं- 1. नाम निक्षेप, 2. स्थापना निक्षेप, 3. द्रव्य निक्षेप और 4. भाव निक्षेप।

प्र. नाम निक्षेप किसे कहते हैं ?

उ. शब्द के अनुसार आकार और गुण जिस चीज में न हो उस चीज में भी वैसे शब्द का संकेत करना नाम निक्षेप हैं, जैसे - लकड़ी के टुकड़े में जीव शब्द का संकेत कर दिया जाय तो उसमें जीव का लक्षण उपयोग न रहने से वह नाम जीव हैं।

प्र. स्थापना निक्षेप किसे कहते हैं ?

उ. जिस किसी चीज में कोई अन्य सद्भूत वस्तु के आकार को देखकर या बिना आकार भी उस चीज को सद्भूत वस्तु के नाम से कहना जैसे- किसी काष्ठ या पाषाण में हाथी घोड़े का आकार देखकर उसको हाथी घोड़ा नाम से व्यवहार करना स्थापना निक्षेप है।

प्र. द्रव्य निक्षेप किसे कहते हैं ?

उ. जो पदार्थ आगामी परिणाम की योग्यता रखने वाला हो उसको द्रव्य निक्षेप कहते हैं। जैसे राजा के पुत्र को कहना, साधु होने वाले को साधु कहना। अथवा भूतकाल में हो गये परिणाम की योग्यता रखने वाले को द्रव्य निक्षेप कहते हैं। जैसे सिद्ध को अरिहंत कहना।

प्र. भाव निक्षेप किसे कहते हैं ?

उ. वर्तमान पर्याय संयुक्त वस्तु को भाव निक्षेप कहते हैं।

चिन्तन का चित्रांकण

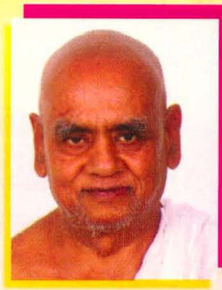

व्यवहार में हो उदारता तथा अनुकम्पा

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

जैन धर्मावलम्बियों पर बहुत तीखा व्यंग है कि वे एकेन्द्रिय जीवों को तो जीवनदान देते हैं लेकिन मानव जैसे पंचेन्द्रिय जीव के प्रति उनमें उदार भाव नहीं है। जैन समाज का व्यावसायिक काम है। उसका प्रत्येक जाति के व्यक्ति से सम्पर्क आता है। हर प्रकार के व्यवसाय के साथ ब्याज का व्यापार भी करती है। अपने व्यवसाय में जिस उदारता या सहृदयता का प्रदर्शन करना चाहिए वैसा नहीं है। जैन व्यवसायी शोषण के लिए जाने जाने लगे हैं। ब्याज, तौल, मोल तथा हिसाब में उनको प्रामाणिक नहीं माना जाता है। इस कारण देश की अधिसंख्य आबादी में उनके प्रति दुराव का भाव भी व्याप्त है। 'बनिए' शब्द से नफरत जागने लगी है।

'बनिया' जाति में अधिकांश जैन आते हैं। अपने व्यवसाय में कभी ब्याज की मार से वे इतना जकड़ लेते हैं कि पीढ़ियों तक मूलधन बना रहता है। इतना ही नहीं वार्षिक चुकाने के बावजूद मूलधन बढ़ता जाता है। इस अभ्यास ने व्यवसायियों के लिए शोषक वर्ग का शब्द प्रयुक्त कर दिया है। उदारता तथा सहृदयता केवल धार्मिक कार्यों में ही नहीं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होनी चाहिए। धार्मिक सिद्धान्तों का व्यवहारिक आचरण नहीं होने से यह स्थिति है। जैनों से मानवीय मूल्यों की प्राप्ति के अनुरूप अपना व्यवहार बनाना पहले अपेक्षित हैं। अष्टमी चतुर्दशी तथा पर्व तिथियों पर हरी शाक का त्याग करें। यह श्रेष्ठ है लेकिन मानव के प्रति उदारता, अनुकम्पा, सहृदयता का व्यवहार रखें यह सर्वश्रेष्ठ है।

हे मानव ! कभी चिन्तन किया- 'मैं कौन हूँ।' मैं यह शरीर, मैं भोग विलास के साधन या मैं मिटने वाली सुख-सम्पत्ति नहीं हूँ- मैं अनन्त शक्ति से सम्पन्न आत्मा हूँ। जो दिखते हैं, वे अनेक हैं, मुझ से भिन्न हैं जो अदृश्य हैं। पर से की जाने वाली आशा हकीकत में निराशा है, अतएव मैं को पहचान। प्रातः उठकर इसी प्रश्न का उत्तर अपने चिन्तन में खोज की 'मैं कौन हूँ, क्या हूँ, कहाँ से आया हूँ, मुझे कहाँ जाना है।'

मांसाहार अभिशाप के रूप में

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

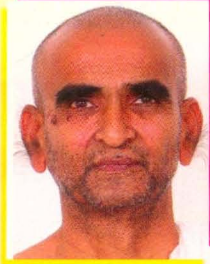

पृथ्वी पर मानव को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, भोजन के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, मानव को अपने दैनिक कार्यों को करने के लिए भोजन ग्रहण करना पड़ता है क्योंकि भोजन से मानव शरीर को उर्जा प्राप्त होती है साथ ही शारीरिक विकास के लिए भी भोजन की आवश्यकता होती है अर्थात कहने का तात्पर्य यही है कि मानव को अपना शारीरिक, मानसिक और सभी प्रकार के विकास के लिये भोजन की आवश्यकता होती है। प्राचीन समय में मानव बहुत कुछ नहीं जानता था और अज्ञान के अंधकार में रहता था इसके बावजूद मानव अपना पेट भरने के लिये फल/फूलों, पेड़ों की पत्तियों तथा कंदमूल खाकर अपना पेट भरता था। वनों में रहने के कारण वन्य जीवों से अपनी रक्षा करने के लिए मानव जानवरों को मारने लगा और भोजन के रूप में उसका मांस खाकर अपने पेट की भूख बुझाने लगा, ज्ञान के अभाव में मानव मांस खाने लगा। प्राचीन समय के मानव को आदिमानव की संज्ञा दी गई है क्योंकि प्राचीन समय का मानव अर्द्धरूप से मानव था और अर्धरूप से जानवर पर धीरे-धीरे ज्ञान का प्रकाश फैलता गया और आदिमानव ने मानव की संज्ञा ले ली। परन्तु मैं तो अब भी यही कहूँगा कि वास्तव में आज का जो मानव है वह आदिमानव है क्योंकि मानवता उसमें कहीं से कहीं तक देखने को नहीं मिलती है ज्ञान की उपलब्धता, साधनों और संसाधनों की उपलब्धता होने के बावजूद मानव आज निःसहाय, निर्दोष जीवों की हत्या कर उनका भक्षण कर रहा है। मानव आज रक्षक के रूप में न होकर भक्षक के रूप में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। जिस तरह सभ्यता शीर्षता हासिल करती गई वैसे-वैसे मनुष्य के खान-पान तथा रहने के तरीकों में भी परिवर्तन होने लगा भारत ऋषि मुनियों, संतों और महात्माओं का देश है जहाँ पर हिन्दु धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म आदि में शाकाहारी भोजन खाने पर ही बल दिया जाता है। शाकाहारी भोजन जैसे गेहूँ, चावल, मक्का, फल आदि पैदा करने में किसी प्रकार की हिंसा की जरूरत नहीं है पर

मांसाहारी भोजन उत्पन्न करने में पशु, पक्षियों व जानवरों की निर्मम हत्या करना अनिवार्य होता है। शाकाहारी भोजन करने वाला मानव स्वस्थ तथा स्फूर्तिमय होता है और शांत स्वभाव धारण किये रहता है पर मांस का सेवन करने वाले अपने आप को चिढ़-चिढ़ा महसूस करते हैं छोटी-छोटी बातों पर क्रोध करने लग जाते हैं। सात्विक भोजन गेहूँ, चना, मक्का, चावल आदि मानव शरीर में आसानी से पच जाता है परन्तु मांस युक्त भोजन का आसानी से पाचन नहीं होता और मानव शरीर को विभिन्न प्रकार की हानिकारक बीमारियों का सामना करना पड़ता है। पशु-पक्षियों में विभिन्न प्रकार की हानिकारक बीमारियाँ होती हैं और मांसाहार से शरीर को किसी प्रकार की कोई ऊर्जा नहीं मिलती है बल्कि आलस और चिड़चिड़ापन स्वभाव निर्मित हो जाता है परन्तु शाकाहारी भोजन में विभिन्न प्रकार की प्रोटीन, खनिज लवण, विटामिन भरपूर मात्रा में होते हैं जो शरीर का सम्पूर्ण विकास कर शरीर को स्वस्थ और निरोगी बनाते हैं। साथ ही शाकाहार, मांसाहार की तुलना में बहुत अधिक सस्ता होता है देखा जाए तो एक किलो मांस खरीदने में जितने रुपये व्यय होते हैं उतने रुपयों में 20 किलो अनाज आ जाता है । शाकाहारी भोजन मांसाहार से हर प्रकार से अच्छा और सस्ता है। कुछ समय पहले तक मांस का सेवन केवल संभ्रांत व्यक्ति (अमीर व्यक्ति) ही करते थे पर आज समाज का हर वर्ग मांस का सेवन कर अपने जीवन के साथ खिलवाड़ कर अपने आप को नर्क में ढकेल रहा है। मानव मांसाहार का आदी हो गया है मानव की सोच ही ऐसी बन चुकी है कि मांसाहार सेवन से व्यक्ति हष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रहता है तथा शरीर को ताकत (शक्ति) मिलती है।

(क्रमशः)

समदर्शी आचार्य श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराज फरमाते हैं-

नाशाम्वरत्वे न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे व च तत्त्ववादे ।
न पक्षपाताश्रयणेन मुक्तिः, कपायमुक्ति, किल मुक्तिरेव ।।

श्वेतांबरत्व, दिगंबरत्व, तत्ववाद, तर्कवाद तथा पक्षपात के आश्रय से कभी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। कषायों से मुक्ति ही वास्तविक मुक्ति है ।

आचार्य समन्तभद्र ने भगवान के तीर्थ को सर्वोदय तीर्थ नाम प्रदान किया।

सर्वापदामन्तकरं निरन्तं, सर्वोदय तिर्थमिदं तवैव ।

हे परमात्मा । समस्त आपदाओं को संपूर्ण रूप से समाप्त करने वाला आपका ही यह एक मात्र सर्वोदय तीर्थ है ।

अध्यक्षीय पाती

श्री शांति योग केन्द्र स्थापित किया जावे

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

आगामी ज्येष्ठ शुक्ल दसमी बुधवार दिनांक 12 जून 2019 संयमवयः स्थविर मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. का स्मृति शेष दिवस है। इस दिन उनने श्री भांडवपुरतीर्थ पर 'ॐ अर्हं नमः' का स्मरण करते हुए अन्तिम श्वांस ली थी तथा चिरबिदाई की बेला में इस सन्देश की प्रतिध्वनि संदेशित की थी कि त्रिस्तुतिक परम्परा दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के त्याग, योग एवं क्रियोद्धार का परिणाम है, इनका यशध्वज सदैव फहरता रहे। मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. का सम्पूर्ण संयम जीवन माला फेरते रहने की योगक्रिया से विभूषित रहा।

वे शांत स्वभावी तथा न्यूनतम वाचाल मौन पुरूष की भांति अपने जीवनकाल को सार्थक करते रहे। उनने कई वर्षों तक केवल दुग्ध पर जीवन टिकाया, इस काल में अन्न या अन्य खाद्य पदार्थों का त्याग रखा। उनने संकल्प किया था कि वे बीस तीर्थंकर देवों की मोक्ष भूमि श्री सम्मेत शिखर तीर्थ की यात्रा करके ही संकल्प की संपूर्ति करेंगे। उनने इसे निर्वाहित किया।

मुनिराजश्री शांति विजयजी म. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के ज्येष्ठ गुरु भाई थे। वे उनको वर्षों तक सान्निध्य प्रदान करते रहे। मुनिराज श्री जयंतविजयजी म. 'मधुकर' ने उनकी अगुवाई में ही वर्षों तक विचरण किया। प्रज्ञ व प्रतिभायुत मुनिराज श्री जयंतविजयजी म. संघ व समाज के उत्थान की गतिविधियों को सम्पोषित करते रहते थे, उस समय मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. का आशीर्वाद सदैव सुलभ रहता था। जैनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. के स्वर्गवास के पश्चात् जब अखिल भारतीय त्रिस्तुतिक संघ ने मुनिराज श्री जयंतविजयजी म. को आचार्य पद अर्पित करने का निश्चय किया तब मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. ही ज्येष्ठ मुनिराज के रूप में प्रकट हुए तथा उनने ही अपना सान्निध्य प्रदान कर आचार्य महोत्सव आशातीत सफलता एवं निर्विघ्नता के साथ सम्पन्न करवाया। निस्सन्देह उनने त्रिस्तुतिक परम्परा को जाज्वल्यमान किया।

मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. योग पुरुष थे। योगी के रूप में उनने आस्था अर्जित की। श्री भांडवपुर तीर्थ भूमि पर उनके जीवन के बहुमूल्य संयम साधना वर्ष व्यतीत हुए। उनकी स्मृति में इस तीर्थ भूमि पर एक सुव्यवस्थित योग केन्द्र की स्थापना की जानी सर्वथा उपयुक्त होगी। आशा है प्रयत्न प्रारंभ होंगे।

अध्यक्षीय संदेश

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अवर सबे अनेरा

विगत 23 मई 2019 को अहमदाबाद (राजनगर) महानगर में आत्मोद्धार तीन सम्पन्न हुआ । यह आयोजन किसी दिवस या अवसर का नहीं बल्कि त्यौहार का था, पर्व का था। त्यौहार भी आत्मा का, भव्य आत्माओं का अपना आत्म उद्धार करने हेतु संयम ग्रहण कर अग्रसर होने का था। इसमें युवतियों के अतिरिक्ति दो युवाओं ने भी आजीवन सामायिक व्रत अंगीकार किये जाने का उच्चारण करते हुए रजोहरण प्राप्त किये। इनमें भव्य आत्माओं में ऐसे संस्कारों का उदय ज्ञानायतन की देन है। ज्ञानायतनों का शुभारंभ स्मृति शेष जैनाचार्य लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से है। इनमें युवा तथा छात्रगण अपने जीवन के वास्तविक ज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने आपके जीवन को आध्यात्मिक क्रांति के लिये तैयार कर रहे हैं। त्रिस्तुतिक समाज में निःस्सन्देह योगीराज दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा उपदिष्ट मार्ग की सही साधना इनके माध्यम से हो रही है। इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढना बड़ा विकट है कि हम कौन हैं ? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? हमें अपने जीवन को किस दिशा में प्रवृत्त करना है ? जीवन को दिव्य आराधना काल में परिणित करने के लिये किस मार्ग का अनुगमन करना है ? क्या हमारे जीवन का उद्देश्य बीई, एमबीबीएस, एमबीए, सीए जैसी डिग्रियाँ प्राप्त कर धनोपार्जन में अंध संलग्न होना है ? इस प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ते हैं तो समाधान में हमारे सन्मुख वही प्रकाश फैलता हुआ दिखाई देगा जिसे तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने राजकुल की समृद्धि तथा सुविधाओं का त्याग करते हुए प्रसारित किया था। यही सही जीवन है। इसी से हमारा उद्धार संभव है। यही हमें दैहिक या पौद्गलिक सुखों से दूर कर हमारी अपनी आत्मा की पूंजी की ओर ले जाता है। दुनिया में जितना जो कुछ है, वह मिटने वाला है, नश्वर है, हमारी अपनी सम्पत्ति सिर्फ आत्मा है। सिकन्दर ने अपार सत्ता को विश्वभर के हकीमों तथा वैद्यों को न्यौछावर करने की तैयारी की थी, कि कोई उसकी गंभीर व्याधि से उबार दे एवं उसका जीवन बढ़ा दे लेकिन किसी पराये धन का साथ सार्थक नहीं हुआ, अंततः उसने अंतिम इच्छा प्रकट की कि उसके शव के दोनों हाथ खाली बाहर दिखा दिये जावें, संसार को यह भान करवाने के लिये कि विश्व विजेता आखिर कुछ साथ नहीं ले जा पाया, उसे सभी यहीं का यहीं छोड़कर प्रस्थान करना पड़ा।

बस ! इसी संदेश का हम भी सत्यापन कर लें।

संपादकीय

संस्कार एवं सौम्यता के अनुपमतर्क

संयमवयः स्थविर श्री शांतिविजयजी म.

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

संस्कार ज्योति

शासन गौरव, शालीनता की नक्काशी

सौम्यता व सादगी के संगीत

शांत दांत गंभीर,

स्व. पूज्य संयम स्थविर मुनिराज श्री शांतिविजयजी महाराज ने अपना सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा की भव्यता तथा समर्पण की स्निग्धता के साथ जीया। वे सरलता तथा सौजन्यता से समृद्ध थे तथा उनने कभी भी अपने जीवन की राह पर टेढ़ीमेढ़ी या वक्र रेखाएँ नहीं खींची। वे सीधे सादे एवं समग्रता के अनुपम तर्क थे। समाज को उनने जो कुछ भी दिया अथवा जिन शासन का संचालन निरापद करने का जो परिश्रम किया वह अनुपम था।

मूलतः आप रबारी अहीर (देवासी) जाति के थे। आपका बचपन अपनी जाति के परम्परागत व्यवसाय गायों-पशुओं आदि के चराने जाने में व्यतित हुआ लेकिन वन में यह कार्य करते हुए भी संस्कारों तथा सद्वृत्ति का सौन्दर्य आप की भावनाओं में निखरता रहा। इसी ने वृद्धिगत होकर आपको जैन श्रमण जीवन का अनुगामी बना दिया। आपका जन्म स्थल राजस्थान में स्थित सिरोही जिले के मण्डार के निकट पीथापुर ग्राम था। जहाँ ईस्वी सन् 1920 में पिताश्री भगवानजी तथा मातेश्वरी श्रीमती ज्योतिबाई के यहाँ मानव जन्म से ज्योतिर्मय हुए। आपका गृहस्थ नाम श्री देवारामजी था। युवावस्था के दस्तक देने के काल में आपको जीवन का मार्गदर्शन मांडोली ग्राम के योगीराज तथा आबु पर्वत के अमर साधक श्री शांतिसूरीश्वरजी म. से प्राप्त हुआ। वहीं आध्यात्मिक बीजारोपण आपके जीवन धरातल पर हो गया। इसे गुरुदेव स्व. श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. ने सम्पूर्ण विकसित किया जो प्रखरता तथा प्रकाण्डता के प्रज्ञाशील प्रतिमूर्ति थे। उनने ही आपके मन मस्तिष्क में आध्यात्म की लय जागृत की, फलतः आपका जीवन सांगोपांग कायाकल्प की दिशा में अग्रसर हो गया।

दिव्यता के दिनकर श्री देबारामजी

ने गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. के चरणों में जीवन को आलोकित कर छब्बीस वर्ष की आयु में जैन मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रवज्या ग्रहण कर ली। वह धन्य तिथि आपके जीवन में जालोर जिले के ग्राम हरजी में उत्सवपूर्वक ज्येष्ठ कृष्णा 6 विक्रम संवत् 2003 संयोजित हुई। एक वर्ष तक लघु दीक्षा में रहते हुए आपने आध्यात्मिक सिंचन को परिपक्व किया।

आपकी बड़ी दीक्षा सन् 1947 में गुजरात की जैन नगरी थराद (जि. बनासकोठा) में सम्पन्न हुई।

मुझ (सुरेन्द्र लोढ़ा) पर आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद था। आपका प्रगाढ़ परिचय मेरे पिताश्री तथा कर्मठ-कर्तव्यशील जैन विधिकारक पं. श्री राजमलजी लोढ़ा से था। वे जब भी जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. के वंदनार्थ पहुंचते थे एवं उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् जब भी आपको वंदन करते पदार्थकारी प्रसन्नता के साथ आप उनका शीशस्पर्श अपने हस्तकमल से करते थे। मैं साथ होता था तब मेरी आयु पंद्रह वर्ष थी। वे उस समय मुझ से तीन गुना आयु का आरोहण कर रहे थे लेकिन मुझ उस बालक को वे 'लोढ़ाजी' शब्द से सम्बोधित करते थे। उनकी इस शालीन संस्कृति पर मैं निहाल हो जाता था। वे वास्तव में बड़प्पन तथा हृदय की विशालता के अपरिमित भण्डार थे। उनका दैनिक कार्य मौन रहते हुए माला गिनते रहना ही था। जाप में मस्त बना रहना उनके जीवन का शिलालेख था। वे किसी बबाल की हिस्सेदारी अथवा प्रंच की उधेड़बुन में नहीं रहते थे। सन्यास जीवन के पहिले पंद्रह वर्ष तक उनने अपने गुरुदेवश्री के साथ चातुर्मास करते हुए जीवन काल का प्रशिक्षण लिया। आपकी मनोगत रूचि जाप में थी, आप हकीकत में स्वभाव से शान्त थे। जैनाचार्य श्रीमदा विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. जैसे गुरु की प्राप्ति ने आपको आराधना का अमृत उपलब्ध कर दिया। आपने दीक्षोपरांत सभी चातुर्मास अपने गुरुदेवश्री के चरणों में प्रत्यक्ष रहते हुए किये। ईस्वी सन् 1960 में गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने चिरबिदाई ले ली।

आप अपने जपतप में ही गतिशील रहे। सबसे अलग निराला व्यक्तित्व प्रदर्शित करते हुए आप एकदम निस्पृही तथा निष्कामी संयम जीवन के पथिक बन गये। आचार्य पद का निर्णय नहीं हो रहा था, सभी मुनिगण एक मुकाम पर एक निर्णय के लिये एकत्र नहीं हो रहे थे। लेकिन आप (मुनिराज श्री शांतिविजयजी म.) की पहल रंग लाई। श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. के शिष्य समुदाय में आप वरिष्ठता में मुनिराज श्री कल्याण विजयजी, मुनिराज श्री हेमेन्द्रविजयजी, श्रीमद् विद्याचंद्र सूरीश्वरजी के बाद मुनिराज श्री सागरानंद

विजयजी म. तथा मुनिराज श्री सौभाग्यविजयजी म. से क्रम में थे एवं आप के पश्चात् मुनिराज श्री देवेन्द्रविजयजी म. एवं अन्य की दीक्षा हुई थी। आप काफी वरिष्ठ थे। आपकी पहल ने रंग दिखाया, सभी वरिष्ठतम मुनिराज श्री विद्याविजयजी म. के पदारोहण पर एकमत हो गये। गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. की पट्ट परम्परा में पांचवें आचार्य के रूप में श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. नाम अभिवर्द्धित हो गया। आप नूतन आचार्यश्री के साथ ही रहे। उपरान्त आपने स्नेह की हिल्लारों ने मुनिराज श्री जयंतविजयजी 'मधुकर' की सक्रियता को स्पर्श किया। आपके सान्निध्य में सियाणा, थराद, जालोर, भीनमाल आदि में चातुर्मास हुए। व्याख्यान प्रदान करने का दायित्व मुनिराज श्री जयंतविजयजी महाराज पर था। कई उपलब्धियाँ चातुर्मासों में निखर गईं, इन चातुर्मासों के अतिरिक्त आपने अपने शिष्य वर्ग के साथ चातुर्मास किये। इस क्रम में भीनमाल, भांडवपुर, अहमदाबाद, लवाणा आदि के चातुर्मास जुड़ गये। इन चातुर्मासों में मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म. सारगर्भित प्रवचनों द्वारा आराधना तथा जपतप का प्रकाश फैलाने लगे थे। चातुर्मास में श्री नवकार महामंत्र की सामूहिक आराधना भी करवाई जाती थी।

मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. दृढ़ निश्चयों के संकल्पशील मुनि थे। आपने प्रतीज्ञा कर ली कि जब तक श्री सम्मेतशिखरतीर्थ की यात्रा नहीं करूंगा तब तक भोजन में एनाज का उपयोग नहीं करूंगा। आपके जीवन का आधार उस स्थिति में केवल दुग्ध या चाय का पान रह गया। आप अडिग रहे। शुभ संयोग ऐसा बना कि आपने श्री सम्मेतशिखर यात्रा के लिये राजस्थान से विहार किया तथा उसी समय में मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म. 'मधुकर' ने विजयवाड़ा से छ'रि पालक संघ के साथ श्री सम्मेतशिखरजी की यात्रा हेतु प्रस्थान किया। दोनों की पहुंच श्री सम्मेतशिखर तीर्थ पर एक दिन एक समय हुई तथा युगल मुनिश्रेणों ने अपने मुनिमंडलों सहित एक साथ यात्रा कर श्री सम्मेतशिखर तीर्थ पर दि. 11 मार्च 1983 को शीश नवाकर जीवन को धन्य बनाया। बावीस वर्षों तक इस लक्ष्य प्राप्ति की आशा में आपने कठोर जीवन अपनाया एवं सिर्फ दुग्धपान को अपना आधार रखा। उनके स्वभाव में सरलता तथा सहजता थी लेकिन उतनी ही अदम्यता भी थी, आप जो तय कर लेते थे उस पर अटल रहते थे एवं पूर्ण करके ही चैन लेते थे।

इससे पूर्व जैनाचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. का श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर दिनांक 19 जुलाई 1980 को कालधर्म हो गया। आपके जीवन में ऐसा उत्पन्न यह दूसरा प्रसंग था, पुनः

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ तथा पूज्य दादा गुरुदेव के (छठे) पट्टधर का प्रश्न गहमागहमी उत्पन्न करने लगा। श्री संघ का अधिकांश जनसमुदाय मुनिराजश्री जयंतविजयजी म. 'मधुकर' की क्षमता, प्रतिभा, ज्ञानशीलता तथा कुशलता को दृष्टिगत कर श्री संघ को सुरक्षित संभालने पाने की दृष्टि से उनके पदारोहण के पक्ष में था। मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. ने समय की नब्ज को परख कर इसी मत के अनुरूप अपना अभिमत प्रदान किया तथा समाज के मार्गदर्शक के रूप में ठीक तथा सही समय पर अग्रणीयता करते हुए मुनिराज श्री जयंतविजयजी म. का आचार्य पदोत्सव समारोहपूर्वक श्री भांडवपुरतीर्त पर आयोजित करने की सकारात्मक पहल की। ऐसे नाजुक अवसर के द्वितीय बार उपस्थित होने पर आपने श्रीसंघ के तारों को एकता व एकरूपता से झंकृत करने में सफलता प्राप्त की। आपने इस प्रापित के लिये विराट रूप धारण कर लिया। मुनिराज श्री जयन्त विजयजी म 'मधुकर' का आचार्य पदोत्सव भारी भीड़ के मध्य आठ दिवसीय कार्यक्रमों के साथ दिनांक 8 फरवरी 1984 को श्री भांडवपुर तीर्थ पर सम्पन्न हुआ तथा आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. नूतन नाम घोषित किया गया। मुनिराज श्री शांतिविजयजी म. ने सर्वप्रथम वासक्षेप किया। आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. ने इस अवसर पर मुनिराजश्री शांतिविजयजी म. को 'संयम स्थविर' के पद से विभू,थ किया तथा अपनी ओर से आपका सम्मान काम्बली समर्पित करते हुए किया। इस समारोह को सफल बनाने में आपके शिष्य श्री जयरत्नविजयजी म. का महत्वपूर्ण योगदान रहा जो वर्तमान में आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. के रूप में हैं।

यों इससे पूर्व ईस्वी सन् 1980 का आपका चातुर्मास आपके सुयोग्य शिष्य मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी के साथ दियावट पट्टी के पंचों की विनती पर श्री भांडवपुरतीर्थ पर हुआ। यह चातुर्मास अभूतपूर्व रहा। तीर्थ के विकास की योजना का खाका भी इसमें खींचा गया। आपकी निश्रा में श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रन्ट का विधान लिखित किया गया एवं संस्था तथा पेढ़ी के कार्य को सुव्यवस्थित एवं सुचारू किया गया। आपके सद्प्रयासों से तीर्थ का प्रचार, विकास एवं निर्माण हुए।

आपका कालधर्म इसी तीर्त के परिसर में हुआ, वहीं आपका अंतिम संस्कार किया गया। इस स्थल पर स्मृति गुरु मंदिर बनाया जिसकी प्रतिष्ठा दिनांक 20 जून 2002 को हुई, अब इसका जीर्णोद्धार किया जा रहा है। इसी स्थल के निकट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. का अंतिम संस्कार किया गया जहाँ उनका समाधि मंदिर निर्माणाधीन है।

श्रेणिक तथा अभयकुमार

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

गोबर में आग लगाने से गोबर जल्दी सूख गया और गोबर में पड़ी अंगूठी पूर्ण रूप से उसमें धंस गई। अब चूँकि कुआं सूखा हुआ था और अंगूठी को बाहर निकालना था इसके लिये कुएँ में पानी भरा जा रहा था गोबर सूखा होने के कारण पानी पर तैर रहा था। धीरे-धीरे पूरा कुआं पानी से लबालब भर गया और गोबर तथा उसमें धंसी अंगूठी पानी के ऊपर तैरती हुई किनारे पर आ गई। तब अभयकुमार ने अपना हाथ बढ़ाकर गोबर में धंसी अंगूठी को बाहर निकालकर साफ किया और महाराजा श्रेणिक के सामने प्रस्तुत की। वहाँ उपस्थित प्रजा ने अभयकुमार का तालियों तथा पुष्पवर्षा के साथ स्वागत किया। महाराजा श्रेणिक भी इतनी तीव्र बुद्धि वाले बालक को अपनी प्रजा के रूप में पाकर फूले नहीं समा रहे थे। महाराज ने भी बालक श्रेणिक का खुशी-खुशी स्वागत किया और अपने पास बुलाकर प्यार-दुलार के साथ पूछा 'बुद्धिमान बालक ! वैसे तो हम तुम्हारी विलक्षण बुद्धि और सूर्य के समान तेजयुक्त मुख और शांत स्वभाव से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं और तुम्हारे गुण, शौर्य तथा शालीनता तुम्हारा परिचय दे ही रहे हैं परन्तु फिर भी हम तुम्हारे बारे में जानने को उत्सुक हैं। हम जानना चाहते हैं कि तुम्हारे माता-पिता कौन हैं और तुमने जन्म से किस नगरी को सुशोभित किया है ?' अभयकुमार भी अपना परिचय देने के लिये उत्सुक थे वे मन ही मन खुश हुये और बोले कि 'महाराज ! मैं वेणातट नगर का निवासी हूँ।' वेणातट के बारे में सुनकर महाराज को वेणातट के सेठ सुभद्र की पुत्री (महाराज की धर्मपत्नी) की याद आई। महाराज ने बालक अभय से वेणावट के सेठ सुभद्र और उनकी पुत्री 'नन्दा' के बारे में पूछा। अभयकुमार मन में प्रसन्नचित होकर महाराज के सामने झुकता हुआ शांत स्वभाव में बोला- 'हाँ, महाराज! सेठ सुभद्र मेरे नानाजी हैं और उनकी पुत्री 'नन्दा' वेणावट नगर की शोभा है और मेरी माता हैं और मैं उनका पुत्र अभय हूँ।'

महाराज का मन हर्ष और उल्लास से भर उठा और आँखों से आँसु झलकने लगे वे अपने आप को रोक नहीं पाये उन्होंने अभयकुमार को प्रेमपूर्वक तथा स्नेह

के साथ गले लगा लिया। महाराज का मन करूणा से भर उठा था। महाराज ऐसे बुद्धिमान, शील सम्पन्न, शांत स्वभाव और चतुर पुत्र को पाकर फूले नहीं समा रहे थे अभय भी अपने पिता की छत्रछाया में अपने-आप को बहुत ही खुश और सुरक्षित महसूस कर रहा था और स्नेह के साथ अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गया। कुछ समय बाद महल में महाराज और राजकुमार की जयघोष के नारे पुष्पवर्षा के साथ गूंजने लगे। पूरे राज्य में खुशी और उत्साह का माहौल दिखाई देने लगा। राजकुमार अभयकुमार ने अपने पिता (महाराज) से कहा 'पिताजी ! आप से मिलने की आशा से ही मैं अपनी माता (नन्दा) को साथ लेकर आपके नगर में आया हूँ।

(क्रमशः)

गुरू के चरणों में

(साध्वी रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

गुरु के चरणों में जीवन अर्पण करदो समर्पण कर दो भाई ऽऽऽ

(1) धरती पर यदि स्वर्ग है तो
मिलेगा गुरु के समर्पण में
अज्ञान का जो ताला लगा है
खुलेगा गुरु के ही चरण में
गुरु का शरणा जिसे न मिला जीवन उसका वीरान है।

(2) यश-कीर्ति का नहीं मोल है
देख मोह का पट खोल दे
गुरु का अनुग्रह पाया जिसने
जीवन उसका अनमोल है
कंकर भी शंकर बन जाए आशीष गुरु का जो पाए भाई ऽऽऽ

(3) गुरु का समर्पण यदि न होगा
अहंकार का राज्य चलेगा
भव-भव में तुझे सुख न मिलेगा
भटकेगा तू संसार रे
मन को मोड़ के बंधन तोड़ के भजले तू गुरुवर को

गतांक के आगे

महाराजा जितशत्रु का युग (2)

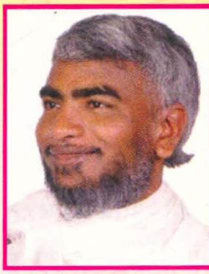

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

मिथिला नगरी में रहने वाली चोक्षा (सन्यासन) घूम-घूमकर अपने आसपास के गाँवों में धर्म, तीर्थ और वेदों का उपदेश देती है जब सन्यासन द्वारा दिया गया प्रवचन राजकुमारी मल्ली ने सुना तो उन्होंने चोक्षा से एक प्रश्न किया कि आपके धर्म में पवित्रता की परिभाषा क्या है ? सन्यासन ने राजकुमारी के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि यदि खून से भिगोये हुए वस्त्र को हम यदि खून से ही धोवें तो वह साफ हो जाएगा या आत्मा की शुद्धि के लिये शरीर का स्नान करने से आत्मा की शुद्धि होती है और यह सोचमूलक धर्म के अंतर्गत रखा गया है चोक्षा का उत्तर सुनने के बाद राजकुमारी मल्ली ने कहा कि यदि खून से भिगोये हुए कपड़े को खून से साफ किया जाए तो वह शुद्ध/साफ होने के बजाय और अधिक मैला हो जाएगा।

ठीक इसी प्रकार स्नान करने या यज्ञ करने से आत्मा की शुद्धता नहीं होती है। अगर यह बात किसी अल्पबुद्धि वाले व्यक्ति से पूछी जाए तो वह भी आसानी से बता देगा कि खून से वस्तु को साफ करने से वह और अधिक गंदी हो जाएगी।

ठीक इसी प्रकार हिंसा, असत्य, मिथ्यादर्शन आदि द्वारा किये गये कर्मों से आत्मा की शुद्धि नहीं हो सकती है अगर कोई मानव हिंसा या किसी प्रकार का कोई पाप करता है और उसके पश्चाताप स्वरूप जल से स्नान करता या कोई यज्ञ करता है तो इससे वह अपनी आत्मा की शुद्धि नहीं कर सकता है जैसे कि खून से रंगे वस्त्र को साफ करने के लिए क्षार युक्त जल में रखकर गलाने के बाद अग्नि में तपाया जाता है उसके बाद शुद्ध पानी से धोया जाता है तभी वह वस्त्र शुद्ध और निर्मल होता है इसी प्रकार आत्मा को शुद्ध करने के लिए क्षार (मानव / लोकहित में कार्य) से स्नान कर, तपस्या की अग्नि में जलकर संयम के शुद्ध जल से धोने पर ही आत्मा को शांति मिलती है।

(क्रमशः)

प्रासंगिकम्

समता प्रगटाये-वही सामायिक

(पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा.)

सामायिकं च मोक्षांगं, परं सर्वज्ञभाषितम्

सामायिक मोक्ष का परम-प्रधान कारण है, ऐसा सर्वज्ञ भगवंत कहते हैं।

सामायिक द्वारा तीनों योगों की शुद्धि होती है, क्योंकि सामायिक निरवद्द क्रिया है, पापरहित है, एकान्त कुशल आशयवाली है, शुभ परिणामरूप है।

सामायिक के 3 प्रकार हैं।

1. **साम**- स्नेह परिणाम। जीव मात्र के प्रति मैत्रीभाव । जिसे सम्यक्त्व सामायिक भी कहते हैं।
2. **सम**-तुल्य परिणाम। अनुकूल हो या प्रतिकूल, सर्व संयोगों में समभाव रखना। जिसे श्रुत सामायिक भी कहते हैं।
3. **सम्म** -एकतारूप परिणाम। रत्नत्रयी में समानभाव। जिसे चारित्र सामायिक कहते हैं।

उपरोक्त तीनों सामायिक के भेद-प्रभेद शास्त्रों में बताये गये हैं, जिसे समझकर हमारे अंदर भी समभाव प्रगट हों, ऐसा प्रयास करना चाहिये।

समता आत्मा का गुण है, जिसे प्रगट करने के लिये ही क्रियारूप सामायिक करना चाहिये । समता निश्चय है, सामायिक व्यवहार है। समता मंजिल है, सामायिक मार्ग है। समता स्वस्थता है, सामायिक औषधि है।

क्रियारूप सामायिक का आशय समता ही होना चाहिये । समता प्राप्ति के बिना सामायिक क्रिया निष्फल है। जिस तरह उत्तीर्णता अध्ययन की सफलता है, मुनाफा व्यवसाय की सफलता है, वैसे ही समता सामायिक की सफलता है।

* सामायिक परमात्मा का प्रधान उपदेश है।
* सामायिक आवश्यक का मूल है।
* सामायिक दिव्य ज्योति है, जो मोक्षमार्ग को प्रकाशित करती है।
* सामायिक कल्पवृक्ष है, जो साधकों के मनोवांछित पूर्ण करता है।
* सामायिक में रत्नत्रयी, तत्त्वत्रयी, पंच परमेष्ठि, षड्ावश्यक,

पंचाचार, पंचमहाव्रत, अष्टप्रवचन माता, 20 यतिधर्म आदि अनेक मोक्षप्रदायक अनुष्ठान समाहित है । इसीलिये सामायिक सर्वधर्मव्यापि है ।

* आज तक जितने पुण्यात्माओं ने मोक्ष प्राप्त किया है, कर रहे हैं, करनेवाले हैं, वो सभी सामायिक का ही प्रभाव है।
* सामायिक विधि के सूत्र एवं करेमिभंत्ते का विशिष्ट अर्थ गुरुजनों से समझकर 'सामायिक' का अनुशरण करने पर हमें अवश्य सामायिक के फलस्वरूप 'समता' गुण की प्राप्ति होगी ।
* सामायिक से प्राप्त होनेवाले 'समता' गुण की महिमा अनेक ग्रन्थों में आलेखित है । जैसे-
* **अध्यात्मसार में लिखा है –**

जब समता का पूर्ण विकास होता है, तब विषयों की इच्छा का अभाव हो जाता है, जिससे निर्मल योगवाले योगीओं को कोई शस्त्र द्वारा छेदन करे या चंदन द्वारा पूजन करे, दोनों में वह तुल्यता (समानता) धारण करता है ।

* **प्रशमरति में लिखा है –**

स्वर्ग के सुख परोक्ष है, मोक्षसुख अत्यन्त परोक्ष है, लेकिन प्रशम सुख प्रत्यक्ष है, जो पराधीन नहीं हैं, बिना धन के प्राप्त होता है ।

* **योग शास्त्र में लिखा है –**

व्यक्ति-जिन कर्मों को कोटि जन्म तक तपस्या करके भी क्षय नही कर सकता है, उन कर्मों को 'समता' का आश्रय लेकर एक आधी क्षण में क्षय कर देता हैं।

* **योग प्रदीप में लिखा है –**

वस्तु के जाने पर जिसे शोक नही होता है, वस्तु प्राप्ति पर जिसे हर्ष नही होता है, शत्रु एवं मित्र के प्रति समान चित्त हो, उसे सामायिक कहते हैं ।

समता सर्वभूतेषु, संयमः सर्वभावना ।
आर्त्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिक व्रतम् ।।

अर्थ– **सभी जीवों के प्रति समता, त्रियोग से पाप व्यापार के त्यागरूप संयम, मैत्रादि भावना एवं आर्त्त-रौद्र ध्यान का त्याग, वह 'सामायिकव्रत' है ।**

तीर्थंकर तंत्र (22)

कालचक्र तथा उसके आरे

(मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

श्री पद्मप्रभ भगवान

साधुओं में वैक्रियलब्धि धारी	15 हजार 3 सौ	11 हजार	केवली
अवधिज्ञानी	9000	9150	मन: पर्यवज्ञानी
चौदह पूर्वधारी	2030	8400	चर्चावादि
केवली साध्वीजी	22 हजार	2 लाख 57 हजार	श्रावकों की संख्या
श्राविकाओं की संख्या	4 लाख 93 हजार	दानवीर्य	मुख्य श्रावक
प्रथम देशना का विषय	अन्यत्व भावना	200 धनुष	शरीर प्रमाण
चैत्यवृक्ष की ऊँचाई	1 गाउ 400 धनुष	फागण वदि 7	मोक्ष- तिथि
मोक्ष-स्थान	सम्मेत शिखर	1 उपवास	मोक्ष के दिन तप

किस आसन से मोक्ष गये	कायोत्सर्ग	500	मोक्ष गये तब उनके साथ साधु मोक्ष गये
प्रथम आर्या	सोमा	दूसरा देवलोक	पिता की गति
माता की गति	मोक्ष	9 सौ कोटि सागरोपम	पूर्व तीर्थंकर मोक्ष जाने के कितने समय बाद मोक्ष
सम्यक्त्व पश्चात के भव	3 भव	अरिदमन आचार्य	पूव तीसरे भव के गुरु
निर्वाण राशि	वृश्चिक	मूला	निर्वाण नक्षत्र
निर्वाण समय	प्रथम प्रहर	20 लाख पूर्व	आयु प्रमाण
उत्कृष्ट तप	8 मास	36 गाऊ	समवसरण की ऊँचाई

ओसवाल वंश का उद्भव

(श्री फतहसिंह लोढ़ा, साहित्यकार एवं प्रकाशक)

तेईसवें जैन तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम पट्टधर श्रीमद् शुभदत्ताचार्य थे, उनके बाद हरिउत्तसूरि द्वितीय और श्री समुन्द्रसूरि तृतीय पटट्टधर अनुक्रम से हुये। ये तीनों ही भगवान् पार्श्वनाथ के संतानीय थे, अतः अपना आहार-विहार अलग से ही करते थे। ये चार महाव्रत पालते थे अतः चतुर्थ व्रत धारी संत कहलाते थे। भगवान महावीर पार्श्वनाथ के बाद तथा चौबीसवें अन्तिम तीर्थकर हुये, इनके साधु पांच महाव्रत पालते थे, और यही प्रथा-परम्परा आज तक प्रचलन में है। जैन धर्म के सभी साधु चाहे वे किसी भी पंथ और मान्यता को मान रहे हों, पांच महाव्रत ही पालते हैं, अतः जैन साधु 'पंचव्रत धारी संत' कहलाते हैं।

भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतम स्वामी हुये इनका भगवान पार्श्वनाथ के पट्टधरों से आत्मीय व्यवहार था, अतः दोनों पक्षों का एका होने में कोई विशेष समय नहीं लगा, और उसी का परिणाम यह रहा कि चतुर्थ पट्टधर (भगवान पार्श्वनाथ के) 'केशीश्रमण' ने भगवान् महावीर का शासन तुरन्त स्वीकार किया और दोनों पक्षों में जो भेद था वह समाप्त हुआ और भगवान महावीर की आज्ञा में रहकर विचरण करने लगे। भगवान महावीर के पट्टधर हुए श्री स्वयंप्रभसूरि।

श्रीमद् स्वयंप्रभसूरि विद्याधर कुल के नायक थे, अतः आप अनेकानेक विद्याओं और कलाओं के पाररवी एवम् स्वयं भी जानकार थे। आपने अपनी देशनाओं में अहिंसा-धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इन्हीं के काल में उसकी पालन करने पर विशेष बल दिया गया। आपने ही बतलाया कि यदि जीवन से तरण तारण चाहते हो तो 'अहिंसा' ही सर्वोपरि धर्म साधन है, इनका पूर्ण पालन करो। आपकी निश्रा में विचरण करने वाले साधु साध्वी भी आपकी देशना का प्रचार-प्रसार करते और ग्राम विचरण कर 'अहिंसा' का संदेश देते।

स्वयंप्रभसूरि ग्राम- ग्राम नगर विचरण कराते हुए अर्बुदाचल प्रदेश (आबू) की ओर पधारे। इस क्षेत्र में हवनादि का बड़ा जोर था तथा परिवारों की जीवन शैली अत्यन्त स्तरहीन थी। सीधे-सीधे शब्दों में कहा जा सकता है कि ये लोग अमर्यादित जीवन यापन कर रहे थे। आपने अपने पांच सौ शिष्यों के साथ इस क्षेत्र में विचरण प्रारम्भ किया।

उस समय आपने स्थान-स्थान पर 'अहिंसा परमो धर्मः' की देशना दी। 'अर्बुदा पर्वत'पर उस समय के स्थापित मन्दिरों के दर्शन-वन्दन की प्रक्रिया को पूर्णकर आप समीप ही वैभवपूर्ण नगरी श्रीमालपुर पधारे। श्रीमालपुर में राजा जयसेन का राज्य था। उस राजा का हवनादि में अटूट विश्वास था, अतः इसने आचार्य स्वयंप्रभूसूरि की देशना को सहजता से स्वीकार नहीं किया। किन्तु जब बार-बार आचार्य श्री ने 'अहिंसा' के महत्व को समझाया तो राजा जयसेन ने आचार्य श्री को आदर पूर्वक गृहनगर में प्रवेश करवाकर उस समय श्रीमालपुर में बसने वाले नौ हजार स्त्री-पुरुषों को जिनमें ब्राह्मण और क्षत्रिय ही अधिकांशतः थे, को कुल मर्यादा पद्धति से जैन धर्म अंगीकार करवाया। जिस दिन 'अहिंसा' के इस शब्द की विजय हुई, उसी दिन को 'जैन धर्म' की स्थापना का दिवस समझा जाना चाहिये। इस प्रकार प्रचार-प्रसार में चतुर्थ पट्टधर स्वयंप्रभसूरि के महत्वपूर्ण योगदान को प्रत्येक जैनी को समझना चाहिये ऐसा मेरा मन्तव्य है।

श्री स्वयंप्रभसूरि ने अपनी देशना को आगे बढ़ाते हुये अपने सम्पूर्ण जीवन को भगवान महावीर की आज्ञा में समर्पित कर दिया। आपने लगभग इक्यावन वर्ष तक धर्म प्रचार किया और अन्तिम समय में शत्रुंजय तीर्थ पालीताणा गुजरात पर अन्न-जल का त्याग करते हुए शुक्ला प्रतिप्रदा वी.सं. 57 के दिन समाधि मरण अंगीकार किया। आपके स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् आपके योग्य शिष्य श्री रत्नचूड पाट गादी हुये जो आगे चलकर रत्नप्रभसूरि के नाम से विख्यात हुये।

श्री रत्नप्रभसूरि ने अपने कार्य को गतिमान रखा और ओसिया नगरी में ओसवाल श्रावक की उत्पत्ति करके अपने कार्य की देशना को मूर्तरूप किया। अतः जैन धर्मावलम्बियों को आचार्य स्वयंप्रभसूरि और श्री रत्नप्रभसूरि को प्रतिदिन ध्यान-साधना में स्थान देना चाहिये, जिनके सद्प्रयासों से ओसवाल वंश की स्थापना ओसिया नगरी में हुई। ओसिया नगरी को ही 'ओसवाल वंश' की स्थापना का नगर माना जाता है और इसका सम्पूर्ण श्रेय श्री रत्नप्रभसूरि और उनके गुरु श्री स्वयंप्रभसूरि को दिया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ओसवाल वंश की स्थापना का दिवस श्रावण कृष्णा चतुर्दशी है।

मैं व्यक्तिगत स्तर पर अनुरोध करता हूँ कि जैन धर्म के प्रत्येक मानेता 'अहिंसा' शब्द को तन-मन से अंगीकार करने वाले प्रत्येक स्त्री-पुरूष को तथा जितने भी जैन साधु-साध्वी चाहे वो किसी भी पंथ और आचार्य मर्यादा में विचरण कर रहे हों, उन्हें कम से कम ओसवाल वंश की स्थापना करा यह पावन स्मृति दिवस बड़े ही हर्षोल्लास एवं गर्व के साथ मनाने का उपक्रम करना चाहिये।

सम्प्रति - संचालक- यतीन्द्र साहित्य सदन, सरस्वती विहार, सेशन कोर्ट के सामने, भीलवाड़ा, राजस्थान, मो. 9602471810

दुष्कर है समाधि मरण...

(श्री जे.के. संघवी)

श्रमण भगवन्त महावीर फरमाते हैं कि 'चार गति एवं 84 लाख योनी में भ्रमण करते हुए जीव को मनुष्य भव पाना दुर्लभ है। उसके बाद सद्गुरु के मुख से जिन-वचन सुनना अति दुर्लभ है। जिन-वचन सुनकर तत्व-रुचि-श्रद्धा-सम्यग्दर्शन की प्राप्ति उससे भी दुर्लभ है और उससे भी दुर्लभ है सर्व पापों के त्याग द्वारा संयम-चारित्र धर्म को अंगीकार करना एवं उसका शुद्धता से पालन करना अति दुष्कर है।

देवगति के जीवन च्यवन के समय (अंतिम बेला) अपनी दिव्य ऋद्धि-सिद्धि छूटने के कारण मोह-ममता में पड़कर चित्त की स्वस्थता को खो देते हैं। नरक के जीव प्रतिक्षण असह्य दुःख के कारण चित्त की स्वस्थता को नहीं रख सकते हैं। तिर्यंच गति के जीव अज्ञान, पराधीन एवं आहारादि संज्ञापूर्ति में डूबे रहने के कारण मृत्यु के समय समता नहीं रख सकते। मनुष्य के लिए भाई कुटुम्ब-परिवार, धन-दौलत में ममत्व एवं पुद्गल पदार्थों में आसक्ति के कारण अंत समय में समता-समाधि दुष्कर बनती है।

जो जन्मता है, वह मरता है। जो उदय होता है, वह अस्त होता है। जो विकसित होता है, वह विलीन होता है, जो खिलता है, वह मुरझाता है। आकार कुसुमवत् है। राजा हो या रंक, श्रीमंत हो या गरीब, सत्ताधारी हो या सत्ताविहीन, शेठ हो या नौकर, पुण्यशाली हो या पापी, अभिमानी हो या विनम्र, काल किसी को छोड़ता नहीं, वह किसी के अधीन नहीं होता।

काल की झपट कब लगेगी, यह निश्चित नहीं है। जैसे कोई फूल खिलते ही गिर जाता है, कोई थोड़ा खिलकर मुरझाता है, कोई पूर्ण विकसित होने पर ले लिया जाता है, कोई गिरकर पांवों के नीचे दब जाता है, वैसे ही कोई जीव गर्भावास में मृत्यु को पाता है, कोई बाल्य वय में पुष्प की तरह मुरझा जाता है, कोई किशोरावस्था में मृत्यु के वश हो जाता है, कोई युवावय में काल के गाल में समा जाता है, तो कोई वृद्धावस्था में मरण के शरण हो जाता है। मृत्यु का समय अनिश्चित है। काल के क्रूर पंजे से कोई किसी को बचा नहीं सकता। सारे अरमान अधूरे रखकर, मन की बात मन में रखकर तत्काल देह त्याग करना पड़ता है, उसमें एक समय का भी विलम्ब चलता नहीं

है। कोई भी संसारी जीव निश्चित यह कहने में समर्थ नहीं है कि मैं इतने वर्ष तक अवश्य जियुंगा। कितना जीना यह आयुष्यकर्म के अधीन है। आयुष्कर्म की स्थिति का ज्ञान होना अपनी शक्ति के बाहर की बात है। मुक्तिगामी ज्ञानी भगवंत ही यह जानने में समर्थ हैं।

जीवन के सुख-दुःखादि प्रसंगों की तरह मृत्यु भी एक अति महत्वपूर्ण, विचारणीय एवं गंभीर प्रसंग है। जैसे जीवन में आये अथवा आने वाले प्रसंग, भविष्य के लिए सुखरूप बन जाय इस हेतु से दीर्घ दृष्टि एवं विवेकपूर्ण उपयोग कर विचार करते हैं, उसी प्रकार मृत्यु जीवन के अंत समय की वास्तविक घटना होने की अपेक्षा से उस पर भी गंभीरता से विचार करना अति आवश्यक कर्तव्य है। मृत्यु अर्थात् क्या ? मृत्यु क्यों ? मृत्यु का भय क्यों? मृत्यु के बाद क्या ? मृत्यु किसलिये ? मृत्यु के बाद जीवन है ? क्या मृत्यु को जीता जा सकता है ? क्या उसका कोई उपाय है ? इन सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की उपेक्षा करना अथवा मोहांधकार से अंध बनकर अपने जीवन के अंतिम एवं अनिवार्य प्रसंग पर मौन रहना अथवा विचार न करना या विचार की वृत्ति न लाना आध्यात्मिक दृष्टि से गुनाह एवं स्वयं के लिए अकल्याणरूप मनोवृत्ति है।

मृत्यु जब निश्चित ही है तो उसके डर को थोड़े समय के लिए एक तरफ रखकर यदि परभव के विषय में विचार करें तो मृत्यु महोत्सव बन सकती है। 'जयवीयराय सूत्र' में भगवान के सामने की जाने वाली तेरह प्रार्थनाओं में बारहवीं प्रार्थना 'समाधि मरण' की है। वैसे तो मृत्यु की इच्छा करना योग्य नहीं है, किन्तु 'समाधि मृत्यु' की इच्छा करने योग्य है। समाधि-मरण अर्थात् स्वस्थ मृत्यु, समाधि अर्थात मन की प्रशान्त अवस्था, मन में कोई इच्छा न हो, आकांक्षा न हो, अपेक्षा न हो, उद्वेग न हो, उदासीनता न हो, घबराहट न हो, जितनी शक्ति से चाय का शौकीन सुबह की चाय पीता है, उतनी ही शान्ति अंत समय तक टिकी रहे उसका नाम है समाधि। पुराने कपड़े बदलकर जितनी सहजता से नये कपड़े पहनते हैं, उतनी ही सहजता से पुराने देह का त्याग करना समाधि है। समाधि मरण अर्थात् समझपूर्वक का मरण।

मृत्यु कोई साधारण घटना नहीं है, कि बिना तैयारी किये उसमें आसानी से प्रवेश किया जा सकेगा। एक दो दिन की तैयारी में भी मृत्यु सुधर जायेगी, उस भ्रम में नहीं रहें। मृत्यु के लिए लम्बे समय का व्यवस्थित आयोजन जरूरी है। जैसे एकाध घंटे के लिए बाहर जाना हो तो कोई खास तैयारी की जरूरत नहीं। एकाध दिन के लिए बाहर जाना हो तो कोई विशेष तैयारी की

जरूरत नहीं। सप्ताह भर बाहर जाना हो तो थोड़ी तैयारी करनी पड़ती है घर बदलकर दूसरे घर में रहने जाना हो तो महिनों तैयारी करनी पड़ती है। मृत्यु तो वर्तमान जीवन को छोड़कर दूसरा जीवन अपनाने की घटना है, तो उसके लिए कितनी तैयारी करनी चाहिए? 'जागे तब सवेरा' समझकर मृत्यु को सुधारने के कार्य में हम अभी से लग जायें। जिस प्रकार पुराने घर में जितना सामान ज्यादा होगा, नये घर में जाने में तकलीफ उतनी ही ज्यादा होगी। हम भी हमारे दोष रूपी भार से जितने हल्के हो जायेंगे उतना ही अगला सफर शान्ति पूर्वक तय कर पायेंगे।

मृत्यु के बाद जीवन की कल्पना महत्त्वपूर्ण है। आयुष्य कर्म का बंध हो चुका हो तो पुनर्जन्म अपनी इच्छा अनुसार नहीं मिल सकता, लेकिन आयुष्य कर्म का बंध नहीं हुआ हो तो अपनी इच्छानुसार पूर्वजन्म हम प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि मनकी शक्ति अगाध है और मन से भी आत्मा की शक्ति अनंत है। नये जन्म की कल्पना अभी से कर लेनी चाहिए। किस गति में जन्म लेना ? मनुष्य गति में भी कौन सा क्षेत्र ? कैसा परिवार ? कैसे पड़ोसी ? धर्म का वातावरण? भगवान का सान्निध्य ? आगामी जन्म में मुझे क्या कार्य करने हैं ? उसके लिए कैसी -कैसी सामग्री प्राप्त हो ? आत्मसाधना के मार्ग में कितना- कैसे आगे बढ़ना ? कौन-से गुणों की प्राप्ति हो ? कैसे गुरु मिले ? आदि सभी का कल्पना चित्र मन में बनाना चाहिए। विचार जितने स्पष्ट व मजबूत होंगे, उतने ही साकार होने की संभावना बढ़ेगी।

जिन्हें अपनी मृत्यु सुधारना हो, उन्हें अपना जीवन सुधारने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। जो इस विषय में उपेक्षा कर यदि मन में समझते हैं कि मृत्यु को सुधार लेंगे तो वे भूल रहे हैं। जो अपना जीवन सुधारने का प्रयत्न करते हैं, वे समझशक्ति व सहनशक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। रोगादिक पीड़ा में अथवा अपमानादि के समय सहनशीलता को प्राप्त करना आराधक भाव है। मृत्यु के समय बाह्य-पीड़ाओं के साथ ही आंतरिक पीड़ा भी संभावित है। ऐसे समय में समाधिभाव टिकाये रखने के लिए समझपूर्वक सहनशक्ति की खूब जरूरत होती है। मृत्यु को सुधारने की वृत्ति के लिए किसी भी प्रकार के इष्ट या अनिष्ट प्रसंगों का असर मन पर न हो, ऐसे मनोभावों को तैयार करने का ध्यान रखना चाहिये। कोई भी ईष्ट या अनिष्ट प्रसंग बन जाने पर उसकी असरता को मिटाने के लिए रोज मन को ऐसे परिशीलन भावों में अनुरक्त कर देना चाहिए कि किसी भी प्रकार के चित्त की प्रसन्नता, मन की स्वस्थता का भंग न हो। यद्यपि

यह सरल नहीं है, किन्तु जरूरी है।

समाधि – मरण विशेषकर गृहस्थ जीवन में दुर्लभ सा हो गया है। अंतिम समय में रोगों की वेदना आदि के कारण चिकित्सालय में आई.सी.यु. या वेन्टीलेटर पर रखकर आयु की डोरी को लम्बी करने का असफल प्रयत्न व्यक्ति की समाधि का भंग करने वाला बनता है। चिकित्सालय में समाधि मरण की कल्पना करना आकाश–कुसुमवत है। वहाँ का वातावरण ही समाधि के भावों को लाने जैसा नहीं होता। अतः व्यक्ति की परिस्थिति को देखते हुए, मन को थोड़ा दृढ़ रखकर एवं उपकारी पारिवारिक सदस्य दुर्गति में न चला जाय उसके लिए अंतिम आराधना द्वारा समाधि देने का प्रयत्न करना उत्तमोत्तम कार्य है। मृत्यु तो किसी के रोकने से रुक नहीं सकती, लेकिन यदि समझपूर्वक पंडित मरण हो जाये तो कई भावों की परम्परा कम होकर निकट भविष्य में सर्व बन्धनों से मुक्त होकर आत्मा अजन्मा बनकर कायमी मृत्यु की परम्परा से सदैव के लिए मुक्त हो जाये।

हमारे जीवन में भी समाधि मरण का मंगल मय प्रसंग बने एवं शीघ्र ही जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त बनें यही अभिलाषा। वीतराग की आज्ञाविरुद्ध कुछ लिखा गया हो तो त्रिविधे – त्रिविधे मिच्छा मि दुक्कडम्।

ज्ञान रश्मियां

पुस्तक का नाम	-	ज्ञान रश्मियाँ (भाग–4), संग्राहक – श्री ज्ञानमुनि जी म.
संपादक	-	डॉ. दिलीप धींग (एडवोकेट)
प्रकाशक	-	रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी, सुगत हाउस 18, रामानुजा अमर स्ट्रीट साहुकारपेट, चैन्नई– 600079, फोन– 044–25298082
मूल्य	-	रु. 200/– , भाषा–हिन्दी, कुल पृष्ठ – 812, छपाई–सफाई– ठीक

स्थानकवासी संत श्री ज्ञान मुनिजी प्रवचनों के जादूगर हैं। वे अपने प्रवचनों में दृष्टान्तों, कथाओं, मुहावरों तथा लोकोक्तियों को इस तरह सजाते हैं कि श्रोता उनके प्रवचन से बंध जाता है। उनके प्रवचनों में आने वाली कहानियों तथा प्रसंगों का यह चौथा भाग है। इसमें लगभग पाँच सौ कथाएँ हैं। इनसे प्रवचन उपयोगी बन जाता है। डॉ. श्री दिलीप धींग ने इसका सम्पादन किया है। उनकी सम्पादन शैली की अपनी मौलिकता है। ग्रंथ अध्ययन के लिये प्रेरणादायी तथा उपयोगी है।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

गुण अनुरागी गौतम में थी समर्पण भाव पराकाष्ठा

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

जैन जगत में इस अवसर्पिणी काल के 1452 में 1442 वें गणधर इन्द्रभूति नाम से नहीं, किन्तु गौतम नाम गौत्र से प्रसिद्ध हुए, जबकि गौतम नाम, नहीं गौत्र है। गौतम शब्द कुल और वंश का वाचक है। ऋग्वेद में गौतम के अनेक सुक्त मिलते हैं। इस नाम से कई ऋषि भी हुए। गौतम शब्द का पहला अक्षर 'गौ' का अर्थ गाय, जो कामधेनु का प्रतीक है। दूसरा अक्षर 'त' का तात्पर्य तरू, जो कल्पतरू का प्रतीक है। तीसरा अक्षर 'म' का मतलब मणि, जो चिंतामणी का प्रतीक है।

गौतम स्वामी ज्ञान और तप में सर्वोत्कृष्ठ थे। सर्वोच्च लब्धियाँ प्राप्त होने के बावजूद भी वे अभिमान के अक्खड़ नहीं थे। नजर में तुच्छता नहीं थी, वाणी में अभिमान का थोड़ा भी रणकार नहीं था। मैं कुछ नहीं जानता ऐसी रेशम की डोर में वाणी, विचार और व्यवहार गुंथे हुए थे। गौतम स्वामी के केवल्यसिद्ध हाथों से सभी दीक्षा ग्रहणकर्ता केवल ज्ञानी हुए और आपके पचास शिष्यों में से सभी उसी भव में मोक्ष गये । अनेक लब्धियों के धनी होते हुए भी सूर्यकिरणों के आलम्बन से अष्टापद तीर्थ की यात्रा तथा दीक्षित तापसों को अंगुष्ठ लब्धि से खीरदान की मात्र दोनों लब्धियों का प्रयोग आपने अष्टापद पर्वत पर ही किया।

प्रभु तक पहुँचने का मार्ग केवल और केवल श्रद्धा था। प्रभु से दूर हटने का संशय उन्मार्ग है। संशय के पथ से प्रभु तक पहुँचे गौतम स्वामी प्रभु से लड़े तो सम्यग्दर्शन पर गये और प्रभु के पीछे रोये तो केवल ज्ञानी हो गये। इसी प्रकार मूर्तिमंत अहंकार अर्थात ब्राह्मण इन्द्रभूति एवं मूर्तिमंत विनय अर्थात गणधर गौतम स्वामी एक दूसरे के विरुद्ध गुण लेकिन दोनों की पराकाष्ठाओं पर आरूढ़ होने में कहीं कोई चूक नहीं की।

गौतम स्वामी चार-चार ज्ञान के मालिक, पचास हजार केवली के द्वांदशांगी रचयिता, भगवान महावीर के प्रथम गणधर, फिर भी सरलता, निर्दोषता और समर्पितता के धनी गौतम को भगवान ने कई बार प्रमाद न करने को कहा, फिर भी वे किंचित भी दुःखी नहीं हुए। प्रभु पाट के वारस, शासन सम्राट एवं स्थापनाचार्य के हकदार होते हुए भी पद के लिये मान्य नहीं करने पर भी मौन रहे। उनका हक छीनकर छोटे गणधर सुधर्मा स्वामी को दे दिया, तब भी गौतम स्वामी ने भार मुक्त करने की भावना भाकर प्रभु का उपकार माना।

श्रेणिक राजा ने जब भगवान महावीर स्वामी से सर्वश्रेष्ठ शिष्य साधक कौन है

? पूछा, तो उन्होंने बिना विलम्ब किये धन्ना अणगार को उत्कृष्ठ साधक बताया। इस तरह गौतम स्वामी ने स्वयं को महत्वपूर्ण पद से वंचित करने भी, कीमत का अंकन कम करने को लेकर मन में किसी भी प्रकार की भावना नहीं जागने दी, इसके स्थान पर अंतर में आनंद-गुणानुरागता का झरना बहता रहा। वस्तुतः गुणोंः के प्रति अनुराग के साथ समर्पण भाव की पराकाष्ठा का सर्वोत्तम प्रेरणादायी उदाहरण है, यह प्रसंग। बुद्धि द्वारा जिनका अहंकार रूपी अंधकार नष्ट हो गया है वे हैं- गौतम ! यह व्युत्पत्तिजन्य अर्थ अभिधान राजेन्द्र कोष में श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी ने किया है।

जैन शब्दावली

विवक्षित की है	:	विवरण किया है, कही है बतायी है ।
सामान्य रूपरेखा	:	ऊपर-ऊपर से संक्षेप में समझाना।
उपन्नेई वा	:	सभी पदार्थ उत्पन्न होने वाला है ।
धुरेई वा	:	सब पदार्थ ध्रुव स्थिर, नित्य रहने वाले हैं ।
विगमेई वा	:	नष्ट होने वाले हैं ।
व्यय	:	विनाश
प्रयत्नशील	:	बहुत कोशिश करता है
ध्रुव	:	स्थिर, नित्य
कड़ा	:	हाथ में पहनने का एक गहना
कुंडल	:	कान में पहनने का एक जेवर
दृष्टान्त	:	उदाहरण, मिसाल
व्यवस्था	:	प्रबन्ध, सुविधा
इष्ट कड़ा- पर्याय का	:	मनपसंद सोने के कड़े का रूप
इष्ट कुंडल पर्याय	:	मनपसंद सोने के कुंडल का रूप
उदासीन	:	तटस्थ
गोरस	:	गाय के दूध से बनी चीजें ।
अगोरस	:	गाय के दूध में से न बनी हुई चीजें जिन चीजों में गाय से प्राप्त दूध मलाई, दही, मक्खन, घी आदि कुछ न हो ।
शमन हो जाता है	:	शान्त हो जाता है ।
सूक्ष्म दृष्टि	:	झीनी (पैनी) दृष्टि
दर्शन शास्त्री	:	धर्माचार्या अन्य धर्मों के दार्शनिक

पूर्व पर सोचो

(पूर्वा जैन 'जो बटकर')

इस पल का किया हुआ अगले क्षण फल दे देता है। कोई जन्म से गरीब या अमीर होता है यह अलग बात है कि अच्छे कर्म करके गरीबी को मिटा डाले। तुम पैसों से अमीर नहीं हो सकते हो किन्तु सोच और विचारों से गरीब ही रहोगे। यही तो कर्म फल सिद्धांत कहता है। सब पाकर भी गंवा देना, कुछ गवा कर पा लेना यह अपने कर्मों पर निर्भर करता है। मानसिक अथवा शारीरिक वेदना भी पूर्व भव के कर्मों पर निर्भर करती है। यह कर्म क्या होते हैं ? इस शब्द की उत्पत्ति ही रमने से हुई है। जो भी तुम करो उसमें इतना रम जाओ वह कर्म हो जाये। धर्मग्रंथ, शास्त्र, उपन्यास को उठाकर कभी पढ़ोगे तो यही पाओगे कि कर्म करता चल फल की इच्छा मत रख तथा किसी भी योजन से अपने इस भव को सुधार लो। कर्म रूपी फल के बीज को बो दो, और अगले जन्म में उसी पल का आनंद लो। मक्का का एक दाना बोकर हम असंख्य दाने प्राप्त कर सकते हैं। सोचो साहब सोचो पूर्व भव में उचित कर्मों के कारण ही आपको जैन धर्म में जन्म मिला है। सोचो आपने कितने महान कर्म किये होंगे? अरे ! आपको मनुष्य, गुरु , देव और धर्म मिला, अब किसकी बाट जोते हो? भव को पार लगाने वाले गुरुदेव हमारे तारणहार हैं। कछुआ अपने बच्चों को स्वयं अपने पास रखकर नहीं पालता, वह उन्हें दूसरे किनारे पर छोड़ आता है, और वापस इस किनारे आकर अपनी ममता भरी नजरों से उन्हें सेता है। ठीक ऐसे ही सद्गुरु हम पर नजर बनाये हुए हैं, बीती ताही बिसार दे। अब आगे की सोच और इस भव को सुधार! आत्मीय भाव से जीव जीओ, निर्भय होकर जीवन जीओ, यह जीवन आपका है इसे मृत्यु उत्सव में बदल डालो। इसे ही अपने जीवन का लक्ष्य रखो। भव-भव शासन श्री गुरुवर तमारू, भय-भव में रहे ना प्रभु मोहे अब उबारो !!!

जैन पद्धति अनुसार सुबह कैसे उठना ?

1. सर्वप्रथम हाथों के दर्शन करना । चन्द्रमा रूपी सिद्धशिला के ऊपर विराजमान 24 तीर्थंकर की कल्पना कर उन्हें नमस्कार करना ।
2. परमात्मा की तरह हमारे भी कर्म क्षय (खत्म) हों, इस भावना से 9 नवकार मन्त्र गिनना ।

आलू के चिप्स और सूंठ

(चन्द्रप्रकाश छाजेड़, बाड़मेर)

सवाल - आलू, प्याज, लहसुन, गाजर, शलगम, सूरण जैसे जमीकंद (कंदमूल) खाने का निषेध क्यों है ?

जवाब- अपना धर्म परमात्मा महावीर के विशिष्ट केवल ज्ञान की ज्योति से झिलमिला रहा है। विज्ञान के शोधों से भी कहीं आगे है हमारे जैन धर्म के शास्त्र । जैन धर्म का जीवविज्ञान खूब विशाल है। जैन धर्म कहता हैं कि आलू वगैरह ऊपर बताए हुए कंदमूल अनंतकाय हैं। अनंतकाय यानी एक ही शरीर में अनंता जीवों का वास। सिर्फ सुई की नोक जितने आलू में अनंत जीव होते हैं। ऐसे कंदमूल खाने का अर्थ है- इन सभी जीवों का नाश। मात्र जीभ के स्वाद के लिए अनंत जीवों को कुचल डालना, जरा भी उचित नहीं ।

खाने के लिए जीना नहीं, जीने के लिए खाना है। सिर्फ जैनों में ही नहीं, बल्कि दूसरे धर्म के शास्त्रों में भी कंदमूल भक्षण को महापाप बताया गया है।

अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी समझते हैं- विज्ञान कहता है कि जहाँ अंधेरा होता है वहाँ भरपूर जीव होते हैं। अभेराई (सवजि), कोठरी, जमीन के नीचे भरे हुए पानी में, ऐसे स्थानों पर अनेक छोटे-छोटे सूक्ष्म जीव होते हैं। जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता, वहाँ ऐसे अनंत जीव होते हैं।

हम जानते हैं कि ये सारे कंदमूल जमीन के नीचे उगते हैं। जमीन के नीचे हैं यानि सूर्य का प्रकाश वहाँ पहुँचता नहीं।

सवाल - मूँगफली भी जमीन के नीचे ही उगती है, फिर मूँगफली या उसका तेल हम कैसे खा सकते हैं ?

जवाब- मूँगफली जमीन के नीचे ही उगती है, ये ठीक बात है। परन्तु मूँगफली में तेल की प्रचुर मात्रा होने के कारण उसमें जीव पैदा हो नहीं सकते।

बल्कि दालें बिगड़े नहीं इसलिए बहनें उस पर तेल चुपड़ कर रखती हैं, क्योंकि तेल के कारण जीव उत्पन्न नहीं होते और दालें बिगड़ती नहीं ।

तेल जीवों की उत्पत्ति होने से रोकता है। मूँगफली में तो कुदरती रूप से तेल है। इसलिए मूँगफली और उसका तेल हम प्रयोग कर सकते हैं।

आलू आदि में तेल नहीं रस है, जो जीवों की उत्पत्ति को रोक नहीं सकता इसलिए हम आलू, लहसुन आदि का प्रयोग नहीं कर सकते।

जवाब- अदरक प्रयोग नहीं कर

सकते पर सूंठ कर सकते हैं, ऐसा क्यों ?

जवाब– अदरक, हल्दी ये सब भी जमीन के नीचे ही उगती हैं। कंदमूल = अनंतकाय के लक्षण उसमें भी हैं, फिर भी अदरक, हल्दी सुखाकर तैयार सूंठ व हल्दी का हम प्रयोग कर सकते हैं।

परमात्मा करूणा के भंडार हैं। उन्होंने हमारी आत्मा के साथ हमारे शरीर की भी चिन्ता की है। उबाला हुआ पानी , रात्रिभोजन त्याग, वगैरह में भी जैसे आत्मा के साथ हमारे शरीर के आरोग्य की बात जुड़ी हुई है वैसे ही सूंठ, हल्दी के प्रयोग में भी शरीर के आरोग्य की बात जुड़ी हुई है।

रसोईघर में प्रयोग होने वाले अनेक मसाले औषधि समान हैं। काली मिर्च, अजवाइन, सूंठ, पिंपरिमूल, हल्दी वगैरह मसाले अनेकों रोगों को पनपने से रोकते हैं, और रोग हो गया हो तो उसे मिटाते भी हैं।

कुदरती रूप से सूखी हुई सूंठ, हल्दी वगैरह में पूर्व में रहे हुए अनंताजीव अपनी आयुष्य पूर्ण करके, दूसरे भवों में चले गए होने से उसकी जीवहिंसा का पाप हमें नहीं लगता।

सवाल – जो सुखाई हुई अदरक हम सूंठ के रूप में खा सकते हैं, तो आलू की चिप्स सुखाकर उसे भी खा सकते हैं ना ?

जवाब– जैन धर्म में इस बात पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करके 'ना' कहा गया है। कोई भी जीव हिंसा हमें करनी नहीं है। सूंठ कुदरती रूप से सूखता है, मगर आलू कुदरती रूप से नहीं सूखता । चींटियों को कोमल पूंजनी से जयणापूर्वक सूपड़ी में लेकर बाहर किसी पेड़ के नीचे ठंडक में रखो, तो भी हिंसा कहलाती है, क्योंकि चींटियां वहाँ अपना घर ढूंढेगी, पर मिलेगा नहीं जिससे वे शायद मर जाएं । पाँचवें इरियावही सूत्र में ठाणा ओ ठाणं शंकामीया पद द्वारा ऐसी हिंसा की गिनती की गई है। उसके बदले जो अगर हम उन चींटियों के आसपास कपूर, ब्रास या राख डाल दें तो वे अपने आप वहाँ से चली जाएगी। ऐसे उनकी जयणा होती है। हमें सूठ की आरोग्य शरीर के लिए जरूरत है, आलू के चिप्स की नहीं।

सूंठ की जरूरत बहुत कम मात्रा में है। उसको मुट्ठी भर के फांक नहीं सकते। उसे स्वाद के लिए नहीं खाया जाता। अदरक कुदरती रूप से सूखता है जबकि आलू खुद से सूखकर चिप्स नहीं बन जाता।

सूंठ से पेट नहीं भरता और आसक्ति भी नहीं होती। जबकि आलू की चिप्स तो हम स्वाद के लिए ही खाते हैं। इसलिए आलू की चिप्स नहीं खाना चाहिये।अनासक्ति नामक गुण की रक्षा के लिए भी इसकी मनाही है। इसलिए सूंठ का उपयोग कर सकते हैं पर आलू के चिप्स नहीं खा सकते। भूतकाल में खाई हो तो भी 'जब जागो तब सवेरा' समझकर आज से ही कंदमूल त्यागकर सच्चे श्रावक-श्राविका बनें ।

(स्थूलिभद्र संदेश)

जिन शासन की शान

जिनशासन की थे वो शान
हम सबके थे वो भगवान
हर विषय के थे विद्वान
युगपुरुष थे वो ऐसे महान
शांत स्वभाव वाणी थी सुमधुर
उपनाम मिला इसलिए 'मधुकर'
उनका हर स्वरूप था विराट
कहलाये वो पुण्य सम्राट
राष्ट्रसंत की मिली उपाधि
भक्तों की मिटायी हर व्याधि
कई सद्साहित्य का किया सृजन
गुरुदेव के हर बोल थे अनमोल वचन
अनेक भव्यात्माओं को दिलवायी दीक्षा
श्रावकों ने ली उनसे आध्यात्मिक शिक्षा
नवकार मंत्र आराधना को मिली पावन निष्ठा
कई जिनमंदिरों की करवायी प्राण प्रतिष्ठा
कितने संघ और कितने ही तप
गुरुदेव के नाम हैं अनगिनत जप
गुरुदेव की प्रभावकता थी ऐसी अपार
लोकसंत में बसता था जैसे सारा संसार
साधना पुरुष, साहित्य पुरुष, प्रतिष्ठा पुरुष,
सिंह पुरुष, विहार पुरुष, करुणा पुरुष
ऐसे थे उनके छत्तीस उपनाम
कोई नहीं छू सकता उन जैसा मुकाम

एक ही था लक्ष्य- जिनशासन रहे जयवंत
गुरुदेव की महिमा थी अद्भुत और अनंत
भांडवपुर में हुआ जब महाप्रयाण
लगा जैसे निकले हम सबके प्राण
वो दिन ना भूल पाएँगे हम
पुण्य सम्राट की थी वो पुण्य सातम
चारों ओर छा गया था गम
हजारों आँखें हुई थीं नम
संयम जीवन का ओड़े वेश
धर्ममार्ग का दे गए उपदेश
अनंत गुणों का करके समावेश
आत्मकल्याण का दे गए संदेश
गुररुदेव बसे हैं कण-कण में
गुरुदेव साथ है हर क्षण में
हम सब पर आज भी है उनका हाथ
गुरु रहना सदा तुम हमारे ही साथ
गुरुदेव, आज यही है अंतर्नाद
बनाए रखना हम पर आशीर्वाद
आपको शत्-शत् नमन बारम्बार
मेरे गुरुवर की सदा रहे जय-जयकार

- संगीता तल्लेरा
2, शिवाजी पार्क कॉलोनी,
देवास रोड़, उज्जैन

पुण्य सम्राट की जयकार

धन्य है पेपराल नगरी को,
जन्में मगसर बदी तेरस को,
लिया जयंतसेन सूरी अवतार,
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (1)
स्वरूप धरू कुल के उजियारे,
माता पार्वती के पूनम प्यारे,
किया सबने मिलकर जयकार
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (2)
गुरु यतिंद्र से 'जयंत' कहाये,
परिषद व शाश्वत धर्म को पाये,
करने सत्य धर्म प्रचार
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (3)
गुरु जयंत कि सियाणा दीक्षा,
नवकार आराधना की शिक्षा,
करते प्रचार महामन्त्र नवकार,
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (4)
आचार्य पदवी भांडवपुर पाये,
'राष्ट्रसंत', जावरा कहलाए,
त्रिस्तुतिक संघ प्रगति चिंतक,
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (5)
राजस्थान, गुजरात, मालवा,
दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटका,
दक्षिण प्रांतों में धर्म प्रचार,
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (6)
मालवा को हृदय में बसायें,
अन्तिम चातुर्मास 'रतलाम' कहाये,
कराए ऐतिहासिक 'आत्मोद्धार',
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (7)
सम्पूर्ण जीवन की साधना सारी,
भांडवपुर तीर्थ में लीनी समाधी,
कहाये मधुकर 'पुण्य सम्राट'
बोलो पुण्य सम्राट की जयकार (8)

– निलेश लोढ़ा

सहसचिव नवयुवक परिषद, रतलाम

* स्वतंत्र बनो पर स्वच्छंद नहीं, चतुर बनो पर कुटिल नहीं।
* क्षमाशील बनो, पर भयभीत नहीं, नम्र बनो पर चापलूस नहीं।
* सहनशील बनो पर कायर नहीं, बलवान बनो पर कमजोरों पर हावी नहीं।
* समालोचक बनो, पर निंदक नहीं। जो देखे परदोष वह कैसे पावे निज कोष।
* स्पष्ट हो पर उद्दड नहीं, खरे हो पर खारे नहीं।
* जिगर पर हो गुस्सा नहीं, हिम्मत हो पर हठ नहीं।

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અદીન રહો

"અદીણમણસો ચરે ।"

(અદીન ભાવથી રહો.)

વિનય ગુણ છે પણ દીનતા દોષ છે. વિનીત વિવેકશીલ હોય છે. તે પોતાનાથી વધારે જ્ઞાની પાસે હંમેશા નમ્ર રહે છે. જેથી તેમની પાસેથી જ્ઞાનનો લાભ મેળવી શકે. વિનયીની સામે ગુરુ પોતાનું હૃદય ખુલ્લુ મૂકી દે છે. તેને વિશ્વાસ રહે છે કે મારો શિષ્ય જ્ઞાન મેળવીને પણ મારા તરફ નમ્ર બની રહેશે અને જીવનપર્યંત મારો ઉપકાર માનતો રહેશે, મારી સેવા કરતો રહેશે અને મારું નામ ઉજ્જવળ કરતો રહેશે.

આથી ઊલટું દીન શિષ્ય અવિવેકી હોય છે. તે પોતાને હંમેશા તુચ્છ સમજે છે. હીન મનોવૃત્તિનો શિકાર હોવાને કારણે તે ઉન્નતિ અથવા પ્રગતિની આશા જ છોડી બેસે છે. ગુરુ તેને પ્રેમપૂર્વક શીખવવા ચાહે તો પણ શીખતો નથી. તે ખૂબ આળસુ હોય છે. પોતાને માટે તથા બીજાઓને માટે પણ તેનું જીવન ભારરૂપ હોય છે. દીન વ્યક્તિ માર કે ઠપકો પણ સહી શકતો નથી. વારંવાર ભૂલ કરવા છતાં તે લજ્જા પામતો નથી. "હું કાંઈ નથી કરી શકતો !" એ જ વિચાર એના મન ઉપર સવાર થયેલો હોય છે.

એટલા માટે જ્ઞાની કહે છે કે જો, તમારે ઉન્નતિ કરવી હોય તો હંમેશા અદીનભાવથી રહો.

ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૨/૩

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ - આચાર્ય ભગવંત સપરિવારનો અમદાવાદ રાજનગરે ધમાકેદાર નગર પ્રવેશ

પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે અમદાવાદના ઈતિહાસમાં વિક્રમ સર્જક ૧૯ મુમુક્ષુરત્નોને આત્મોદ્ધાર-સામુહિક દીક્ષાનું દાન આપવા અમદાવાદ રાજનગરે ધમાકેદાર ભવ્ય સામૈયા સાથે નગર પ્રવેશ કર્યો હતો.

શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના આંગણે પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો અને ૧૦૦થી અધિક શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની તા. ૧૯-૫-૨૦૧૯ના રોજ પાવન પધરામણી થતાં થરાદવાસીઓમાં હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી અને આનંદની અમીવર્ષા થઈ ગઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીઓની નિશ્રામાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરી જ્ઞાનમંદિર, હાથીખાના અમદાવાદ ખાતેથી જયજયકારના નારા સાથે વાજતે-ગાજતે શોભાયાત્રાએ પ્રારંભ કર્યો હતો. આ શોભાયાત્રામાં શણગારેલી બગીઓ, બેન્ડ, ઢોલ, વિવિધ નૃત્યમંડળીઓ, વાધમંડળીઓ, ઘોડા, રથ વિગેરે આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. હાથીખાનાથી પ્રારંભાયેલ આ શોભાયાત્રા રાજનગરના મુખ્ય માર્ગો પર ફરી સરદાર પટેલ સેવા સમાજ હોલ ખાતે પહોંચી હતી. ત્યાં આ શોભાયાત્રા ધર્મસભારૂપમાં પરિવર્તીત થઈ હતી. ગચ્છાધિપતિશ્રીએ તેમના મુખકમળ દ્વારા માંગલિક સંભળાવ્યું હતું. ત્યારબાદ તા. ૨૨મેના રોજ નીકળનાર વરસીદાનના વરઘોડાના ચડાવા બોલાયા હતા.

વરસીદાનનો વરઘોડો (વિરાટ શોભાયાત્રા)

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્નવિજયજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૨૨-૫-૨૦૧૯ના રોજ વરસીદાનના વરઘોડાએ વહેલી સવારે પાલડી સ્થિત ગુરુમંદિરથી મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું.

આ વરઘોડો ૨ થી ૩ કિ.મી. ચાલવાનો હતો. ઈતિહાસ સર્જક આ ઐતિહાસિક આત્મોદ્ધાર સામુહિક મુમુક્ષુરત્નોના વરસીદાનના વરઘોડા (વિરાટ શોભાયાત્રા)માં હૈયે હૈયું દબાય તેટલો માનવ મહેરામણ ઉમટી પડ્યો હતો. શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત આ વરઘોડા દરમ્યાન સિંહસ્થ મેળા જેવું વાતાવરણ થઈ ગયું હતું. આ અલબેલા પ્રસંગને દીપાવવા દીક્ષાર્થી પરિવારના સભ્યો અને દરેક રાજ્યોમાંથી તથા અમદાવાદ સહિત આઠ થી દસ હજાર ભક્તો ઉમટી પડ્યા હતા.

આ વિરાટ શોભાયાત્રામાં પ્રભુ મહાવીર, દાદાગુરુદેવ શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્રસૂરિ અને પુણ્ય સમ્રાટનો નાદ ગુંજતો હતો. આ પ્રસંગ નિમિત્તે પાલડી મીઠાખળી, ખાનપુર અમદાવાદના કેટલાય વિસ્તારોને અદ્ભૂત રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. આ વિરાટ શોભાયાત્રામાં હાથી, ઘોડા, બગીઓ, બેન્ડ, ઢોલ, નૃત્ય મંડળીઓ અત્યંત આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા. અવનવા વસ્ત્રોમાં સજ્જ પુરુષો અને રંગબેરંગી સાડીઓમાં સજ્જ સન્નારીઓએ પણ અદકેરું આકર્ષણ જમાવ્યું હતું.

આ વિરાટ શોભાયાત્રામાં ગુજરાત સહિત રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, વિગેરે સ્થળોએથી ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સંઘ અને પરિષદના સભ્યો સહિત સમાજજનો સંગીતના સૂરે રાજનગર-અમદાવાદના મુખ્ય માર્ગો પર મન મૂકીને નાચી રહ્યા હતા. આ સમયે વાતાવરણ એક તરફી મહાવીર શાસનમય બની ગયું હતું.

સમાજની મહાન હસ્તીઓને મુક્તપણે નાચતી નિહાળી ઉપસ્થિત હજ્જારો જૈન-અજૈન લોકો આનંદિત બની ગયા હતા. અમદાવાદના પાલડી, મીઠાખળી વગેરે સ્થળોએ ફરીને આવેલ શોભાયાત્રા વલ્લભ સદન, રીવરફ્રન્ટ ખાતે ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તીત થઈ હતી. હજ્જારો ગુરૂભક્તો જ્યાં જગ્યા મળે ત્યાં ગોઠવાઈ ગયા હતા. વિરાટ મંડપ ખીચોખીચ ભરાઈ ગયો હતો. ત્યાં પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક સંભળાવ્યું હતું અને વક્તાઓએ તેમનું વક્તવ્ય રજુ કર્યું હતું.

શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતાને વધાવવાનો અને સત્કારવાનો ઐતિહાસિક કાર્યક્રમ અવિસ્મરણીય નહીં પણ ચિરસ્મરણીય બની રહેશે

આત્મોદ્ધાર-૩ સામુહિક દીક્ષા દરમ્યાન શ્રી સૌધર્મ બૃહદતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ (થરાદ) અમદાવાદ ઉપર શાસનદેવની અસીમકૃપા તપોનિષ્ઠા યોગીન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃસ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. - પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભાશુભ આશિર્વાદ વરસી રહ્યા છે.

શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના તત્વાધાનમાં પાંચ દિવસીય મહોત્સવ સાથે તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના મંગલમય દિવસે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૩ સામૂહિક દીક્ષાને મળેલ અદ્‌ભૂત સફળતા અનુમોદનીય બની હતી. પણ જ્યારે માત્ર ત્રિસ્તુતિક સમુદાય જ નહીં પણ સમસ્ત જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયના ૨૫૦થી અધિક શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા અથવા પરિવારના વડીલોને વધાવવાનો અને સત્કારવાનો અનંતપુણ્ય ઉપાર્જન કરતો હૈયેહૈયું દબાય તેવી ભક્તમેદનીની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે રીવરફ્રન્ટ અમદાવાદ ખાતે કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો ત્યારે મહોત્સવ દરમ્યાન યોજાયેલા સમસ્ત કાર્યક્રમોમાં આ ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ દીપી ઉઠ્યો હતો. શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના ઈતિહાસમાં શાસન પ્રભાવનામાં અભિવૃદ્ધિ કરતા આ કાર્યક્રમ દરમ્યાન જિન શાસન અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયનો જયજયકાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો.

વિરલ વીરભૂમિ થરાદનગરની ધન્ય ધરાના પનોતા પુત્રરત્ન, ગચ્છશિરોમણી, તીર્થ પ્રભાવક, ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, થરાદવાસીઓના હૃદય સમ્રાટ, રાષ્ટ્રસંત, લોકસંત સ્વર્ગસ્થ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના નામ અને કામ સાથે સંકળાયેલા દરેક કાર્યો ઐતિહાસિક બની રહે છે. પુણ્ય સમ્રાટના સમુદાયના લગભગ ૨૫૦ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા અથવા પરિવારના વડીલોને વધાવવાનો અને સત્કારવાનો જે અદ્‌ભૂત કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો તે માત્ર અમદાવાદ જ નહીં પણ સમસ્ત થરાદવાસીઓની પુણ્યાઇનું જબરજસ્ત જમા પાસું છે. આ ઐતિહાસિક પ્રસંગ અવિસ્મરણીય નહીં પણ ચિરસ્મરણીય બની રહેશે.

રાજનગર-અમદાવાદ ખાતે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૩ દરમ્યાન ભવ્ય-દિવ્ય મંગલકારી શાસન પ્રભાવક અનુષ્ઠાન

રત્નત્રયી ઉપકરણ ઉજમણું...!

માર્ગ ભુલાવે એને પ્રદર્શન કહેવાય, માર્ગ બતાવે એને ઉમજાણું કહેવાય ! પ્રદર્શન ડૂબાડે... ઉજમણું પાર લગાવે ! પાપના સાધનોને અધિકરણ કહેવાય.. ધર્મના સાધનોને ઉપકરણ કહેવાય ! તત્વાર્થની શરૂઆતમાં દર્શન-જ્ઞાન-ચરિત્ર સ્વરૂપ મોક્ષમાર્ગનું સ્વરૂપ બતાવ્યું છે. આ ત્રણને રત્નત્રયી કહેવાય છે ! રત્નત્રયી મોક્ષમાર્ગની આરાધનામાં ઉપયોગી ઉપકરણના દર્શન કરવાથી અને આરાધકને ઉપકરણ અર્પણ કરવાથી આરાધનાના અંતરાયો દૂર થાય છે અને અષ્ટકર્મથી મુક્તિનો અવસર પ્રાપ્ત થાય છે.

રાજનગર-અમદાવાદ ખાતે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૩ દરમ્યાન શ્રી સૌધર્મ બૃહદતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ (થરાદ) અમદાવાદના તત્વાધાનમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ સંખ્યામાં શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં થરાદ નિવાસી વોહેરા કંચનબેન રસિકલાલ કાળીદાસ (આર.કે.)ના આત્મશ્રેયાર્થે વોહેરા કાળીદાસ ત્રિકમચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા તા. ૧૯/૨૦ મે- ૨૦૧૯ના રોજ દરમ્યાન લાયન્સ હોલ, મીઠાખળી, અમદાવાદ ખાતે ભવ્યાતિભવ્ય રત્નત્રયી ઉપકરણ ઉજમણાનું આયોજન કરાયું હતું.... આ છે આત્મોદ્ધારક ઉજમાણું... ઉચ્ચ ગુણવત્તા યુક્ત દર્શન-જ્ઞાન-ચરિત્રના ઉપકરણો જન સામાન્યમાં રત્નત્રયી સંસ્કાર સ્થાપન થાય તે માટે દર્શનાર્થે મુકવામાં આવનાર છે. દર્શનના ઉપકરણ રાજનગર-અમદાવાદના વિવિધ જિનાલયમાં અર્પણ કરવામાં આવનાર છે. જે ઉપકરણો હજારો ભક્તોની ભક્તિમાં સહાયક બનશે. પ્રભુભક્તિ સમ્યગ્‌દર્શન પ્રાપ્તિનું આલંબન છે. જ્ઞાનના ઉપકરણો શ્રીસંઘની સાત પાઠશાળામાં અર્પણ કરાશે. પાઠશાળામાં જ્ઞાન સાધના કરાય છે જેથી હજારો બાળક જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી સન્માર્ગને સમર્પિત બનશે ? ચારિત્રમાં ઉપકરણો ૨૦૦થી અધિક શ્રાવકોને ભેટ આપવામાં આવનાર છે. જેના નિત્ય દર્શન કરવાથી ચારિત્રના ભાવો ઉત્પન્ન થશે અને એમના મનોરથ સાકાર થશે અને ખપ હશે ત્યારે નિર્દોષ ઉપકરણોથી

ગુરૂભગવંતોની ભક્તિનો લાભ પ્રાપ્ત થશે. શુદ્ધ શાસ્ત્રોક્ત વિધિ અનુસારનું આ ભવ્ય ઉજમણું ૧૯ નૂતન દિક્ષાર્થીઓના સંયમ જીવન માટે શુકનવંતુ બની રહેશે.

પાપના અધિકરણોનું પ્રદર્શન કરી અનાદિ સંસારમાં ડૂબેલા મોટી સંખ્યામાં શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ આત્મ કલ્યાણ માટે રત્નત્રયીના ઉપકરણોના દર્શન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

અમદાવાદ પરિષદની નેત્રદિપક કામગીરી

શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ (થરાદ) અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત અમદાવાદ ખાતે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૩ને અત્યંત સફળતા અપાવવા શ્રી સંઘની આજ્ઞાથી શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા અમદાવાદના અધ્યક્ષ શ્રી ભરતભાઈ હીરાલાલ વોહેરા (લાડુ)ના નેતૃત્વ હેઠળ પરિષદના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોએ છેલ્લા બે માસથી તડામાર તૈયારીઓ આદરી દીધી હતી.

શોત્રાયાત્રામાં શિસ્તબદ્ધ આયોજન, આત્મોદ્ધાર-૩ની આમંત્રણ પત્રિકા દરેક દેરાસરો - ઉપાશ્રયો તેમજ અમદાવાદ ખાતે જેટલા ત્રિસ્તુતિક સંઘના પરિવારો વસવાટ કરે છે ત્યાં ડોર ટુ ડોર જઈ આમંત્રણ પત્રિકા દ્વારા આમંત્રણ અને લાડુની પ્રભાવના જેવા વિવિધ કાર્યો સવારના ૮ થી રાત્રિના ૧૨ કલાક સુધી કરી. અમદાવાદ ખાતે યોજાયેલ પ્રથમ આત્મોદ્ધાર-૩ને અત્યંત સફળતા અપાવવામાં સિંહફાળો નોંધાવનાર અમદાવાદ પરિષદની આ નેત્રદિપક કામગીરીની ભુરી ભુરી અનુમોદના કરી સમસ્ત સમાજ અભિનંદી રહ્યો છે. અમદાવાદ પરિષદના દરેક સભ્યોમાં જાગૃતિનો સંચાર થયો છે. અમદાવાદ પરિષદની યુવા ટીમ એટલી સક્રિય અને સશક્ત છે કે કોઈપણ કાર્ય તેમના માટે અઘરૂં નથી એવું દેખાઈ રહ્યું છે. શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તેમજ શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા અને અમદાવાદ પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી ભરતભાઈ (લાડુ)ના નેતૃત્વ હેઠળ ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઈતિહાસમાં પ્રથમવાર પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયના લગભગ ૨૫૦ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા અથવા વડીલોને વધાવવાનો અને સત્કારવાનો જે અદ્‌ભૂત કાર્યક્રમ સંપન્ન તયો તે માત્ર અમદાવાદ જ નહીં પણ સમસ્ત થરાદવાસીઓની પુણ્યાઈનું જબરજસ્ત જમા પાસું છે.

રાજનગર-અમદાવાદના રીવરફ્રન્ટ ખાતે રચાયેલ વૈરાગ્ય નગરીના માંડવે આત્મોદ્ધાર-૩ ૧૯ મુમુક્ષુરત્નોએ સામુહિક દીક્ષા અંગિકાર કરી સ્થાપ્યો નવો ઈતિહાસ

સંવત ૨૦૭૫ના વૈશાખ વદ-૫ને ગુરૂવાર તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ પરમ પારમેશ્વરી આજ્ઞાને આત્મસાત કરવા અધીરા બનેલા ૧૯ મુમુક્ષુરત્નોએ એક સાથે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના વરદ્‌હસ્તે રાજનગર - અમદાવાદના વલ્લભસદન, રીવરફ્રન્ટ ખાતે શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના ઈતિહાસમાં સર્વ પ્રથમવાર સામુહિક ૧૯ મુમુક્ષુરત્નોએ દીક્ષા અંગિકાર કરી એક નવો ઈતિહાસ સ્થાપિત કર્યો હતો.

રાજનગર- અમદાવાદના વલ્લભ સદન, રીવરફ્રન્ટ ખાતે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર મહોત્સવ દરમ્યાન તા. ૨૧-૫-૨૦૧૯ને મંગળવારના રોજ પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં ઉમટી પડેલ વિશાળ સંખ્યામાં શ્રદ્ધાવંત ગુરૂભક્તોની હોંશિલી હાજરીમાં સાંજે ૭-૩૦ કલાકથી પુણ્ય સમ્રાટ સમુદાયના ૨૫૦થી અધિક શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના માતા-પિતા અથવા વડીલોને વધાવવાનો અને સત્કારવાનો કાર્યક્રમ અને તા. ૨૨-૫-૨૦૧૯ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય વરસીદાનનો વરઘોડો નીકળ્યો હતો. પૂજ્યશ્રીઓનો પ્રવેશ તથા ઉક્ત બંને કાર્યક્રમોએ અદકેરૂં આકર્ષણ જમાવ્યું હતું. અમદાવાદ નગર જૈનનગરી જેવી શોભાયમાન બની ગઈ હતી અને શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદમાં ચોથો આરો વર્તાઇ રહ્યો હોય તેવું વાતાવરણ સર્જાઇ ગયું હતું. આત્મોદ્ધાર મહોત્સવના પાંચેય દિવસના ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમો યોજાયા હતા.

આજે આત્મોદ્ધાર-૩, વલ્લભસદન, રીવરફ્રન્ટ, આશ્રમ રોડ, રાજનગર-અમદાવાદની ધર્મધરા પર ૧૯-૧૯ મુમુક્ષુરત્નો સંસારની મોહમાયાને ત્યજી દઈ આધ્યાત્મિક શિખરો સર કરવા જઈ રહ્યા છે. બંને આચાર્ય ભગવંતોના આદેશાનુસાર સવારે-૪ કલાકે ઓગણીસે દીક્ષાર્થીઓ રીવરફ્રન્ટ ખાતે રચાયેલ વૈરાગ્ય નગરીના માંડવે આવી પહોંચ્યા હતા. વૈરાગ્યનગરીમાં પહોંચતા પહેલાં તમામ મુમુક્ષુરત્નોમાં અપૂર્વ ઉત્સાહ વર્તાતો હતો. મુમુક્ષુરત્નો અને તેમના પરિવારજનો સંગીતના સૂરો સાથે નાચતા ગાતા

દીક્ષા સ્થળ સુધી પહોંચી રહ્યા હતા. એક પછી એક મુમુક્ષુરત્નોના આગમનથી જબરજસ્ત આનંદ મંગલ વર્તાતો હતો. ચારેબાજુ ''દીક્ષાર્થીઅમર રહો''ના ગગનચુંબી નારાઓથી વાતાવરણ વધુ ઉત્સાહી બની ગયું હતું. ઓગણીસે મુમુક્ષુરત્નો આત્માના કલ્યાણ માટે પ્રભુ મહાવીરના શાસનમાં જોડાવા તથા પુણ્ય સમ્રાટ સમુદાયમાં સાધુ-સાધ્વીજીની સંખ્યામાં વૃદ્ધિ કરવા દીક્ષા અંગિકાર કરવા વૈરાગ્ય નગરીમાં આવી પહોંચતા જ હરખાઇ ઉઠેલા ભક્તોએ જયજયકાર જયજયકાર અને દીક્ષાર્થીઅમર રહોના નારાઓ પોકારી મંડપને ગજવી દીધો હતો.

આત્મોદ્ધાર મંડપમાં બેસી જઇ સમસ્ત સમાજના શ્રદ્ધાવંત ભક્તોએ ચારથી પાંચ કલાક સુધી ચાલેલ દીક્ષા વિધિ કાર્યક્રમને નિહાળ્યો હતો અને અનુમોદનીય વંદના કરી હતી.

શુભ મુહૂર્તમાં બંને આચાર્ય ભગવંતોએ દીક્ષા વિધિની શરૂઆત કરાવી હતી અને ક્રમવાર ઓગણીસે દીક્ષાર્થીઓને ઓઘો પ્રદાન કરાયો હતો. મુમુક્ષુ ઓગણીસે ભાઇ-બહેનો ઓઘો મેળવી ખુશીના માર્યા ઝૂમી ઉઠ્યા હતા અને નાચવા લાગ્યા હતા. હવે પછીનો સમય હતો સંસારી વાઘાને ત્યાગવાનો સમસ્ત દીક્ષાર્થીભાઇ-બહેનોને તેમના પરિવારજનો વસ્ત્રો બદલાવવા લઇ ગયા હતા.

દીક્ષા વિધિનો સમય થતાં બે કલાક પહેલાં સોળે શણગાર સજીને ઉભેલા મુમુક્ષુરત્નોએ સાપ જેવ તેના શરીર ઉપરથી કાંચળી ઉતારે તેમ સોળે શણગારને ત્યજી દઇને કેશલોચ કરાવી વૈરાગ્ય નગરીમાં સંયમના વસ્ત્રોમાં ૧૯ નૂતન સાધુ-સાધ્વીજી બની આવ્યા ત્યારે જિનશાસનનો જયજયકાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો. કેશલોચ વિધિનો પ્રારંભ થતાં મુમુક્ષુરત્નોનો સાધુ ભગવંતો દ્વારા અને મુમુક્ષુરત્નાઓનો સાધ્વીજી ભગવંતો દ્વારા કેશલોચ વિધિ સંપન્ન કરાઇ હતી, બંને આચાર્ય ભગવંતો સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ને ગુરુવારના રોજ પરમ પારમેશ્વરી આજ્ઞાને આત્મસાત કરવા અધીરા બનેલા દીક્ષાર્થીઆત્માઓએ અમદાવાદનગરના રીવર ફ્રન્ટ ખાતે રચાયેલા સંયમના માંડવે સંસારી વાઘા ત્યજી સંયમના વાઘા અંગિકાર કરી મોક્ષ માર્ગે જવા પુનિત પ્રયાણ કર્યું હતું. ઓગણીસે દીક્ષાર્થીઓએ બંને આર્ચા ભગવંતોના વરદ્ હસ્તે રજોહરણ ગ્રહણ કર્યા હતા. ત્યારબાદ નામકરણવિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

નૂતન સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નામાવલિ

સંસારી નામ	સંયમી નામ
શ્રી વિશેષભાઈ ભરતભાઈ બલ્લુ	મુનિ જંબુસેનવિજયજી મ.સા.
શ્રી સંયમ હસમુખભાઈ મોરખીયા	મુનિ સુધર્મસેનવિજયજી મ.સા.
મિલબેન ભરતભાઈ બલ્લુ	સા. મોહનિધિશ્રીજી મ.સા.
નિરાલીબેન હસમુખભાઈ ઘરૂ	સા. શ્રુતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સિલ્કીબેન મહેશભાઈ અંબાણી	સા. સુધાંતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
નિશીબેન દિનેશભાઈ દોશી	સા. નિર્મળપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
નિયતિબેન નરેન્દ્રભાઈ સંઘવી	સા. વંદનનિધિશ્રીજી મ.સા.
રોશનીબેન સૂરજમલજી રાંકા	સા. ધ્વજરેખાશ્રીજી મ.સા.
રિંકલબેન કીર્તિલાલ ઓઝા	સા. ધર્મરેખાશ્રીજી મ.સા.
મીનાબેન હસમુખભાઈ મોરખીયા	સા. મહાવીરનિધિશ્રીજી મ.સા.
પૂજાબેન નરપતલાલ દોશી	સા. પ્રભુપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
રિદ્ધિબેન દિનેશભાઈ વોહેરા	સા. નૈવેતનિધિશ્રીજી મ.સા.
ક્રિનાબેન શૈલેષભાઈ વોહેરા	સા. ક્ષમાનિધિશ્રીજી મ.સા.
આંગીબેન પરેશભાઈ અદાણી	સા. આર્યનિધિશ્રીજી મ.સા.
મિતલબેન વિનોદભાઈ દોશી	સા. મૂદુનિધિશ્રીજી મ.સા.
પૂજાબેન દિનેશભાઈ મોરખીયા	સા. પાર્શ્વપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
મોક્ષાલીબેન કિરીટભાઈ વોહેરા	સા. ઋષભનિધિશ્રીજી મ.સા.
વૈરાગીબેન કિરીટભાઈ વોહેરા	સા. પુંડરિકનિધિશ્રીજી મ.સા.
જીલબેન બકુલભાઈ ભણસાળી	સા. દૈવર્ધનિધિશ્રીજી મ.સા.

સદ્‌ગુરૂ સમર્પણમ્

મારા ગુરૂ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

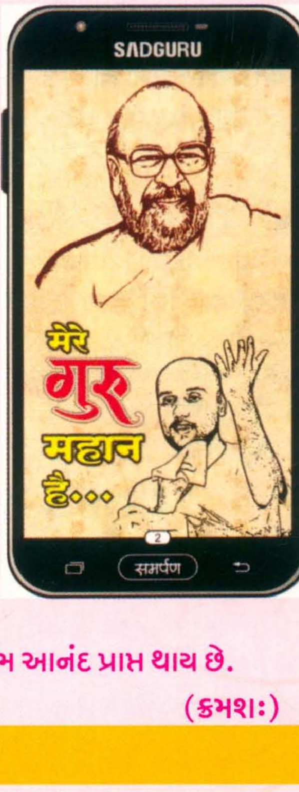

૪૯. ગુરૂ એકવાર શિષ્યના હૃદયમાં પ્રવેશ કરે છે પછી પરત નથી જતા.

૫૦. ગુરૂની પ્રસન્નતાથી ડગલેને પગલે સફળતા પ્રાપ્ત થાય છે.

૫૧. ગુરૂ તેમના સમર્પિત શિષ્યોને તેમના જેવા સમર્થ બનાવે છે.

૫૨. ગુરૂ વગર ગૌતમ સ્વામી પણ મહાન કેવી રીતે બનત ?

૫૩. ગુરૂ સ્વભાવ અને પ્રભાવને સમજવા માટે પૂર્ણ સમર્પિત બનવું જરૂરી છે.

૫૪. ગુરૂ આજ્ઞાની સાથે-સાથે સામર્થ્ય પણ આપે છે.

૫૫. ગુરૂ એક કલ્પવૃક્ષ છે જ્યાં ભક્તોના મનના શુભભાવ અવશ્યપૂર્ણ થાય છે.

૫૬. ગુરૂની પ્રસન્નતા જ શિષ્યની પ્રસન્નતા છે.

૫૭. ગુરૂ એવો બગીચો છે, ત્યાં બેસવા માત્રથી અસીમ આનંદ પ્રાપ્ત થાય છે.

(ક્રમશઃ)

આચરણ કરવા જેવું....

- ❖ વણહકની વસ્તુ લેવાનો વિચાર થવો એ પાપનો પ્રારંભ છે.
- ❖ આપણા ભાગે આવેલું કાર્ય પૂરા સદ્‌ભાવ અને ધર્મભાવથી કરવું એ ધર્મ છે.
- ❖ કુસંગ તો જીવને ડગલે ને પગલે મળી જાય પરંતુ સત્સંગ તો ભગવાન કૃપાથી જ મળે.
- ❖ પ્રભુએ આપેલી જિંદગીને કોરી સ્લેક માફક રાખીને ઈજ્જતથી જીવવું એ જ મોટી વાત છે.
- ❖ ધાર્મિક વ્યક્તિ ક્યારેય સ્વાર્થી હોઈ શકે નહિ, જે સ્વાર્થી છે તે ઢોંગી છે.
- ❖ હું જે દિવસે કોઈનું ભલું કરી શકું એ દિવસ મારા માટે તહેવાર છે.

આત્મોદ્ધાર-૩ના મુમુક્ષુરત્નોનું મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજયભાઈ રૂપાણીએ કર્યું બહુમાન

શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂશ્વિરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ અમદાવાદ ખાતે યોજાનાર આત્મોદ્ધાર-૩ ના ૧૯ મુમુક્ષુરત્નોને ગુજરાતના મુખ્યમંત્રી ધર્મપ્રેમી અને સરળ સ્વભાવી શ્રી વિજયભાઇ રૂપાણીએ સી.એમ. હાઉસમાં આમંત્રિત કર્યા હતા. કારણોવસાત ૬ મુમુક્ષુરત્નો જ પહોંચી શક્યા હતા. મુખ્યમંત્રી નિવાસ પર લગભગ એક કલાક સુધી ધર્મ ચર્ચા કરી શ્રી રૂપાણીએ મુમુક્ષુરત્નોનું ભવ્ય સ્વાગત અભિનંદન કરી તેમને આશિષ અને હિતશિક્ષા પ્રદાન કરી સંયમજીવનની અનુમોદના કરી મુમુક્ષુરત્નોનું બહુમાન કર્યું હતું. મુમુક્ષુરત્નો સાથે સંઘ - પરિષદ અને જ્ઞાનાયતન પરિવારના સભ્યો પણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. ઉલ્લેખનીય છે કે, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં થરાદ ખાતે યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૧, સામુહિક દીક્ષા મહોત્સવમાં શ્રી વિજયભાઇ રૂપાણી ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ અવસરે મુખ્યમંત્રી સાથે થરાદ નિવાસી રાજકોટ સ્થિત શ્રી પ્રવિણભાઇ પૂનમચંદભાઇ સંઘવી ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

થરાદ કે ગુજરાત જ નહીં પણ સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયનું ગૌરવ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા

અ.ભા. શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તેમજ શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના અધ્યક્ષશ્રી વાઘજીભાઇ વોરાનું અત્યંત તીવ્ર મુત્સદ્દીસભર માર્ગદર્શન... રાષ્ટ્રીય ઉપાધ્યક્ષ અને ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઇ દેસાઇની ધૈર્ય અને ઠંડા મગજથી કાર્ય કરવાની પદ્ધતિ... શ્રી શશિભાઇ વોરા, શ્રી બિપીનભાઇ વોહેરા, શ્રી પ્રફુલભાઇ સંઘવી, શ્રી યોગેશભાઇ સંઘવી, શ્રી રસિકભાઇ દોશી, શ્રી ચીનુભાઇ મોરખીયા સહિત સંઘના નામી અનામી અગ્રણીઓની ધગશ... યુવક પરિષદ પ્રમુખશ્રી ભરતભાઇ વોહેરા (લાડુ)ની સક્રિય ટીમ, તરુણ પરિષદની ટીમ વિગેરેએ રાત-દિવસ જોયા વિના શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત આત્મોદ્ધાર-૩ ને જે અવિસ્મરણીય સફળતા અપાવી છે જે અનુમોદનીય બની છે અને તેની યશોગાથા ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના ઘેર ઘેર ગવાઇ રહી છે.

આત્મોદ્ધાર મહોત્સવ દરમ્યાન એકત્રિત થયેલ હજારોની સંખ્યામાં સમાજજનોના મુખે એક જ વાતની ચર્ચા જોવા મળતી હતી કે શ્રી વાઘજીભાઇ વોરા થરાદ કે ગુજરાતનું જ નહીં પણ સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયનું ગૌરવ છે.

શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની વયાવચ્ચભક્તિ દ્વારા જૈન શાસનની મહેંક પ્રસરાવતા શ્રી ભરતભાઈ (લાડુ)

મનુષ્ય સામે કેટલાય ધ્યેય હોય છે એ ધ્યેયોની પ્રાપ્તિ માટે તે જીવનભર ઝઝૂમતો રહે છે. એ એનો સંઘર્ષ બની જાય છે. આ સંઘર્ષ એની સફળતા-નિષ્ફળતા નક્કી કરે છે. કેટલાકને ભાગે સફળતા હોય છે તો કેટલાકને ભાગે નિષ્ફળતા આજ જિંદગીની રફતાર છે.

માણસે સુખ-દુઃખની પરવા કર્યા વગર જાત-જગત-જીવન અને માનવતાની ફરજ પુરી કરવા માટે પુરુષાર્થ કરવો પડે છે. જે આ ફરજો પુરી કરવામાં નિષ્ફળ જાય છે તે સાચા અર્થમાં માનવજીવનથી વંચિત રહી જાય છે. જે આ ફરજો પુરી કરે છે તેની પ્રસિદ્ધિ ચોમેર ફેલાઈ રહે છે.

ઘણા માણસોના જીવન જ એવા હોય છે જેમના કાર્યો માટે વિશ્વ પણ નાનું પડતું હોય છે. આવા માણસોની ધગસ, મહેનત દ્વારા નામનાથી દૂર રહી કશુંક કરવાની ઝંખના એમને વિશ્વના બજારમાં ધર્મના પૂજારી બનાવે છે. જેમને કોઈના દર્દનો સીસકારો સંભળાય છે ને હૃદય વલોપાત કરવા લાગે છે. એરકન્ડીશન, ફ્રીજ, પંખા ઈલેક્ટ્રીક રોશનીના ઝગમગાટ વચ્ચે અસંખ્ય સૂક્ષ્મજીવો મૃત્યુને ભેટે છે. આવા અસંખ્ય સૂક્ષ્મજીવોને સંપૂર્ણ અભયદાન આપતા હોય અને કઠીનમાં કઠીન સંયમ જીવન વ્યતિત કરતા હોય તો તે છે શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદ આજના આ વિષમકાળમાં ભગવાન મહાવીરના પંથે ચાલતા શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદને ભરતક્ષેત્રમાં વિચરતા જીવિત ભગવાન કહીએ તો પણ અતિશયોક્તિ નહીં ગણાય. આવા કોઈપણ સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની વયાવચ્ચ ભક્તિ દ્વારા જૈન શાસનની મહેંક પ્રસરાવતા હૃદયશાળી અને કરૂણામય પ્રતિભાશાળી વ્યક્તિત્વ એટલે થરાદ નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત હાલમાં અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા અમદાવાદના અધ્યક્ષ શ્રી ભરતભાઈ હીરાલાલ વોહેરા (લાડુ) જેમનો અમૂલ્ય સમય શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની વયાવચ્ચ ભક્તિ કરવામાં ફાળવાય છે. નામનાથી દુર અને ઓછા બોલા એવા શ્રી ભરતભાઈ વોહેરા કોઈપણ સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની સાચા ભાવથી ઉમળકાભેર વયાવચ્ચ ભક્તિ કરી આજના યુગના જીવંત ભગવંતો સ્વરૂપ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દિવ્ય આશિષ મેળવી અનંત પુણ્ય ઉપાર્જન કરી રહ્યા છે. થરાદ જૈન સમાજને ગૌરવ બક્ષતા ભરતભાઈ (લાડુ)ની શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની ઉત્કૃષ્ટ ભાવ સાથે વયાવચ્ચ ભક્તિ જૈનશાસનની મહેંક પ્રસરાવી રહી છે.

- બિરેન પ્રકાશભાઈ મોરખીયા (લાખણી)

બોરીઆવી ખાતે શ્રી રાજેન્દ્ર - જયંતસેન ગુરૂકુલનો ભૂમિપૂજન કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાએ મ.પ્ર.થી વિહાર કરી આણંદ ખાતે પધરામણી કરી હતી. જ્યારે ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, પ્રવચનકાર આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાએ શ્રી રાજેન્દ્ર-શાંતિવિહાર- મોટેરાખાતે થોડા દિવસ સ્થિરતા કરી તા. ૧૨-૫-૧૯ના રોજ રાસ્કા ખાતે અડધા દિવસની સ્થિરતા કરી શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર નડિયાદ ખાતે રાત્રિ વિશ્રામ કરી તા. ૧૪-૫-૨૦૧૯ના રોજ આણંદ ખાતે પધરામણી કરી હતી. બંને આચાર્ય ભગવંતોના દર્શન-વંદન હેતુએ પ્રતિરોજ ભક્તોનું આવા-ગમન ચાલુ રહ્યું હતું.

તા. ૧૫-૫-૨૦૧૯ના રોજ મુંબઈ-અમદાવાદ હાઈવે નંબર ૮ પર આણંદ અને નડિયાદની મધ્યમાં બોરીઆવી ગામમાં શ્રી મહાવીર જૈન શ્વેતાંબર પેઢી (ટ્રસ્ટ) ભાંડવપુર તીર્થ દ્વારા સંસ્થાપિત શ્રી રાજેન્દ્ર - જયંતસેન ગુરૂકુલના ભૂમિ પૂજનનો કાર્યક્રમ બંને આચાર્ય ભગવંતો અને સાધુ ભગવંતોની પાવનકારી નિશ્રામાં શાસ્ત્રોક્ત વિધિ અનુસાર વાજતે-ગાજતે સંપન્ન થયો હતો. ભૂમિપૂજન સાથે આ ગુરૂકુલના નિર્માણ કાર્યનો શુભારંભ થયો હતો. આ અવસરે મોટી સંખ્યામાં ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રસંગે સ્વામી વાત્સલ્યનો લાભ સાંચોર નિવાસી માતુશ્રી કેસીદેવી સાગરમલજી કટારીયા સંઘવી પરિવારે લીધો હતો. જ્યારે જય જિનેન્દ્રનો લાભ ધાણસા નિવાસી શાહશ્રી ચંપાલાલજી ગેબચંદજી શેઠ પરિવારે લીધો હતો.

આત્મોદ્ધાર-૩ ના મુમુક્ષરત્નોનું ઠેર ઠેર બહુમાન

અમદાવાદ ખાતે તા. ૨૩-૫-૨૦૧૯ના રોજ યોજાયેલ આત્મોદ્ધાર-૩ના મુમુક્ષુરત્નોના બહુમાનના ઠેર ઠેર કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. થરાદ, પાટણ, અમદાવાદ, નડિયાદ, સુરત, મુંબઈ સહિત માળવા-મારવાડ વિગેરે સ્થળોએ મુમુક્ષુરત્નોને આમંત્રિત કરી શોભાયાત્રા ગુણાનુવાદ સભા, નવકારશી, સંઘસ્વામી વાત્સલ્ય, પરમાત્માના પૂજનો વિગેરે વિવિધ કાર્યક્રમોનું આયોજન કરી બહુમાન કરાયું હતું.

અખિલ ભારતીય શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવાર દ્વારા પ્રેરિત

રાજનગર-અમદાવાદ ખાતે ૨૩ મે ના રોજ યોજાયેલ સામુહિક દીક્ષા આત્મોદ્ધાર-૩નો અનુમોદનાર્થે ૨૭ દિવસીય અખંડ આયંબિલ યાત્રા

૨૭ એપ્રિલ પાટણ - ૧૦૫ આયંબિલ, ૨૮ એપ્રિલ સુરત - ૧૧૫ આયંબિલ, ૨૯ એપ્રિલ ડીસા - ૪૦ આયંબિલ, ૩૦ એપ્રિલ લાખણી - ૯ આયંબિલ, ૧ મે મુંબઈ - ૨ મે જાવરા - ૩ અને પિપલોદા - ૧૨ આયંબિલ, ૩ મે આલોટ - ૩, જોબટ - ૨૫, મેઘનગર-૮ અને આણંદમાં ૧૨ આયંબિલ, ૪ મે પાચરોદ - ૨ અને રંભાપુર ગામમાં ૬ આયંબિલ, ૫ મે ઈન્દોરમાં ૮ અને થરાદમાં ૪૫ આયંબિલ, ૬ મે જોધપુર - ૫ આયંબિલ, ૭ મે રાજગઢમાં ૩ અને ઝકનાવદામાં ૨ આયંબિલ, ૮ મે હિંગણોદમાં ૨ અને રાણાપુરમાં ૧ આયંબિલ, ૯ મે બાગમાં ૫ અને મહિદપુર રોડમાં ૨ આયંબિલ, ૧૦ મે અલિરાજપુર - ૬ આયંબિલ, ૧૧ મે જાબુઆમાં ૨૦ અને પારામાં ૧૧ આયંબિલ, ૧૨ મે રતલામ-૯ આયંબિલ, ૧૩ મે ધાર - ૫ આયંબિલ, ૧૪ મે ઉજ્જૈનમાં ૧૩, નયાપુરા - ૧૩, નમકમંડી કુલ ૨૬ આયંબિલ, ૧૫ મે બિજાપુર - ૩૦ આયંબિલ, ૧૬ મે મંદસોરમાં ૨૭ અને બદનાવરમાં ૪ આયંબિલ, ૧૭ મે કુવમ - ૩ આયંબિલ, ૧૮ મે ટાંડા, ૧૯ મે ખટાલીમાં ૫ અને મદુરાઈમાં ૪ આયંબિલ, ૨૦ મે દલોદામાં ૩, કરવડમાં - ૨ નિમ્માહેડા આયંબિલ, ૨૧ મે અમદાવાદ - નિમચ, ૨૨ મે અમદાવાદ, ૨૩ મે અમદાવાદ આ લખાઈ રહ્યું છે ત્યારે ઉક્ત આયંબિલ યાત્રાના નામ પ્રાપ્ત થયા છે, બાકીના નામ આવતા અંકે...

૨૫ વર્ષ પૂર્વે ત્રિસ્તુતિક શ્રી સંઘમાં ચાલુ થયેલ સામુહિક દીક્ષાનો ક્રમ

વર્ષ	દીક્ષા સંખ્યા	સ્થળ
૧૯૮૪	૦૭	થરાદ
૧૯૯૨	૦૯	સુરત
૨૦૦૨	૧૧	થરાદ
૨૦૦૩	૦૮	નવકાર તીર્થ, છત્રાલ
૨૦૦૬	૦૬	થરાદ
૨૦૧૧	૧૦	પેપરાલ
૨૦૧૧	૦૬	થરાદ
૨૦૧૧	૦૮	થરાદ
૨૦૧૩	૦૯	સુરત
૨૦૧૪	૧૨	સુરત
૨૦૧૭	૨૫	થરાદ, આત્મોદ્ધાર-૧
૨૦૧૮	૧૦	પાલિતાણા, આત્મોદ્ધાર-૨
૨૦૧૯	૧૯	અમદાવાદ, આત્મોદ્ધાર-૩

પેપરાલ તીર્થે ૧૫૦થી અધિક શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પધરામણી

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની જન્મ સ્થળી પેપરાલ તીર્થ ખાતે તા. ૧-૫-૨૦૧૯ના રોજ આચાર્ય ભગવંત શ્રીમદ્‌વિજય યશોવિજયસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ૧૫૦થી અધિક શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદની વાજતે-ગાજતે મંગલ પધરામણી થઇ હતી. શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા ભવ્ય સામૈયા સાથે સ્વાગત કરાયું હતું. અને આચાર્યશ્રીને કાંબળી વહોરાવાઇ હતી. આચાર્યશ્રીએ ધર્મ સભાને સંબોધિત કરી જણાવ્યું હતું કે, પુણ્ય સમ્રાટ દ્વારા થયેલ જિનશાસનની પ્રભાવના અનુમોદનીય અને ચિર સ્મરણીય છે.

धर्मदिवाकर गच्छाधिपति
શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.
આદિ શ્રમણ ભગવંતોનો

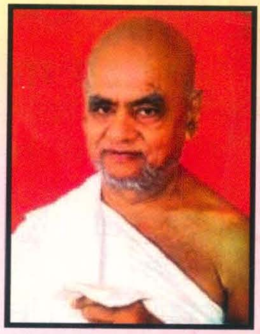

શ્રી પિપલોદા નગરે (મ.પ્ર.)

ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ

સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ – ૧૧ ને
શુક્રવાર તા. ૧૨–૭–૨૦૧૯

–: આયોજક :–
શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ
પિપલોદા (મ.પ્ર.)

શ્રી ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય દેવેશ
શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને
વિદુષી સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા.
આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો

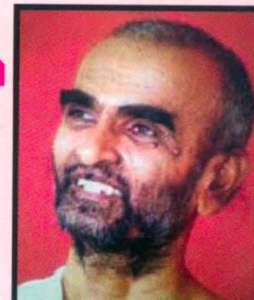

શ્રી ધાનેરા નગરે

ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ

સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૨ ને શનિવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯
મંગલ કાર્યક્રમ : સવારે ૯ કલાકે સામૈયા પ્રારંભ
શ્રી શીતલનાથ જૈન મંદિર, પારસ સોસાયટી,
સભા સ્થળ : શ્રી શાંતિનાથ જૈન મંદિર, શાંતિ બજાર

–: ચાતુર્માસ આયોજક :–
શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ધાનેરા.

कुमकुम सने पगलिये

19 भव्यात्माएँ संयम के शिखर पर

राजनगर में अभूतपूर्व समारोह के साथ आत्मोद्धार-3 सम्पन्न

कई नगरों में ज्ञानोपासक शिविर सम्पन्न

धर्मदिवाकर, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ प्रेरणा से मालवा में भक्तिमय परिवेश में अध्यात्म यात्रा दो दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। जिसके अन्तर्गत अलग-अलग नगरों में शिविर ज्ञानोपासक करवाए गए। जिसमें बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लेकर आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होते हुए धार्मिक शिक्षण प्राप्त किया।

खाचरौद में पक्षालभाई हँसमुखभाई कोरडिया-सूरत, वीरभाई मुकेशभाई चत्तर-नामली ने शिविर में शिक्षण प्रदान किया। शिविर में 95 बालक-बालिकाओं ने उत्साह से भाग लिया जिसमें कई बच्चों ने रात्रि भोजन और जमींकन्द का त्याग किया था।

नागदा में पुनितभाई सकलेचा-झाबुआ, राजभाई विजयभाई वोहेरा- डीसा ने शिविर के दौरान 75 बच्चों ने भाग लिया। जिसमें प्रभु का ध्यान एवं साधना सिखाई गई। विशेष रूप से जिनालय में प्रभु की पूजा की विधि अभ्यास सहित करके बताई गई।

पिपलौदा में आगमभाई अश्विनभाई कोरडिया-डीसा एवं यशभाई नरेशभाई सेठ-डीसा ने 30 बच्चों को शिक्षण प्रदान करते हुए प्रभु की पूजा अभ्यास के साथ विधि सहित सिखाई गई और उसके पश्चात् कई बच्चों ने तीन माह पूजा करने का नियम भी लिया।

पिपलिया मण्डी में प्रशान्तभाई प्रेमराजभाई चोरड़िया-गोवा, बाबूभाई कुमारभाई मोरखिया- डीसा के नेतृत्व में 30 बच्चों ने भाग लिया। जिसमें भक्तामर महाभिषेक किए गए।

महिदपुर रोड़ में मोक्षभाई चीनूभाई कोरडिया-डीसा, अक्षतभाई अशोकभाई मोरखिया-डीसा एवं राजभाई हितेशभाई मोरखिया-डीसा द्वारा 25 बच्चों को धार्मिक शिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में बच्चों को औषधियुक्त महाभिषेक संवेदना के साथ हुए।

मालवा में शिविर के दौरान भक्तिमय और साधनामय वातावरण बना। इन शिविरों में सभी शिविरार्थी व दो प्रतिक्रमण याद करने वाले बच्चों को अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री भरतभाई वोरा ने पुरस्कृत किया। लाभार्थी परिवारों के सहयोग से यह शिविर सानन्द सम्पन्न हुए।

* **परिषद् की डीसा (गुजरात)** की शाखा ने साधु-साध्वी को सड़क दुर्घटना से बचाने के लिए एवं ड्राईवर, क्लीनर को सावधान करने हेतु एक अनूठी पहल प्रारम्भ की है।

ये सदस्य हाईवे के चार रास्तों पर

स्थित ढाबे या होटल पर जहाँ ट्रकों के चालक, परिचालक खाना खाने या चाय नास्ते के लिए रुकते हैं, उन चालक, परिचालक को अपने पैसों से चाय-नास्ता करवाकर उन्हें जैन साधु-साध्वियों के बारे में समझाते हुए बताएँगे कि ये महावीर के दूत हैं, ये सड़क पर चल रहे जीव कुचला नहीं जाएं इस हेतु पैदल और नीचे देखते हुए चलते हैं।

ऐसी स्थिति में कभी-कभी आते हुए वाहन का ध्यान नहीं रख पाते। इसलिए आपसे आग्रह है कि वाहन चलाते समय सफेद वेशधारी साधु-साध्वी सड़क पर चलते हुए दिखाई दें तो अपनी गाड़ी धीरे व सावधानीपूर्वक निकालें, क्योंकि इन्हें दुर्घटना से बचाना है।

* मुनिराज श्री आनन्दविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जिनरत्नविजयजी म.सा. एवं विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि की शुभ निश्रा में प्रभु महावीर प्रदत्त संयम मार्ग का अनुसरण करने को उत्सुक मेंगलवा निवासी श्रीमती गीतादेवी लक्ष्मणराजजी सकलेचा की सुपुत्री मुमुक्षु प्रियंकाकुमारी के भागवती प्रव्रज्या के उपलक्ष्य में रत्नत्रयी महोत्सव का आयोजन विभिन्न कार्यक्रमों के साथ किया गया।

इस प्रसंग पर धर्मसभा में देशना देते हुए मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. ने कहा कि जैनकुल में जन्म लेने के बाद संयम के मार्ग पर अग्रसर होना श्रावक का कर्त्तव्य है।

* श्री भाण्डवपुर तीर्थ पर बैंगलोर के चिकपेठ एवं विविपुरम् स्थित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर पेढ़ी के तत्वावधान में संचालित श्री ऋषभ संस्कार वाटिका के बच्चे एवं परिवारजन लगभग 400 यात्री श्री दर्शनार्थ पधारे।

तीर्थ परिसर में मूलनयक श्री महावीर स्वामीजी एवं गुरुमन्दिरों में दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् यहाँ विराजित मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा., मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म.सा. एवं विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन- वन्दन किए।

दिनांक 8 अप्रैल को तीर्थ परिसर में दर्शनार्थ शाश्वती चैत्री ओलीजी के 1000 आराधक पधारे। इन सभी आराधकों ने श्री नाकोड़ा तीर्थ में ओलीजी की।

* **झाबुआ।** आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की झाबुआ में श्री गौड़ीजी तीर्थ में आयोजित वर्षीतप के तपस्वियों की तपस्या के निमित्त भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ। आचार्यदेवेश श्री ने श्री गौड़ीजी तीर्थेन्द्र धाम पर आयोजित धर्मसभा में मंगल प्रवचन प्रदान करते हुए कहा कि जो झुकता है वही आगे बढ़ता है। जो व्यक्ति सदा दूसरों के सम्मान में प्रसन्न एवं दूसरों की प्रसन्नता में झुकता है वह सही मायने में महापुरुष कहलाता है।

आज दुनिया झुकने के बजाय दिखावे में अधिक विश्वास कर रही है और इस दिखावे में वह प्रत्येक कार्य कर रही है जो समाज में शर्मिन्दगी का कारण बनता है। दिखावे और बदले की प्रतिस्पर्धा वाले युग में किसी का फायदा नहीं होगा, बल्कि हम सभी धीरे-धीरे पतन की ओर अग्रसर होंगे। श्री गौड़ीजी तीर्थ पर वर्षीतप के पारणे के लाभार्थी

संघवी वालीबाई सागरमलजी, नगीनलालजी, मनोहरलालजी, अशोकजी छाजेड़ परिवार ने पारा, झाबुआ, राजगढ़, इंदौर आदि श्रीसंघों के लगभग 50 तपस्वियों के पारणे आचार्यदेवेश श्री की पावन निश्रा एवं पारा - झाबुआ श्रीसंघ की विशेष उपस्थिति में करवाए। उक्त आयोजन छाजेड परिवार के तपस्वी श्रीमती मंजूला मनोहरलालजी छाजेड़, श्रीमती प्रेमलता पारसमलजी लुणावत एवं श्रीमती माला मनीषजी छाजेड़ की वर्षीतप की तपस्या के निमित्त किया गया।

तपस्वियों के पारणे के पश्चात् धर्मसभा के प्रारम्भ में सामूहिक गुरुवन्दन वरिष्ठ सुश्रावक धर्मचन्दजी मेहता एवं पारा श्रीसंघ के वरिष्ठ राजेन्द्रजी कोठारी ने करवाया। पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन नगीनलालजी छाजेड़ , माँगीलालजी पावेचा, राजगढ़, श्री ऋषभदेव बावन जिनालय के व्यवस्थापक संजयजी मेहता, सचिव मुकेशजी जैन, आचार्यश्री तीर्थेन्द्रसूरि समिति के तेजप्रकाश कोठारी एवं संजयकुमार काठी व चातुर्मास समिति नवल के अध्यक्ष कमलेशजी ने लिया। पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के चित्र पर माल्यार्पण संघ के वरिष्ठ मनोहरजी भण्डारी एवं कान्तिलालजी बाबेल ने किया।

*** पाटण (गुजरात)** । यहाँ पंचासार जैन मंदिर के समीप स्थित त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज एवं मुनिराज श्री निपुण रत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण द्वारा पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी महाराजा की द्वितीय वार्षिक पुण्य तिथि निमित्त पुण्य सप्तमी का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ, जो संपूर्ण पाटण नगर सहित भारत के अनेक नगर में अनुमोदना के साथ गुरु भक्ति का उदाहरण बना। त्रिदिवसीय महोत्सव में विभिन्न आयोजन हुए जिसमें राजनगर में होने वाले आत्मोद्धार-3 के दीक्षार्थी भाई-बहनों की राजाशाही शोभायात्रा जो इतनी बड़ी संख्या में दीक्षार्थी भाई-बहनों की पाटण के

इतिहास में प्रथम बार शोभायात्रा हुई। इस शोभायात्रा को पाटण नगर पालिका ने नगर के प्रमुख स्थल बगवाडा चोक पर स्वागत द्वारा और बहुमान सामग्री के साथ दीक्षार्थी भाई-बहनों का स्वागत किया, जो शायद प्रथम बार हुआ कि, नगर के प्रमुख स्थल पर राजसत्ता ने धर्मसत्ता का बहुमान किया

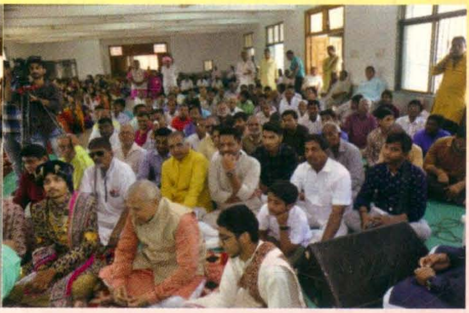

हो। महोत्सव में जैन संस्कृति के अनुरूप साधार्मिक भक्ति का आयोजन किया गया और बड़ी नवकारसी के दिन संपूर्ण जैन संघ का भोजन जिसमें करीबन 2200 लोगों को गादि-तकिया पर बैठाकर कांस्य के बर्तन में भोजन और संपूर्ण जयणा के साथ भोजन सामग्री का निर्माण, भोजन सामग्री और व्यवस्था को लेकर सभी ने की अनुमोदना। बड़ी नवकारसी के दिन भोजन से पूर्व 2200 लोगों का दूध और पानी से चरण पक्षालन और ललाट पर कुमकुम तिलक कर नगद राशि से संघ पूजन एवं शहनाई वादन के सुर के साथ स्वागत किया गया। त्रिदिवसीय महोत्सव के कार्यक्रम का पाटण नगर के सभी जैन घरों में जाकर निमंत्रण पत्र देकर महोत्सव में पधारने का आमंत्रण दिया, जो नगर में प्रथम बार ऐसा हुआ, महोत्सव के दौरान नगर के पंडितवर्यों के बहुमान में त्रिस्तुतिक जैन संघ ने पाटण के सभी संघ के प्रमुख लोगों को साथ लेकर बहुमान किया जिसमें तिथि और समुदाय से उठकर एकता का माहौल बना।

पुण्य सप्तमी के दिन गुणानुवाद सभा पांच घंटे तक चली। मुनि भगवंत एवं पंडितवर्य और नगर के प्रमुख लोगों ने किये। गुरुदेव श्री के गुणानुवाद का बुजुर्ग लोगों से सुनने में आया कि नगर में प्रथम बार इतने घण्टे गुणानुवाद सभा चली। महोत्सव दरम्यान पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा, राजेन्द्रसूरी अष्ट प्रकारी पूजन, जयन्तसेन सूरी अष्ट प्रकारी पूजन सहित तीनों दिन भक्ति और पंचासरा पार्श्वनाथ के जिनालय सहित विभिन्न जिनालय में अंगरचना, सामूहिक सामायिक, पाटण नगर में बिराजमान सभी श्रमण-श्रमणी भगवंतों की वैयावच्च भक्ति, पाटण नगर के सभी जैन घरों में एवं नगर के 107 जिनालय के पुजारी और कर्मचारी के घरों में गुरुदेव की पुण्य तिथि निमित्त 500 ग्राम मिश्री (साकर) की प्रभावना आदि अनेक आयोजन के साथ जीवदया और जनसेवा के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पुण्य सप्तमी महोत्सव में विशेष रूप से गुरुदेव श्री के विदेश के गुरु भक्तों का 30 सदस्य के समूह ने पाटण आकर गुरु भक्ति और वैयावच्च का लाभ लिया।

पुण्य सप्तमी महोत्सव को अविस्मरणीय बनाने विभिन्न श्रीसंघ और गुरु भक्तों ने लाभ लिया। मुख्य सहयोगी- सियाणा

निवासी इन्द्रभाई माणेकचन्दजी कोठारी, उन्झा/ त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण/ त्रिस्तुतिक जैन संघ वासणा/ सहयोगी- त्रिस्तुतिक जैन संघ पारा, रेवतड़ा निवासी मंगलचंद मुनिलालजी हिराणी, मुंबई चेन्नई/ थराद निवासी दोशी सवीताबेन रमणलाल परिवार, मुंबई/ सहसहयोगी- खिमेल निवासी बसंतीबेन किशोरमलजी खिमावत, मुंबई/ भुति निवासी धनराजजी जवानमलजी परिवार, पाटण/सायला निवासी पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी परिवार, विजयवाड़ा/ नेनावा निवासी बाबुलाल दलीचन्दजी संघवी परिवार, मुंबई/ सहसहयोगी- धाणसा निवासी बाबुलालजी लालचन्द्रजी संघवी, दिल्ली/बागरा निवासी नरेन्द्र कुमार हजारीमलजी परिवार, नैल्लोर/सरत (अमरसर)

निवासी जावंतराजजी पुखराजजी वाणीगोता बिजापुर/ थराद निवासी खेमचंद लल्लूभाई संघवी, राजकोट/ थराद निवासी हीरालाल सामजीभाई वोरा परिवार, अहमदाबाद/ वातम निवासी रसीकलाल हालचन्दभाई मोरखीया सूरत/वापी निवासी कांतिलाल कालीदास भाई वोरा, थराद, वासणा निवासी वाडीवाल केशवलाल मोरखीया, पाटण/ थराद निवासी वीणाबेन बाबुलालजी पारिख आदि ने लाभ लिए।

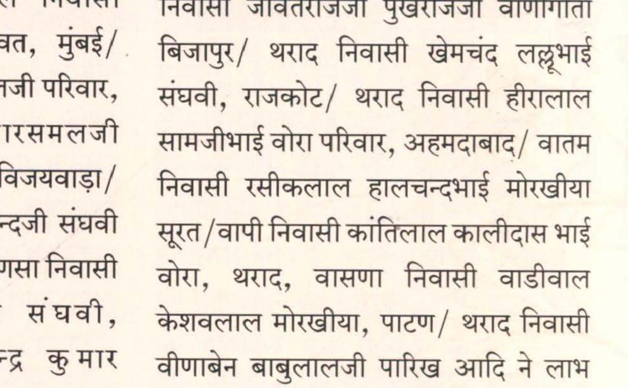

* पाटण नगर में 'तपागच्छ प्रवर समिति कार्यवाहक गच्छाधिपति श्री अभयदेव सूरिश्वरजी म.सा. एवं मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. का आत्मीय मिलन हुआ। गच्छाधिपति श्री और आचार्य भगवंत श्री मोक्षरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं श्रमण भगवंत का पाटण नगर में एक दिन के लिए आगमन हुआ। अपने व्यस्त कार्यक्रम के दौरान भी श्री संघ की विनंती पर दोपहर में विहार के पूर्व त्रिस्तुतिक उपाश्रय में पधारे एवं अध्ययन हेतु बिराजमान सभी मुनि भगवंतों को मार्गदर्शन प्रदान किया। पुण्य सम्राट गुरुदेव के साथ बिताए संस्मरण याद किये। गच्छाधिपति श्री एवं मुनिराज श्री का मिलन लंबे समय बाद होने से गच्छाधिपति श्री एवं आचार्य भगवंत

और मुनिराज श्री के बीच अनेक विषय पर धर्म चर्चा हुई।

गच्छाधिपति श्री के त्रिस्तुतिक उपाश्रय में पदार्पण पर श्रीसंघ ने कांबली वहोरा कर आशीर्वाद लिए। इस प्रसंग पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के गुरु भक्तों का एवं मुनिराज के दर्शनार्थ पधारे। राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री भरतभाई वोरा, राजुभाई, जिग्नेश सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

---

* **जयपुर।** अ.भा.श्री राजेन्द्र-जयन्त-जैन सम्यग्ज्ञान कन्या शिविर ट्रस्ट (राज.) द्वारा साध्वी श्री डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में कन्या शिविर का आयोजन जयपुर स्थित श्री देराऊर दादावाड़ी तीर्थ पर ग्यारह दिवसीय आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ।

इसमें कक्षा छः से स्नातकोत्तर कक्षा तक की छात्राओं ने भाग लिया शिविर में जैन दर्शन के विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। कई छात्राओं ने 11 दिनों का अखण्ड मौन व्रत रखा। शिविर के अंतिम दिन श्रावकाचार, श्रमणाचार, जैनाचार, कर्म विज्ञान, तत्वविज्ञान आदि विविध विषयों पर लिखित व मौखिक परीक्षाएँ हुई। विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ समापन समारोह में प्रतिभाशाली छात्राओं को आकर्षक पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र दिए गए। छात्राओं को आने जाने का मार्ग व्यय भी समिति की ओर से दिया गया। शिविर सफल रहा।

'मार्ग भक्ति का मंजिल मुक्ति की' पुस्तक पर आधारित धार्मिक ज्ञान वृद्धि प्रतियोगिता

दिव्य आशीष प्रदाता पुण्य सम्राट श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पट्टधर परम पूज्य गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. व परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिजी म.सा. दिव्य आशीष पूज्य साध्वीश्री महाप्रभाश्रीजी प्रेरणाप्रदात्री व पूज्य डॉ. प्रीति दर्शनाश्रीजी म.सा., प्रश्न संयोजिका पूज्य साध्वी रुचि दर्शनाश्रीजी म.सा. के मार्गदर्शन में आयोजित 'मार्ग भक्ति का मंजिल मुक्ति की' पुस्तक पर आधारित धार्मिक ज्ञान वृद्धि प्रतियोगिता। उत्तर पुस्तिका भेजने की अंतिम दिनांक 13 अक्टूबर 2019।

निर्णय की घोषणा दिनांक 12 नवम्बर 2019। **इनाम-** प्रथम पुरस्कार 7000 रु., द्वितीय पुरस्कार 5000 रु, तृतीय पुरस्कार 3000 रु प्रोत्साहन पुरस्कार 6000 रु., **पुस्तक एवं प्रश्न पत्र प्राप्ति स्थान -** श्री नवीन जी महावीर स्वामी जैन मंदिर पुराने पोस्ट ऑफिस के पास भीनमाल । पिन- 343029 (राज.), मो. 8209932463, 9782744654 । **उत्तर पुस्तिका भेजने का एवं**

पुरस्कार प्राप्त करने का स्थल- 127 नयापुरा चौसठ योगिनी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.), मो. 9977824441, मो. 07342575694, बृजेश बोहरा श्री संघ व परिषद के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी द्वारा जारी समाचार मो. 9827244175।

अखंड सांकली आयंबिल

अहमदाबाद। राजनगर-अहमदाबाद में 23 मई को होने वाली सामूहिक दीक्षा आत्मोद्धार -3 के अनुमोदनार्थे 27 दिवसीय आत्मोद्धार अखंड आयंबिल यात्रा का संचालन अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार द्वारा किया गया जो 27 अप्रैल से प्रारंभ हुई तथा समापन 23 मई को हुआ। इसमें निम्नांकित संख्या में आयंबिल हुए । 27 अप्रैल पाटन 105, 28 सूरत 115, 29 डीसा 40, 30 लाखनी 9, 1 मई मुंबई, 2 जावरा में 3 व पिपलौदा में 12, 3 आलोट में 3, जोबट में 25 मेघनगर में 8, आनंद में 12, 4 खाचरौद में 2, रम्भापुर में 6, 5 इंदौर में 8 थराद भीरपुर में 45, 6 जोधरपुर में 5, 7 राजगढ़ में 3, झकनावदा में 2, 8 मई रिंगनोद में 3, रानापुर में 1, 9 बाग में 5, महिदपुर में 2, 10 अलीराजपुर में 6, 11 झाबुआ में 20, पारा में 11, 12 रतलाम में 9, 13 धार में 5, 14 उज्जैन में 13 नयापुरा व नमकमण्डी में 13+13 = 26, 15 बीजापुर में 30, 16 मंदसौर में 27 बदनावर में 4, 17 कुक्षी में 3, 18 टांडा, 19 खटाली में 5, मदुराई में 4, 20 दलोदा में 3, करवड़ में 2, निम्बाहेड़ा में 2, 21 अहमदाबाद, नीमच में 60 नागदा में 3, 22 अहमदाबाद, 23 मई अहमदाबाद राजनगर।

– ब्रजेश बोहरा

प्रतियोगिता

भीनमाल। मार्ग भक्ति का मंजिल मुक्ति की पुस्तक पर आधारित धार्मिक ज्ञान वृद्धि प्रतियोगिता प्रेरणाप्रदात्री डॉ. प्रीर्ति दर्शनाश्रीजी म.सा. के माध्यम से प्रश्न संयोजिका साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा. के मार्गदर्शन में आयोजित है।

उत्तर पुस्तिका भेजने की अंतिम दिनांक 13 अक्टूबर 2019 तथा निर्णय की घोषणा दिनांक 12 नवम्बर 2019 को होगी। इनाम- प्रथम पुरस्कार 7000 रु., द्वितीय पुरस्कार 5000 रु., तृतीय पुरस्कार 3000 रु., प्रोत्साहन पुरस्कार 6000 रु. है। पुस्तक एवं प्रश्नपत्र प्राप्ति स्थान- श्री नवीनजी महावीर स्वानी जैन मंदिर पुराने पोस्ट ऑफिस के पास, भीनमाल पिन 343029 (राज.), मो. नं. 8209932463, 9782744654। उत्तर पुस्तिका भेजने का एवं पुरस्कार प्राप्त करने का स्थल 127 नयापुरा चौसठ योगिनी मार्ग उज्जैन (म.प्र.)। मो. 9977824441, फोन 07342575694।

श्री संघ सौरभ

श्री महावीर जन्म कल्याणक पर्व सर्वत्र निकले विशाल संयुक्त जुलूस

* **निम्बाहेड़ा।** भगवान महावीर स्वामी के जनकल्याणक महोत्सव के अवसर पर श्री सकल जैन समाज के तत्वावधान में भव्य चल समारोह बैण्ड बाजों व वरघोड़े के साथ निकाला गया। जिसमें बड़ी संख्या में जैन समाज के पुरुष धवल परिधान एवं महिलाएँ केसरिया परिधान पहने शामिल हुए।

चल समारोह में सुसज्जित रथ पर भगवान महावीर की प्रतिमा शामिल थी। महिलाएँ भक्तिगीत गाते हुए चल रही थीं, जबकि पुरुषजन जयकारे लगा रहे थे। जुलूस का विभिन्न स्थानों पर समाजसेवी संस्थाओं ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

चल समारोह आदर्श कालोनी स्थित राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर पहुंचा, जहाँ पर भगवान महावीर स्वामी की पूजा अर्चना कर खुशहाली का मनोरथ किया।

धर्मसभा आयोजित हुई जिसमें सागर समुदाय वर्तिनी साध्वीश्री अर्हम रेखा ठाणा-3 ने उपस्थित होकर भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डाला। धर्मसभा में सोहनलाल जैन,

फतेहलाल मारू, शांतिलाल मारू, आजाद बम्ब आदि ने संबोधित करते हुए भगवान महावीर के सिद्धांतों और आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

---

* **पिपलौदा।** सकल जैन श्री संघ द्वारा तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने बताया भगवान की मनमोहक अंगरचना की गई व प्रातः से ही जैन धर्मावलंबियों की भीड़ मंदिर में देखी गई सभी ने पूजा - अर्चना कर दर्शन लाभ लिया व भगवान को पालने में झुलाया। कल्पसूत्र का वाचन वाटिका उपाध्यक्ष शिखर बोहरा ने किया।

श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर से भगवान महावीर की भव्य शोभायात्रा निकली । शोभायात्रा में जगह-जगह गहुंली बनाकर जैन-अजैन परिवारों ने भगवान महावीर के दर्शन का लाभ लिया। नगर भ्रमण कर शोभायात्रा पुनः जैन मंदिर पहुंची जहाँ महाआरती की गई व प्रभावना का वितरण किया गया। भगवान की आरती मंगल दिवों का लाभ प्रफुल्ल, त्रिदीप, विनोद कुमार जैन परिवार, कल्पसूत्र वेराने का लाभ महेश कुमार बोहरा परिवार व भगवान को पालने में झुलाने का लाभ राकेश योगेश लालसिंह जैन परिवार ने लिया व शेष आरतियों का लाभ रमेशचन्द्र बाबेल, ऋषभ कुमार बाबूलाल धींग, सरदारमल बोहरा, संजय कांतिलाल बोहरा द्वारा लिया गया। संचालन तरुण परिषद अध्यक्ष हर्ष कटारिया ने किया।

रतलाम। भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव पर रथ यात्रा एवं नवकार मंत्र आराधकों का स्वामीवात्सल्य साणंद पूर्वक सम्पन्न होने के पश्चात अ. भा. राजेन्द्र जैन महिला परिषद द्वारा भगवान महावीर के संदेश 'जियो ओर जीने दो' को चरितार्थ करते हुए 'जयणा' का कार्य किया, जिसमें होटल (कचोरी,

समोसे) की दुकान पर मैदा छलनि, पानी छलनि का वितरण किया। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सरोज बेन कासवा, ममता भण्डारी, रमिला सकलेचा, महिला परिषद अध्यक्ष मंजू मेहता, चंदा चौरड़िया, मंजु आंचलिया, रीता मेहता, शशि चौरड़िया, मधु गंग, कांता लुनावत, चंदा नांदेचा, कल्पना जोहरा, ममता तलेरा आदि उपस्थित रहे।

– मंजू मेहता

मैसूर । कबूतर दान मैसूर शाखा

परिषद प्रांगण से

पुण्य सप्तमी पर देशभर में पुण्य सम्राट की स्मृति में श्रद्धाभरे आयोजन

इंदौर । नवयुवक परिषद्, शाखा-इंदौर द्वारा द्वितीय वार्षिक (पुण्य सप्तमी) पूरे दिन धार्मिक कार्यक्रम आयोजित कर मनाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रातः काल में इंदौर त्रिस्तुतिक संघ के मूल स्थान 'राजेन्द्र आराधना भवन' कुंअर मण्डली पर 'सामूहिक सामायिक एवं गुरु गुणानुवाद सभा' का आयोजन किया गया, जिसमें संघ के वडिल सुश्रावकों समरथमलजी जैन, महेन्द्रजी बागवाला, नीरजजी सुराणा ने गुरुदेव द्वारा जिनशासन एवं गुरुगच्छ के लिए किए गए अनगिनत एतिहासिक कार्यों का उल्लेख किया व उनके उपकारों को याद किया। इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित प्रखर वक्ता एवं प्रख्यात 'कवि श्यामसुंदरजी पलोड़' ने गुरु की महिमा का सुंदर शब्दों में वर्णन किया। सभा में संघ के ट्रस्टी, नवयुवक परिषद, महिला परिषद्, बहु परिषद के सैकड़ों गुरुभक्त उपस्थित थे, सभा के पश्चात् सधिर्मवात्सल्य का लाभ 'रमेशचन्दजी, राहुलजी, प्रणयजी श्रीश्रीमाल एवं राकेशजी दिव्यांशजी श्रीश्रीमाल परिवार बड़नगर वालों द्वारा लिया गया इसके पश्चात् राजेन्द्र महिला मण्डल द्वारा पुण्यसम्राट की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई।

इसी तारतम्य में संस्था द्वारा पुण्य सम्राट के हाथों से प्रतिष्ठित 'सीमन्धर स्वामी जिनालय एवं गुरु मंदिर' गुमास्ता नगर के प्रांगण में 'एक शाम गुरु जयन्तसेन के नाम' भव्यातिभव्य भक्ति का आयोजन भी किया गया, जिसमें परम् गुरुभक्त, पूरे देश में अपनी आवाज का जादू बिखेरने वाले सुप्रसिद्ध जैन भजन गायक 'दैवेश जैन एण्ड पार्टी' द्वारा पुण्य सम्राट के जीवन पर रचित गीतों की एक से बढ़कर एक रचना सुनाकर गुरुभक्तों को झूमने पर विवश कर दिया। भक्ति संध्या का लाभ 'नवीनचन्दजी

शैलेन्द्रकुमारजी सुराणा एवं परम् गुरुभक्त' परिवार द्वारा लिया गया, उक्त दोनों सभाओं का संचालन 'जैन नरेन्द्र अन्तिम राठौर' ने किया।

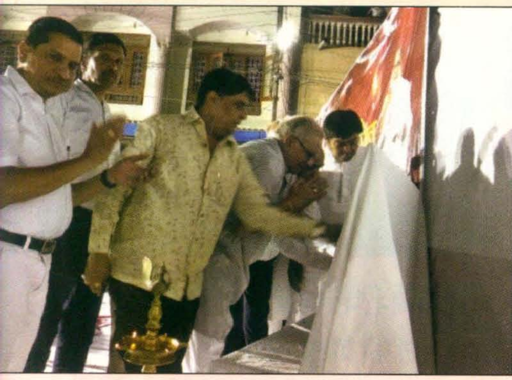

इंदौर । नवयुवक परिषद् शाखा इंदौर के तत्वावधान एवं जसकुंवर शान्तिलाल सकलेचा चेरिटैबल ट्रस्ट के सहयोग से पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्य तिथि के पूर्व त्रिस्तुतिक समाज के धार रोड़ पर भव्य आकार ले रहे तीर्थ 'राज राजेन्द्र जयन्त धाम' पर विशाल निःशुल्क नैत्र एवं दन्त रोग परीक्षण शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों नैत्र एवं दन्त रोगियों का विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा परीक्षण किया गया, साथ ही मोतियाबिंद के मरीजों के ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क ऑपरेशन भी करवाए गए, इसके पूर्व शिविर का फीता काटकर शुभारम्भ वरिष्ठ समाजसेवी शान्तिलालजी सकलेचा द्वारा किया गया।

– जैन नरेन्द्र अन्तिम राठौर एवं अनिल शान्तिलालजी सकलेचा ।

*** नागपुर ।** स्थानीय रामदास पेठ जैन मंदिर में गुरु गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरिजी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर उनके उपकार को याद किया गया। इस अवसर पर प्रशमरती जी महाराज साहब ने कहा की वैसे तो मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे कभी मिला नहीं किन्तु उनके बारे में सुना बहुत कुछ, उनके द्वारा लिखित शास्त्रों का अध्ययन किया और पाया की वह एक महान आचार्य थे। अपूर्व मंगल रत्नविजयजी के शिष्य उन्हें गब्बर आचार्य के नाम से जानते थे। उन्होंने बताया कि एक मंदिर की नींव का काम शुरू करने के लिए

कुंआ खुदाई का काम करने के बाद पानी नहीं मिल रहा था तो उनके वासक्षेप करने से आज भी बारह महीने उस कुएं में पानी रहता है। हंसा बहन पारेख ने बताया कि वह 62 वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहीं।

विजया बांठिया ने बताया कि उनके वासक्षेप के पानी के प्रभाव से उनके देवर की सुरायसीस जैसी बीमारी से छुटकारा मिला। डॉक्टर रीचा जैन विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने भी बताया कि वह भी बचपन से ही गुरु के नजदीक रही हैं और आज जो भी समाज के लिए कर रहीं वह सब गुरु के आशीर्वाद का ही परिणाम है । इस अवसर पर संजय डोसी, राशी कोठारी, भविका जैन, नलिन संघवी, चिराग संघवी ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी।

मंदिर में कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों को पारितोषिक दिया गया। इस अवसर पर शैलेन्द्र मानावत, भावना भानारथ, हंसा डोसी, मेहताजी (रिलायंस पावर), अशोक डोसी, मेहताजी (आई केड), महादेव राज सिंघवी, माणकचन्द सेठिया, महेन्द्र लोढ़ा, विनय सकलेचा, मधु डोसी, दिलीप पंचोली, विनोद फतेहपुरिया, स्नेहलता डोसी, हीना कामदार, संगीता संघवी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन नलिन संघवी ने किया।

---

* **राणापुर ।** पुण्य सम्राट की 2 री पुण्यतिथि के अवसर पर नवयुवक परिषद शाखा राणापुर द्वारा सकल जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ की निश्रा में शुक्रवार को तप, धार्मिक क्रियाएँ एवम् सेवा के आयोजन किये गये। ग्रामीण अंचल से आने वाले ग्रामीणों के लिए गुजरी मैदान में पुण्य सम्राट की याद में वर्षीतप की तपस्वी सोहनबाई नारायण लाल जैन ने 'जयंतसेन प्याऊ' का शुभारम्भ

किया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, महामंत्री ललित सालेचा, प्रचार मंत्री प्रकाश सालेचा, पार्षद नारायण जैन आदि उपस्थित थे। जे.के. भवन में सामूहिक 36 आयम्बिल लाभार्थी दिनेशचन्द्र नाहर की ओर से करवाए गए। सभी तपस्वियों को विभिन्न लाभार्थियों की ओर से प्रभावना भी दी गई। राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला में लक्ष्मीचंद नाहर की ओर से 1 लोडिंग रिक्शा भर चने का भूसा गायों के लिए दान दिया गया। श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय में सुबह भक्ताम्बर पाठ, गुरु गुण एक्कीसा व जयंतसेन पाठ हुआ। स्नात्र पूजन और सामूहिक सामायिक की गई। पुण्य सम्राट की अष्टप्रकारी पूजन लाभार्थी नरेन्द्र रतनलाल नाहर की ओर से महिला परिषद ने पढ़ाई । शाम को 7 बजे सामूहिक प्रतिक्रमण हुआ तथा 8 बजे आरती व नवकार जाप, गुरु मंत्र का जप आयोजन हुआ ।

चैन्नई । पुण्य सम्राट की पुण्य सप्तमी राजेन्द्र भवन के प्रांगण में धूमधाम से मनाई गई। सुबह जीवदया अभियान द्वारा मरीना बीच पर कबूतरों एवं पक्षियों को दाना, कुत्तों को दूध और रोटी एवं मद्रास पिंजरापौल में करीब 2500 गायों को इस भीषण गर्मी मैं शीतलता प्रदान करने हेतु तरबूज खिलाए गए। छत पे पक्षियों को पानी पिलाने के लिये जलकुंड का वितरण किया गया। सुबह श्री भुवन भूषण विजयजी महाराज की निश्रा में

मंगलाशरन से गुणानुवाद सभा की शुरुआत की गई। पश्चात दीप प्रज्वलित एवं गुरु देव की वाक्षक्षेपपूजा, माल्यार्पण करने के पश्चात गुरुदेव एवं पुण्य सम्राट की आरती की गई। सभा में गुरुभक्तों ने अपने भावों को व्यक्त किया एवं गुरुप्रसादी का आयोजन रखा। सभी गुरुभक्तों ने प्रसादी ली। दोपहर में सामायिक एवं पूजा का आयोजन किया गया। राजेन्द्रसूरी जैन ट्रस्ट एवं परिषद

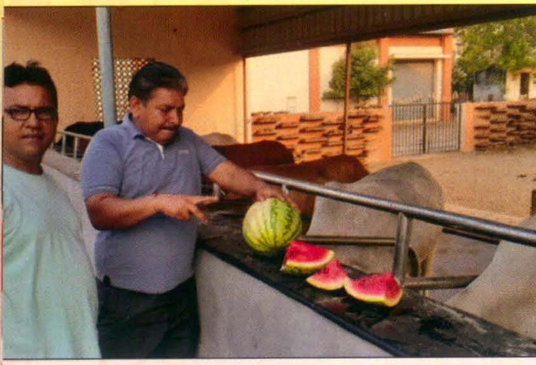

का तहे दिल से सहयोग रहा। इस मौके पर कान्तिलाल पिपाजी, शांतिलाल भंडारी, हदमत्मल हिराणी, कीर्ति तलवट, मुकेश, गौतम सेठ, फतेराज जैन, मनोज राणावत, नेमीचंद, मांगीलाल, दिलीप वेदमुथा, हीरालाल, विनोद जैन एवं अनेक गुरुभक्तों एवं महिलाओं ने भाग लिया।

*** बैंगलोर ।** नवयुवक परिषद् व महिला परिषद् के सदस्यों ने गच्छाधिपति नित्यसेनसूरिश्वरजी एवं जयरत्नसूरिश्वरजी के आचार्य पद आरोहण की द्वितीय वर्षगांठ पर सामायिक की, साथ ही श्री जयन्त सेनसूरिजी की अष्टप्रकारी पूजा एवं प्रभु की आंगी के बाद पक्षियों के पानी पीने के लिए परिंडो (बर्तन) का वितरण किया गया। महिला परिषद अध्यक्ष प्रेमा बहन मूथा तथा धार्मिक प्रचार मंत्री माँगीलालजी वेद मुथा ने बताया कि परिषद् परिवार की तरफ से परिषद् के हर परिवार को माटी का बर्तन वितरण किया गया। परिषद् के दक्षिण प्रांतीय अध्यक्ष बाबुलाल सवानी, अध्यक्ष डुंगरमल चोपड़ा, सदस्य प्रकाश बालर ने बताया की हर घर में बरतन में पानी एवं कटोरी में दाना

डालकर छत पर रखने से पुण्य मिलेगा। परिषद् परिवार की सभी महिलाएँ उपस्थित थी। मंत्री मधुबाला ने सभी को धन्यवाद दिया। – दिनेश सालेचा

महिदपुर। पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर में प्रातः स्नात्र पूजन बहू मण्डल ने पढ़ाई। दोपहर में राजेन्द्र सूरीश्वरजी की अष्टप्रकारी पूजन मुकेश कुमार रमिला बेन मेहता आष्टा की ओर से व जयंतसेनसूरी अष्टप्रकारी पूजन मोतीलाल नरेन्द्र कुमार धाड़ीवाल परिवार की ओर से राजेन्द्र सूरी महिला मण्डल ने पढ़ाई। पश्चात शासकीय चिकित्सालय में मरीजों को फल-फ्रुट व चाय बिस्किट का वितरण सुरेश छजलानी परिवार की ओर से किया गया। रात्रि में दादा गुरुदेव व जयंत सेन सूर्य की आरती उतारी गई जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया ।- नरेन्द्र धाड़ीवाल

---

* **पिपलौदा ।** महिला परिषद द्वारा पुण्य सम्राट द्वितीय पुण्यतिथि पर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर श्री जयंतसेन सूरी अष्टप्रकारी पूजा की गई व पशुओं को चारा खिलाकर जीवदया का कार्य किया, साथ ही परिषद द्वारा घर-घर जाकर करीब 30 आयम्बिल भी करवाये।

इस अवसर पर महिला परिषद अध्यक्ष मंजू बोहरा, गुणबाला धींग, अलका भंडारी, मधुबाला बोहरा, मंजू नांदेचा रतलाम, कनकलता सुराणा, सुधा नांदेचा, उषा नांदेचा, कल्पना जैन, अनित नांदेचा, सुनीता मोगरा, अंतिमबाला सुराणा, डिम्पल बाबेल, मंजू, बाबेल, सुनीता चंद्रावत, टमाबाई जैन राकोदा आदि उपस्थित थे। – प्रफुल्ल जैन

---

* **रतलाम ।** पुण्य सम्राट की द्वितीय पुम्य तिथि त्रिस्तुतिक श्रीसंघ व परिषद परिवार द्वारा विभिन्न आयोजन कर गुरु गुणांनुवाद सभा के रूप में मनाई गई। प्रातः काल त्रिवेणी रोड़ गौशाला में गौ सेवा के पश्चात् नीमवाला उपाश्रय में गुरु गुणानुवाद सभा के तहत श्रीसंघ के श्री सोहनलालजी मूनत, राजेन्द्रजी लुनावात, डॉ. निर्मल मेहता, राजकमल दुगड़, प्रो. वी.के. जैन, राजेश खाबिया, मंजू मेहता आदि वक्ताओं ने गुरु के संस्मरण अपने भाव से व्यक्त किये।

बिरियाखेड़ी वृद्धाश्रम में वस्त्र वितरण किये। गुरु जयंत सूरी अष्टप्रकारी पूजन व संध्या में गुरुमाला का जाप आयोजन किया गया।

महिला परिषद द्वारा गुरुदेव के ऊपर स्तवन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें पुरस्कार वितरित किये गये। तरुण परिषद द्वारा सकोरे का वितरण किया गया एवं बालिका परिषद द्वारा जिनालयों में चुन्नी रखी गई। आभार सचिव श्री प्रवीणजी संघवी ने माना। उपरोक्त जानकारी राष्ट्रीय महामंत्री राजकमल दुग्गड़ ने दी।

*** नागदा ।** पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्य तिथि श्रीसंघ में सेवा कार्य के रूप में मनाई गई। इस मौके पर महात्मा गांधी मार्ग स्थित चन्द्रप्रभु जैन मंदिर में भक्ताम्बर पाठ एवं गुरु चालीसा का आयोजन किया गया। पाल्या रोड़ स्थित गोपाल गौशाला परिसर में मूक पशुओं को लापसी, गुड़, घांस एवं खली खिलाई गई जिसका लाभ मानकुंवर बाई तेजमल जोधावत परिवार ने लिया। दोपहर 2 बजे जैन कॉलोनी स्थित शांतीनाथ जैन मंदिर जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की अष्टप्रकारी पूजन का आयोजन किया गया जिसका लाभ ब्रजेशकुमार बाबूलाल बोहरा परिवार ने लिया। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद द्वारा पूजन पढ़ाई गई। श्रीसंघ मीडिया प्रभारी विपिन वागरेचा ने बताया कि पुण्य तिथि के मौके पर पाँच जैन परिवारों को एक माह का राशन प्रदान किया गया।

*** मैसूर ।** मैसूर में पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्यतिथि निमित्ते परिषद् द्वारा जीवदया स्वरूप 'कबूतर धाम' (मैसूर पैलेस के सामने) हजारों कबूतरों को दाना (अनाज) दिया गया। गुणानुवाद सभा का आयोजन श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरी मंदिर के सभागृह में किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री की तस्वीर पर माल्यार्पण करके पुष्प अर्पण कर श्रद्धांजली अर्पण की गई। अनेक श्रद्धालुओं ने पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धांजली, स्तवन एवं भाषण (वक्तव्य) द्वारा प्रगट की। पूज्य श्री की आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर सुविधिनाथ राजेन्द्र सूरी ट्रस्ट एवं सुमतिनाथ जिनालय ट्रस्ट के ट्रस्टीगण राजेन्द्र जैन नवयुवक मंडल के पदाधिकारी एवं राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के सदस्य एवं महिला परिषद् के सदस्यों की उपस्थिति रही। दोपहर अनुकंपा दान स्वरूप- मैसूर शहर से 4 कि.मी. दूर गायत्रिपूरम् में गरीब एवं अनाथ लोगों को भोजन करवाया गया।

* **पारा ।** पुण्य सप्तमी पर सुबह भक्ताम्बर गुरु इक्कीसा के पाठ के पश्चात भगवान का पक्षाल, ब्रास पूजन, चन्दन पूजन, पुष्प पूजन, स्नात्र पूजन के साथ अष्टप्रकारी पूजन चढ़ावे के साथ लाभार्थियों ने की। सुबह की नवकारशी दिलीपजी संजयजी कोठारी परिवार की ओर से स्वामीवात्सल्य, प्रकाशजी तलेसरा परिवार की ओर से, शाम का स्वामीवात्सल्य, शांतिलालजी पंवार परिवार की ओर से हुआ । दोपहर में सामूहिक आयम्बिल हुए।

गुरुदेव के चित्र को रथ में विराजमान करके बैंड-बाजों से साध्वीजी श्री अनेकांतलता श्रीजी की निश्रा में शोभायात्रा निकाली समाज के हर घर से गुरुदेव के चित्र के सम्मुख गहुंली की। गुरुमन्दिर में गुणानुवाद धर्मसभा हुई। सर्वप्रथम गुरुवंदन श्रीसंघ के महामंत्री राजेन्द्र कोठारी ने कराया। मंगलाचरण साध्वी श्री अनेकांत लता श्रीजी ने श्रवण कराये। चहेती कोठारी, विभाष पोखरना, श्रेयांशी भण्डारी, आस्था सियाल, भवि भण्डारी, अवधि कांकरिया ने गुरु भक्ति गीत गाया। श्रीसंघ महामंत्री प्रकाश छाजेड़ ने कहा कि 1986 में मालवा के पारा में प्रथम चातुर्मास कर यहाँ की धरती को पावन किया। वदी, सुदी दोनों पक्ष की सप्तमी तिथि पर होंगे सामूहिक आयम्बिल। कार्यक्रम के पश्चात जयंतसेनसूरीश्वरजी की वासक्षेप व आरती का लाभ विनोदजी सुराना परिवार ने लिया। दोपहर को जयंतसेनसूरीश्वरजी की गुरुपद महापूजन धनराजमलजी गट्टूलालजी व्होरा परिवार व सामूहिक सामायिक रखी गई। संध्या को महावीर भवन में महिलाओं ने चौबीसी के गीत गाए। सकल संघ का सामूहिक गुरुदेव का जाप आरती और प्रभु भक्ति संगीत की गई।

---

* **पिपलौदा ।** तरुण परिषद शाखा पिपलौदा द्वारा पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्यतिथि पर सेवा कार्य किये। परिषद द्वारा भीषण गर्मी में पिपलौदा- जावरा सड़क मार्ग पर आने-जाने वाले यात्रियों व राहगीरों को ठंडा शरबत व शीतल जल का वितरण किया गया साथ ही पशुओं को चारा भी खिलाया। तरुण परिषद अध्यक्ष हर्ष कटारिया, शिखर बोहरा, अमन रूनवाल, सौरभ चंद्रावत, हिमांशु पटवा, आजाद जैन, सचिन नांदेचा, कुलदीप गांधी आदि उपस्थित थे।

* **बड़ावदा ।** महिला परिषद बड़ावदा द्वारा पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्यतिथि पर श्री आदिनाथ जिन मंदिर पर श्री जयंतसेनसूरी अष्टप्रकारी पूजा की व गौशाला में पशुओं को चारा, गुड़ खिलाकर जीवदया का कार्य किया। माणकलाल सकलेचा परिवार ने लाभ लिया। इसके पूर्व प्रातः भक्तामर पाठ, गुरु एक्कीसा, सामायिक आदि

धार्मिक कार्य किये। पुण्य सम्राट की पूजन का लाभ साधना बाफना ने लिया। शिरीष सकलेचा ने बताया कि रात्रि में समाजजनों द्वारा महाआरती उतारी गई। तम्बोला प्रतियोगिता भी हुई। महिला परिषद अध्यक्ष संगीता सकलेचा व सचिव शालिनी बाफना ने माना।

*** रतलाम।** श्री सुविधिनाथ जैन धार्मिक पाठशाला नीमवाला उपाश्रय में एक मई से नियमित पाठशाला लगाई जा रही है जिसमें 30-40 विद्यार्थी प्रतिदिन अध्ययन कर रहे हैं।

महिला परिषद से श्रीमती मंजुजी मेहता, श्रीमती सारिकाजी डुंगरवाल, श्रीमती लेखनीजी पोरवाल, श्रीमती रेखाजी भंडारी, श्रीमती रेखाजी जैन, श्रीमती श्रद्धाजी लुणावत, श्रीमती चन्द्रकांताजी खेमसरा, श्रीमती मधुजी गंग आदि द्वारा विद्यार्थियों को सामायिक विधी, चेत्यवंदन विधी, वंदित सूत्र आदि सिखाए जा रहे हैं। पाठशाला संचालक सुरेन्द्र गंग द्वारा महिला परिषद के सहयोग हेतु आभार।

*** राणापुर (ललित जैन)।** नवयुवक परिषद रानापुर ने श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मंदिर में महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में श्री यतीन्द्र जयन्त पाठशाला के बच्चों को धार्मिक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता एवम् महावीर सन्देश भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। बच्चों ने अलग-अलग वेशभूषा में सजकर जैन धर्म महावीर भगवान के बारे में अपना संदेश उपस्थित समाजजनों के सामने प्रदर्शित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मनोहरलाल नाहर और विमल कटारिया थे।

अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। निर्णायक भावना कटारिया और दीपिका सालेचा थे। धार्मिक फेंसी ड्रेस में प्रथम लक्छित कटारिया रहे, द्वितीय नेमी सालेचा और वेदि नाहर तथा तृतीय मोक्छील कटारिया रहे। महावीर संदेश प्रतियोगिता में तोशी नाहर प्रथम, आदि नाहर द्वितीय व हनी कटारिया तृतीय रहे। शेष सभी प्रतियोगी को सांत्वना पुरस्कार दिया जावेगा। संचालन जितेन्द्र सालेचा ने किया। आभार परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने व्यक्त किया।

*** राजनगर (अहमदाबाद) ।** 'संयम में हमेशा आनंद है' की सूक्ति जिनवाणी का अंग है, इस मार्ग को युग प्रभावक जैनाचार्य लोकसंत पुण्य सम्राट, श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने आत्मोद्धार नाम से परिष्कृत तथा प्रभासित किया। उनने अपने जीवन मैं सैकड़ों भव्यात्माओं को रजोहरण प्रदान कर उनको आत्मोद्धार के मार्ग पर अग्रसर किया। आत्मोद्धार- एक उनकी निश्रा में ही थराद नगर में आयोजित किया गया था। उनके पश्चात् उनके पट्टधर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म. ने पालीताणा (सिद्धाचलजी) के प्रांगण में आत्मोद्धार दो सम्पन्न किया।

आत्मोद्धार तीन गच्छाधिपति श्री एवं जैनाचार्य दोनों के सान्निध्य में साबरमती नदी के तट पर स्थित राजनगर (अहमदाबाद) में पंच दिवसीय भव्य कार्यक्रमों के सहित निर्विघ्न तथा अपूर्व भावोल्लास के मध्य सम्पन्न हुआ। समारोह के आयोजक श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय अ.भा. त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ अहमदाबाद (थराद) थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 19 मई 2019 रविवार को हुआ। सान्निध्यदाता दोनों गच्छाधिपति साहब तथा आचार्य भगवंत का समारोहपूर्वक भव्य प्रवेश हुआ। आपके सान्निध्य में मुमुक्षुगण भी थे। प्रातः आप श्री के प्रवचन हुए एवं दोपहर में श्री सिद्धाचक्र महापूजन पढ़ाई गई। रात्रि प्रभु भक्ति हुई। द्वितीय दिवस दिनांक 20 मई को प्रातः अभिषेक के उपलक्ष्य में उत्सव हुआ एवं इसी दिन मुमुक्षुगणों को वहोरवाने तथा केसर छिटकाव से शोभित करने का कार्यक्रम हुआ। दोपहर को ही अष्ट प्रवचन माता पूजन हुई। तृतीय दिवस 21 मई वीरवेश वधामणा के रूप में उदित हुआ। इस दिन प्रातः जुलूस हाथीखाना, रतनपोल स्थित श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञानमंदिर से प्रारंभ हुआ। इस समय 42 डिग्री सेल्यिशस तापमान था। इस गर्मी में विशाल जनसमुदाय साथ था। सभी 19 मुमुक्षु ग्यारह बग्गियों में शोभायमान थे।

जुलूस में सात नृत्यमंडलियां व पांच अन्य मण्डलियां थीं। गुरुरथ के साथ जुलूस मीठाखली पहुंचा जहाँ गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरिश्वरजी म. ने मांगलिक सुनाया।

दीक्षा के उपकरणों कि उछामणी का था। रात्रि में भव्य रत्नदाता सत्कार समारोह हुआ जिसमें पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिश्वरजी म.सा. के पास संयम ग्रहण करने वाले रत्नों के माता-पिताओं का सत्कार किया गया। यह अपनी शैली का ऐसा प्रथम कार्यक्रम है जिसका पहली बार आयोजन हुआ। कार्यक्रम अत्यंत गरिमा के साथ अपूर्व उत्साह से परिपूर्ण सम्पन्न हुआ। चौथे दिन दिनांक 22 मई की प्रातः बेला मुमुक्षुओं की शोभायात्रा के साथ उदित हुआ। शोभायात्रा ऐतिहासिक थी। संयम ग्रहण करने वाले 19 दीक्षार्थियों के दर्शन कर हजारों नागरिक धन्य हो गये। विशाल शोभायात्रा ने नगर के मार्गों का भ्रमण किया। शोभायात्रा में बैण्ड-बाजे तथा धार्मिक झण्डों के साथ हजारों गुरु भक्त चल रहे थे। इसी दिन प्रातः जिन शासन की दानशाला भी प्रारंभ हुई, जिसमें मुमुक्षुओं ने वर्षीदान दिया। दिनांक 23 मई गुरुवार का शुभ दिन अपूर्व जय - जयकार धूम धड़ाके तथा विभिन्न दिशाओं से आ रहे मुमुक्षुओं के जुलूसों से युक्त था। पूज्य गुरु भगवंतों ने आत्मउद्धार-3 को सान्निध्यता प्रदान करने हेतु सजे सजाये मंडप में प्रवेश किया। उस समय शहनाई के सुर पूरी गति पर थे एवं गुरुभक्तों द्वारा की जा रही जय-जयकार चारों ओर गूंज रही थी। कार्यक्रम स्थल वल्लभ सदन खिरफ्रन्ट जन समुदाय से खचाखच भरा हुआ था। मंच की शान ही निराली थी। जिस पर पूज्य गच्छाधिपित धर्मदिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा भाण्डवपुर तीर्थ उद्धारक आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा., पूज्य मुनिराजगण एवं पूज्य साध्वीजी वृन्द विराजमान थे। दीक्षा की क्रिया हेतु आवश्यक त्रिगढ़े पर विराजमान जिनेश्वर जैन की प्रतिमा थी। सामने सभा मण्डप में श्रावक-श्राविकाओं का विशाल समूह गुरु भक्ति का परिचय दे रहा था। प्रातः 4.30 बजे सभी मुमुक्षुओं ने संयम मंच पर प्रवेश किया। इससे पूर्व प्रातः 3.30 बजे स्नात्रपूजा प्रारंभ हुई। यह मुमुक्षार्थियों के लिये अंतिम द्रव्य पूजा थी। ठीक प्रातः 5 बजे सभी मुमुक्षुओं को क्रमशः ओघे प्रदान कर दिये गये। ओघा प्रदान की क्रिया गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म. ने सम्पन्न की। मुमुक्षुओं ने ओघा ग्रहण किया तथा भावोल्लास में नृत्य करते हुए अपने जीवन को संयम मार्ग पर समर्पित किया। वेश परिवर्तन के पश्चात् सभी के नूतन नामों की घोषणा की गई। जो इस प्रकार है -

1.	श्री विशेष भाई भरतभाई बल्लु	-	मुनिराज श्री जम्बूसेन विजयजी म.सा.
2.	श्री संयमभाई हँसमुखभाई मोरखीया	-	मुनि श्री सुधर्मसेन विजयजी म.सा.
3.	श्री मिलीकुमारी भरतभाई बल्लु	-	साध्वीजी श्री मौर्यनिधि श्रीजी म.सा.
4.	श्री निरालीबेन हँसमुखभाई धरू	-	साध्वीजी श्री नित्यश्रुतप्रियाश्रीजी म.सा.
5.	श्री सिल्कीबेन महेशभाई आंबाणी	-	साध्वीजी श्री श्रुतांशप्रियाश्रीजी म.सा.
6.	श्री निशीबेन दिनेशभाई दोशी	-	साध्वीजीश्री निर्मलप्रियाश्रीजी म.सा.
7.	श्री नियतिबेन नरेन्द्रभाई संघवी	-	साध्वीजीश्री वंदननिधि श्रीजी म.सा.
8.	श्री रोशनीबेन सूरजमलजी रांका	-	साध्वीजी व्रजरेखाश्रीजी म.सा.
9.	श्री रिंकलबेन कीर्तिलाल ओझा	-	साध्वीजीश्री धर्मरेखाश्रीजी म.सा.
10.	श्री मीनाबेन हँसमुखभाई मोरखीया	-	साध्वीजीश्री महावीर निधि श्रीजी म.सा.
11.	श्री पूजाकुमारी नरपतभाई दोशी	-	साध्वीजी श्री प्रभुप्रियाश्रीजी म.सा.
12.	श्री रिद्धिबेन दिनेशभाई वोहेरा	-	साध्वीजीश्री रैवतनिधि श्रीजी म.सा.
13.	श्री क्रिनाबेन शैलेशभाई वोहेरा	-	साध्वीजीश्री क्षमानिधि श्रीजी म.सा.
14.	श्री आंगीबेन परेशभाई अदानी	-	साध्वीजीश्री आर्यनिधि श्रीजी म.सा.
15.	श्री मित्तलबेन विनोदभाई दोशी	-	साध्वीजीश्री मृदुनिधि श्रीजी म.सा.
16.	श्री पूजाबेन दिनेशभाई मोरखीया	-	साध्वीजीश्री पार्श्वप्रियाश्रीजी म.सा.
17.	श्री मोक्षालीबेन किरीटभाई वोरा	-	साध्वीजीश्री ऋषभनिधिश्रीजी म.सा.
18.	श्री वैरागीबेन किरीटभाई वोरा	-	साध्वीजी श्री पुंडरिकानिधि श्रीजी म.सा.
19.	श्री जिनलबेन बकुलभाई भणसाली	-	साध्वीजीश्री कैवलदीपनिधिश्रीजी म.सा.

घोषणा की गई कि आत्मोद्धार - 4 फाल्गुन शुक्ला 4 को सूरत में होगा। कार्यक्रम सफल तथा ऐतिहासिक माना गया। प्रसिद्ध संगीतकार श्री नरेन्द्रभाई वाणीगोता तथा अन्य संगीतकारों ने पाँच दिन तक प्रतिरात्रि भक्ति की धूम मचा दी। पांचों दिन विभिन्न लाभार्थियों की ओर से प्रातः नवकारसी, प्रातः स्वधार्मिक वात्सल्य तथा शाम को साधार्मिक भक्ति के कार्यक्रम हुए जिसमें हजारों गुरुभक्तों ने विविध मिष्ठानों का आस्वादन किया।

त्रिस्तुतिक समाज के इतिहास में इस सफल कार्यक्रम के साथ एक सुनहरा पृष्ठ जुड़ गया।

|| श्री गौतमस्वामिने नमः || || श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः || || श्री राजेन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः ||

जन-जन की श्रद्धा एवं आस्था के केन्द्र महाविदेह तीर्थधाम के स्वप्न दृष्टा एवं श्री वासुपूज्य जिनालय (राजेन्द्र भवन) व अनेक मंदिरो के प्रतिष्ठाचार्य

चेन्नई में तीन-तीन ऐतिहासिक चातुर्मास कर

अनेक आत्माओं का उद्धार करनेवाले राष्ट्रसंत, दीक्षा दानेश्वरी

पुण्य सम्राट प.पू.आ.

श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी

म.सा. की

की द्वितीय पुण्य तिथि के उपलक्ष में भव्य आयोजन

सकल संघ को भावभरा आमंत्रण

* पावन सान्निध्य * चेन्नई में बिराजित श्रमण - श्रमणी वृंद

वैशाख वद ७
दि.
26.4.19
शुक्रवार

मंगल कार्यक्रम

प्रातः 6.00 बजे : जीव दया
प्रातः 9.30 बजे : गुणानुवाद सभा
प्रातः 11.00 बजे : स्वामी वात्सल्य
प्रातः 11.30 बजे : आयंबिल
दोपहर 2.00 बजे : सामूहिक सामायिक
दोपहर 3.00 बजे : श्री जयंतसेनसूरिजी अष्टप्रकारी पूजा
सायं. 6.30 बजे : प्रभु की आंगी व रोशनी
पुण्य स्मृति व पर्यावरण संरक्षण हेतु 1001 वृक्षारोपण

* महोत्सव स्थल *
श्री राजेन्द्र भवन
एकाम्बरेश्वर अग्राहरम्, चेन्नई-3.

* निवेदक *
पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरिजी फाउण्डेशन
चेन्नई

जैन विश्व

* **हैदराबाद ।** में उपराष्ट्रपति श्री वैंकेयानायडु ने श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में कहा कि भगवान महावीर के जीवन तथा जैन धर्म के दर्शन में समकालीन दुनिया के लिये कई महत्वपूर्ण सीख है। वे पृथ्वी के सबसे उत्कृष्ठ तथा प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरुभक्तों में से एक थे।

* प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने संदेश में कहा भगवान महावीर एक परम्परा के चमकदार बिम्ब हैं ।

* केन्द्रीय मंत्री श्री मनसुख मांडविया ने कहा कि जैन समुदाय की उत्कृष्ट महाजन नीति का हर कोई समाज अनुसरण करे।

* राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याणसिंह ने कहा कि भगवान महावीर का अहिंसा का संदेश आज भी प्रासंगिक है।

* दक्षिण मुंबई में भगवान महावीर जन्म पर 111 जैन संघों की रथ यात्रा निकली जो डेढ़ किलोमीटर लम्बी थी।

* **सूरत।** श्री अरिहंत पार्क जैन श्वे. म.पू. संघ में आचार्य देव श्री रविरत्नसूरिजी म.सा. की निश्रा में चैत्री नवपदजी आयंबिल की ओली 225 आराधकों ने की। आयोजक परिवार मालेगांव निवासी श्री मतीलेहरी बेन वगतावरमलजी साकलचंदजी कोठारी (सूरत) ने उदारता पूर्वक लाभ लिया।

* नन्दुरबार (महा.) में युवा श्री विजयकुमार (विक्की) कोचर ने गच्छाधिपति श्री जिनमणी प्रभ सूरिश्वरजी म. के सान्निध्य में समारोह पूर्वक भागवती दीक्षा ग्रहण की।

* आचार्य श्री सुशील कुमारजी महाराज का 25 वां पुण्य स्मृति दिवस आगामी 20-29 व 22 अप्रैल को नई दिल्ली में त्रिदिवसीय गुरु भक्ति दिवस के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इसके सिद्धाचलम् न्यूजर्सी (अमेरिका) में 14-15-16 जून से वह समारोह मनाया जाएगा। भारत में पहले श्री अर्हत् जैन मंदिर के निर्माण की योजना बनाई गई है।

* राजस्थान में उदयपुर जिलान्तर्गत बम्बोरा गाँव में हेरिटेज होटल 'करणी

फोर्ट' अब शाकाहारी हो गया है। 18 वीं सदी के परकोटे युक्त पर्वतीय गढ़ को दो दशक पूर्व आधुनिक सुविधाओं से युक्त हेरिटेज होटल में बदल दिया गया था।

* विश्वविख्यात श्री नाकोड़ा तीर्थ पर अक्षय तृतीया के पावन दिवस पर तीर्थ में वर्षीतप पारणा समारोह का आयोजन अचलगच्छ समुदाय महातपस्वी मुनि श्री आर्यरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीवृन्दों के पावन निश्रा में 10 वर्षीतप के तपस्वियों का पारणा तीर्थ ट्रस्टमण्डल द्वारा करवाया गया।

* सूरत कैलासनगर जैन के प्रांगण में दीक्षा दानेश्वरी आचार्य देवश्री गुणरत्न सुरिश्वरजी म., पुण्यरत्नसूरिजी म.पू आदि 6 आचार्यों, 200 साधु-साध्वी की निश्रा में तपस्वी रत्न चिमनलाल शंकरलालजी कृष्णगंज वाला ने महाभद्रतप 245 दिन में 176 उपवास व 49 पारणे वाली का पारणा हुआ।

* **बम्बोरा।** सुश्रावक श्री शान्तिलालजी धींग (सुपुत्र श्री अर्जुनलालजी धींग) का 85 वर्ष की आयु में 9 मई को निधन हो गया। वे साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग के ताऊजी थे। शाश्वत धर्म द्वारा श्रद्धांजलि।

* **सूरत।** श्री अठवालाइन्स जैन संघ में दीक्षादानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की पावनकाटी निश्रा में पू. आचार्य श्री रविरत्नसूरिश्वरजी म. एवम् 15 साध्वीजी भगवंतों के वरसीतप पारणा सम्पन्न हुए।

* वह्नर स्थित नवग्रह तीर्थ में विराजित आचार्य श्री गुणनंधर बंदी दर्शनार्थ कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री कुमारस्वामी का आगमन हुआ। आपके साथ सहकारिता मंत्री श्री बंडप्पा कशमपुर भी थे।

* हैदराबाद। श्री जैन संस्कार वाटिका द्वारा दादावाड़ी कुशल वाटिका तरलागड़ कारवान में उपधान अठारिया तप का आयोजन आचार्य श्रीमद् विजय अभयनचंद्र सूरिश्वरजी म.सा. व प.पू. पन्योस प्रवर श्री रिद्धि-सिद्धि विजयजी म.सा. आदि ठाणा-8 एवं पूज्य साध्वी श्री श्रुतिपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहा है इसमें 450 बालक-बालिकाएँ एवं अन्यवय के तपस्वी इस तप अनुष्ठान से जुड़ रहे हैं।

* **हैदराबाद।** फीलखाना स्थित श्री महावीर स्वामी जैन श्वे. मंदर की 29 वीं वर्षगांठ उपलक्ष्य में शाश्वत ध्वजा लाभार्थी परिवार शा. अमृतलालजी देवीचन्दजी चौहान शिवगंज वाले फर्म विशाल आन्ध्रा इण्डस्ट्रीज वालों ने शिखर पर

ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न किया। पू. साध्वीजी वीतरागदर्शिता म. सा. आदि ठाणा का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

* चेन्नई महावीर जयंती के अवसर पर बाबा रामदेव के भ्रामक ट्वीट पर रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलाजी ने आपत्ति जताई है। शोध निदेशक डॉ. दिलीप धींग ने पत्र में लिखा कि भगवान महावीर को महर्षि पतंजलि के दर्शन व सार्वभौमिक मूल सिद्धान्तों के उपासक के रूप में दर्शाना बिलकुल निराधार तथा सत्य और तथ्य से सर्वथा परे है। तीर्थंकर भगवान महावीर ईस्वी पूर्व की छठी शताब्दी के महापुरुष थे। जबकि महर्षि पतंजलि तो ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दी के महापुरुष थे।

* 2273 वर्ष अतिप्राचीन श्री गांगाणी जैन तीर्थ का वार्षिक दो दिवसीय पाट महोत्सव मुनिराज श्री धर्मविजयजी म. के पावन सान्निध्य में विविध धार्मिक अनुष्ठानों के साथ धूमधाम से मनाया गया।

* नागदा जक्शन में आशीष चौधरी एवं रैना चौधरी के वर्षीतप अनुमोदनार्थ पांच दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव आयोजित किया गया।

* सेलम में सकल जैन समाज द्वारा सामूहिक गुणानुवाद सभा तथा नवकार महामंत्र के जाप का आयोजन कर सड़क हादसे में साध्वी श्री प्रियदर्शिता श्रीजी तथा सुदर्शिताश्रीजी के देवलोकगमन की स्मृति में श्रद्धाजंली अर्पित की गई। सभा का संचालन श्री रणमल जैन ने किया। यह साध्वी समूह मदुराई से कन्याकुमारी की ओर विहार कर रहा था।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से दोनों का काल धर्म हो गया साथ में विहार कर रहे साध्वी श्री सम्मेत निधी श्रीजी का चैन्नई में उपचार हो रहा है।

* उ.प्र. के नगर खतौली में निम्बाहेड़ा (राज.) के वरिष्ठ शिक्षाविद एवं पूर्व उपजिला शिक्षा अधिकारी विजयसिंह लोढ़ा का अभिनन्दन सागर नेशनल अॅवार्ड से सम्मानित किया गया।

* श्री शंखेश्वर - वीरमगाँव-अहमदाबाद हायवे पर स्थित विश्व के प्रथम विशाल व अतिभव्य श्री 1008 पार्श्वनाथ जिनालयों का शिलान्यास शिलाओं के लाभार्थी परिवारों और गुरुभक्तों की उपस्थिति में आचार्यश्रीमद् विजय लेखेन्द्र शेखर सूरिश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में बहुत हर्षोल्लास के साथ पावना गौशाला में किया गया, यह विश्व का सबसे बड़ा तीर्थ बनने जा रहा है।

राजनगर – अहमदाबाद में 23 मई को होने वाली सामूहिक दीक्षा आत्मोद्वार-3 के अनुमोदनार्थ 27 दिवसीय आत्मोद्धार अखंड आयंबिल यात्रा

संचालक

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार

प्रारंभ 27 अप्रैल से समापन 23 मई

27 अप्रैल पाटन (आयंबिल 105)

28 अप्रैल सूरत (आयंबिल 115)

29 अप्रैल डीसा (आयंबिल 40)

30 अप्रैल लाखणी (आयंबिल 9)

1 मई मुंबई

2 मई जावरा में (3 आयंबिल), व पिपलौदा में (12 आयंबिल)

3 मई आलोट में (3 आयंबिल, जोबट में (25 आयंबिल), मेघनगर में (8 आयंबिल) व आनंद में (12 आयंबिल)

4 मई खाचरोद में (2 आयंबिल) व रम्भापुर गाँव में (6 आयंबिल)

5 मई इंदौर में (8 आयंबिल), थराद थीरपुर नगर में (45 आयंबिल)

6 मई जोधपुर में (5 आयंबिल)

7 मई राजगढ़ में (3 आयंबिल) व झकनावदा में (2 आयंबिल)

8 मई रिंगनोद में (3 आयंबिल) व रानापुर में (1 आयंबिल)

9 मई बाग में (5 आयंबिल) व महिदपुर रोड़ में (2 आयंबिल)

10 मई अलीराजपुर में (6 आयंबिल)

11 मई झाबुआ में 13+7 = 20 व पारा में (11 आयंबिल)

12 मई रतलाम में (9 आयंबिल)

13 मई धार में (5 आयंबिल)

14 मई उज्जैन में 13 नयापुरा व 13 नमकमण्डी = (26 आयंबिल)

15 मई बीजापुर में (30 आयंबिल)

16 मई मंदसौर में (28 आयंबिल) व बदनावर में (4 आयंबिल)

17 मई कुक्षी में (3 आयंबिल)

18 मई (टांडा) 2

19 मई खटाली में 5 आयंबिल व मदुराई में 4 आयंबिल

20 मई दलोदा में 3 आयंबिल, करवड़ में 2 आयंबिल व निम्बाहेड़ा में 2 आयंबिल

21 मई अहमदाबाद (नीमच में 60 आयंबिल) नागदा में 3 आयंबिल

22 मई अहमदाबाद

23 मई अहमदाबाद, राजनगर

अभा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार 27 दिवसीय अखंड आयंबिल यात्रा में आप सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी की खुब-खुब अनुमोदना करता है।

– ब्रजेश बोहरा
श्रीसंघ व परिषद के राष्ट्रीय
मीडिया प्रभारी

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

आत्मोद्धार-3 के अन्तर्गत 19 भव्यात्माओं ने ग्रहण किया संयम

मुमुक्षु आंगीबेन परेशभाई अदानी | साध्वीजी श्री आर्यनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु मित्तलबेन विनोदभाई दोशी | साध्वीजी श्री मृदुनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु मीनाबेन हसमुखभाई मोरखीया | साध्वीजी श्री महावीरनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु नियतिबेन नरेन्द्रभाई संघवी | साध्वीजी श्री वंदननिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु झीलबेन बकुलभाई भणसाली | साध्वीजी श्री कैवलदीपनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु मिलबेन भरतभाई बल्लु | साध्वीजी श्री मौर्यनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु वैरागीबेन किरीटभाई वोरा | साध्वीजी श्री पुंडरिकनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु निरालीबेन हसमुखभाई धरु | साध्वीजी श्री नित्यश्रुतप्रिया श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु रिंकलबेन कीर्तिलाल ओझा | साध्वीजी श्री धर्मरिखा श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु क्रिनाबेन शैलेशभाई वोहेरा | साध्वीजी श्री क्षमानिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु सिंल्कीबेन महेशभाई आंबाणी | साध्वीजी श्री श्रुतांशप्रिया श्रीजी म.सा.

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/-

वर्ष-66, अंक-6

कुल पृष्ठ कवर सहित -100

आत्मोद्धार-3 के अन्तर्गत 19 भव्यात्माओं ने ग्रहण किया संयम

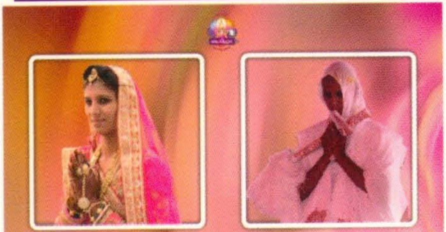

मुमुक्षु पूजाबेन नरपतभाई दोशी

साध्वीजी श्री प्रभुप्रिया श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु निशीबेन दिनेशभाई दोशी

साध्वीजी श्री निर्मळप्रिया श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु रोशनीबेन सुरजमलजी रांका

साध्वीजी श्री ध्वजरेखा श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु संयमभाई हसमुखभाई मोरखीया

मुनिराज श्री सुधर्मसेन विजयजी म.सा.

मुमुक्षु रिद्धिबेन दिनेशभाई वोहेरा

साध्वीजी श्री रैवतनिधि श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु पूजाबेन दिनेशभाई मोरखीया

साध्वीजी श्री पार्श्वप्रिया श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु विशेषभाई भरतभाई बल्लु

मुनिराज श्री जम्बूसेन विजयजी म.सा.

मुमुक्षु मोक्षालीबेन किरीटभाई वोरा

साध्वीजी श्री ऋषभनिधि श्रीजी म.सा.

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001